

रायपुर से प्रकाशित हिंदी मासिक पत्रिका

आर.एन.आई. पंजीयन क्र.
CHHHIN/2017/72506

किलोल

वर्ष 6 अंक 7, जुलाई 2022



<http://www.kilol.co.in>



म.नं. 580/1, गली न. 17 बी,
दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोबा, रायपुर
ईमेल: wings2flysociety@gmail.com

मूल्य
खुदरा - 80/-
वार्षिक - 720/-
आजीवन - 10000/-

संपादक- डॉ. रचना अजमेरा

सह-संपादक

डॉ. एम सुधीश, डॉ. सुधीर श्रीवास्तव, प्रीति सिंह, ताराचंद जायसवाल, बलदाऊ राम साहू, नीलेश वर्मा, धारा यादव, डॉ. शिप्रा बेग, रीता मंडल, पुर्णेश डडसेना, वाणी मसीह, राज्यश्री साहू

ई-पत्रिका, ले आउट, आवरण पृष्ठ

कुन्दन लाल साहू

अपनी बात

शिक्षक साथियों एवं प्यारे बच्चों,

नया सत्र प्रारंभ हो गया है और हम प्रवेशोत्सव के दौरान अधिक से अधिक बच्चों के शाला प्रवेश हेतु मिलकर काम कर रहे हैं। आप भी अपने आसपास शाला जाने योग्य सभी बच्चों की पहचान कर उन्हें शाला में प्रवेश लेने हेतु प्रेरित करें। इस वर्ष शुरू से ही प्रतिदिन समय का निर्धारण कर निर्धारित समय में पढ़ाई करना सुनिश्चित करें।

शिक्षकों के सभी आग्रह है कि सत्र के प्रारंभ से ही सीखने-सिखाने में अपना अधिकतम समय दें। आठ वर्ष तक बच्चे आपके पास सीखने आते हैं और यदि उन्हें कक्षा दूसरी की बातें भी नहीं मालूम हो तो यह हम सबके लिए अच्छी बात नहीं है। हमारी शाला में प्रवेश लेने वाले सभी बच्चे नियमित शाला आएँ, पूरे समय सक्रिय होकर शाला की गतिविधियों में शामिल हों और शाला से प्रतिदिन कुछ नया सीखें।

और हाँ, किलोल पढ़ना और किलोल के लिए रचनाएं भेजना नहीं भूलें।

आपकी अपनी

डॉ. रचना अजमेरा

संस्थापक- डॉ. आलोक शुक्ला

मुद्रक कीरत पाल सलूजा तथा प्रकाशक श्यामा तिवारी द्वारा

- विंग्स टू फ्लाई सोसाइटी म. न. 580/1 गली न. 17 बी, दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर, छ. ग. के पक्ष में। सलूजा ग्राफिक्स 108-109, दुबे कॉलोनी, विधान सभा रोड़, मोवा जिला रायपुर, छत्तीसगढ़ से मुद्रित तथा विंग्स टू फ्लाई सोसाइटी, म.न.580/1 गली. न. 17 बी, दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर से प्रकाशित, संपादक डॉ. रचना अजमेरा.

अनुक्रमणिका

कश्मीर में शहीदों की कुर्बानी कब तक	10
बेटी चली शाला	12
पंचतंत्र की कथाएँ	14
बड़े बुजुर्गों ने अहंकार पर तीर मारा है	17
बालवाड़ी हेतु आह्वान गीत	18
टम-टम	20
अधूरी कहानी पूरी करो	21
रमन की चतुराई	21
संतोष कुमार कौशिक द्वारा पूरी की गई कहानी	22
व्यग्र पाण्डे द्वारा पूरी की गई कहानी	23
बसंत निषाद, माँ बंजारी गुरुकुल विद्यालय रायपुर द्वारा पूरी की गई कहानी	23
अगले अंक के लिए अधूरी कहानी	24
सुरक्षा की भावना	24
खरगोश	25
मेरा नाम तोता	26
मिशन बुनियाद कार्यक्रम: सफलता के नए आयाम	27
मुन्ना राजा	31
बचपन	32
पारंपरिक और आधुनिक शिक्षा	33
Similarities between My Mother and Mother Earth	35
मैं विद्यालय जाऊँगी	36
सुनो नदी	37

वक्त कभी किसी का सगा नहीं	39
फूलों की खेती	41
हाथी दादा	43
मन स्वस्थ है तो तन स्वस्थ है	45
रेलगाड़ी	48
मैं का भाव: एक मानवीय विकार	50
गाय	53
अंतर्राष्ट्रीय संग्रहालय दिवस	55
हिमालय.....	58
जियो अगर दुख को खुशी से यह अनमोल है.....	60
बड़े बुजुर्ग हमारे थिंक टैंक हैं.....	61
मधुर मुरलिया रहा बजाए.....	64
स्कूल चलें अभियान	66
हमारे प्रेरणास्रोत	67
गाय	69
तितली	70
तस्वीर बदलनी होगी.....	71
बढ़ता फैशन, घटते संस्कार	73
संगीत.....	78
तोता राजा	81
मेरा अस्तित्व.....	82
मातृदेवो भव, पितृदेवो भव, आचार्यदेवो भव.....	84
कविता.....	87

इंसान के रंग	89
छुक छुक रेलगाड़ी.....	91
रसीले आम.....	93
विनम्रता सफलता की कुंजी	94
दिन नवतपा के	96
आओ एक और एक ग्यारह बने	98
पूर्णरूपेण डिजिटल बैंक अब हमारे हाथ में है	101
खुशखबरी	103
मुस्कान	106
मुझको भैयाजी माफ़ करना.....	107
भारत ड्रोन महोत्सव	110
आजकल कृत्रिम बुद्धिमत्ता की लहर छाई है	113
तितली रानी	115
बढ़ती आधुनिक सुविधाएं - गिरता स्वास्थ्य	116
उत्कर्ष का जन्मदिन	119
विश्व गुरु भारत	120
घनाक्षरी - समय.....	122
पानी रे पानी तेरा रंग कैसा.....	124
भारत में धर्मनिरपेक्षता की सौगात मिली.....	127
आज बहाएं कागज की नाव	128
मानवता के लिए योग.....	130
बाढ़	133
खुल गए स्कूल	135

भारतीय भाषाएं नदियां हैं और हिंदी महानदी.....	137
आया महीना जून का सूरज उगले आग.....	140
चंदा मामा आओ ना	142
जिंदगी में रंग भरती बिटिया	144
जल	148
आत्मनिर्भरता.....	150
क्रोध विकराल परिस्थितियों का जन्मदाता	151
किलोल पत्रिका	153
तितली-भौरा-मधुमक्खी	155
प्रेरणा	157
मन मेरे भाती गौरैया	159
मिलकर पेड़ लगाएँ हम.....	161
एक नया भारत बनाएँ	163
गलत के खिलाफ़ आवाज़ ज़रूर उठाएं.....	165
आओ वृक्ष लगाएँ हम	167
जीवन	169
साइकिल चलाएँ	171
कच्चे आम	173
आईना	175
सुबह की धूप	176
खुशियों को गले लगाना सीखो	178
पर्यावरण है, तो हम हैं.....	181
युवाओं में भारतीय संस्कृति के प्रति प्रोत्साहन	183

आओ हम सब पेड़ लगायें.....	185
असफलता से निराश न हो	187
पिताजी	189
सायकल	191
बादल	192
बदली छाई	194
गंगा उत्सव बना नदी उत्सव	195
चिट्ठी.....	197
भौरे.....	199
डिम्मीजी	200
नानी	202
बाल पहेलियाँ.....	204
सुरम्य एवं सहज जीवन	206
सृष्टि, कुदरत, प्रकृति.....	208
मदर अर्थ, पृथ्वी	210
अपने बच्चों पर अपनी मर्जी न थोपें	212
शिकायतें ना करें.....	215
संपूर्ण निष्ठा	217
माँ का असीम प्रेम	219
आओ तारीफ़ और प्रशंसा करें.....	221
चालाक लोमड़ी	225
बेबाक हो जाए	227
विश्व रक्तदाता दिवस	229

रक्तदान महादान.....	233
यथार्थ मार्ग	236
परम शक्ति	238
महतारी	240
चलो स्कूल चलें	241
बंटी के खिलौने	243
2026 तक कचरा मुक्त शहर का प्रण लिए हैं	245
मौसम	247
अब तुम कविता लिखो	248
बेहतर, प्रबल और नेक बने	249
मेरी मम्मी	252
मेरी माँ के चरणों में चारो धाम बसता है	254
हानिकारक तंबाकू	256
वर्षा ऋतु.....	258
धीरज रखना सीखें	260
शाला प्रवेश उत्सव गीत	263
सेना देश की शान है	265
संज्ञा	267
मेला	268
मोर छत्तीसगढ़	270
प्रकृति	272
हम गीत गाएंगे	274
मित्र	276

जब टूट गई गुल्लक	278
छुट्टी छुट्टी छुट्टी	281
आओ स्कूल चलें हम	283
सन्त कबीर	285
हरियर बनाबो ग चल धराती ल	290
मेरे देश की मिट्टी	292
संघर्षों से मिलता है मंजिल	293
प्रकृति हम सब की माता है	295
चित्रोत्पल्ला महानदी	297
गर्मी की छुट्टी	299
बायोटेक स्टार्टअप एक्सपोजे 2022	301
कंधे का भार	304
अपना फर्ज निभाओ	306
विश्व बालश्रम निषेध दिवस	307
हम सबको स्कूल जाना है	311
साथ दे दो चलो जीत हम जाएंगे	313
स्वर गीत	315
लोग क्या कहेंगे	317
शाला में प्रवेश	320
भालू-कालू	322
तितली की सैर	323
रखें शरीर का ख्याल	324
खुद को जाने	327

कर्म से लिखे आत्मकथा	329
पारदर्शी जीवन	331
खुशनुमा वातावरण बनाएं.....	333
बुजुर्ग	335
सीमा प्रहरी	339
मां पृथ्वी से बड़ी पिता आकाश से ऊंचा है	340
बातें	341
चित्र देख कर कहानी लिखो	343
संतोष कुमार कौशिक द्वारा भेजी गई कहानी	343
कर्मों की सजा	343
बसंत निषाद, मां बंजारी गुरुकुल विद्यालय रायपुर द्वारा भेजी गई कहानी	345
घमंडी राजा	345
अगले अंक की कहानी हेतु चित्र	346
भाखा जनऊला	347

कश्मीर में शहीदों की कुर्बानी कब तक

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी



कश्मीर में शहीदों की कुर्बानी से,
आँखें सबकी भर आईं.
वो कल भी थे आज भी हैं,
अस्तित्व में चमक छाई.

नमन उनकी शहादत को,
शरीर देख आँखें भर आईं.
जज्बा माँ का जब बोली,
भारत की रक्षा में सौ बेटे लुटाई.

भारत माँ के लाल तूने,
फ़र्ज अपना अदा किया.
जान हथेली पर लेकर,
एक झटके से दुश्मन को ढेर किया.

देश की रक्षा करते तुम,
गहरी नींद में सो गए.
पूरा भारत तुमको याद किया,
तुम शहीद हो गए.

देश की रक्षा में तुम्हारा बलिदान,
देश कभी ना भूल पाएगा.
हर देशवासी याद रखेगा तुमको,
वंदे मातरम गाएगा.

अब हर परिवार से एक बच्चा,
सेना में जाएगा.
देश की रक्षा में,
जी जान से लड़ जाएगा.

देश सुरक्षित है तुम्हारी खातिर,
अब सबको समझ आएगा.
साथियों में उर्जा भर गए,
दुश्मन अब भारत से थर्राएगा.

तुम जैसे बहादुरों का नाम सुन,
दुश्मन सीमा से भाग जाएगा.
हर सीमा पर हमेशा,
भारत का झंडा लहराएगा.

बेटी चली शाला

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र



बेटी पढ़ने चली है शाला,
बाँटेगी अब ज्ञान उजाला.

पाएगी वह उत्तम शिक्षा,
पार करेगी अग्निपरीक्षा.
बुरे समय का अंत हो गया,
उसके गले पड़ेगी माला.

नाम गाँव का करेगी प्रकाशित,
कह न सकेगा कोई शोषित.
बुद्धू कौन बना पाएगा,
बैठे सोच रहे अब लाला.

कला, गणित, विज्ञान पढ़ेगी,
निज भविष्य वह स्वयं गढ़ेगी.
लाएगी खुशियाँ कुटुंब में,
दूर करेगी भ्रम का जाला.

नया सुखद इतिहास लिखेगी,
आगे ही वह सदा दिखेगी.
अबला नहीं बनेगी सबला
दुष्टों का होगा मुँह काला.

पंचतंत्र की कथाएँ

हाथी और बंदर



एक घने जंगल में एक बंदर और एक हाथी रहते थे. हाथी बड़ा शक्तिशाली था. वो बड़े-बड़े पेड़ों को एक ही झटके में उखाड़ देता था. बंदर काफी दुबला-पतला, लेकिन वो बड़ा ही फुर्तीला और तेज था. दिनभर बंदर जंगल के पेड़ों पर उछलकूद करता रहता था.

बंदर और हाथी दोनों को ही अपने गुणों पर बड़ा ही घमंड था. दोनों ही एक-दूसरे से खुद को ज्यादा अच्छा मानते थे. इस वजह से दोनों में हमेशा बहस होती रहती थी.

उसी जंगल में एक उल्लू भी रहता था, जो अक्सर बंदर और हाथी की हरकतें देखाता था. वह इन दोनों के लड़ाई-झगड़े से परेशान हो गया था. एक दिन उस उल्लू ने उन दोनों से कहा, 'जिस तरह तुम दोनों लड़ते हो, इससे कोई फैसला नहीं होने वाला है. तुम दोनों एक प्रतियोगिता के जरिए आसानी से यह फैसला कर सकते हो कि तुम दोनों में से सबसे शक्तिशाली कौन है.'

बंदर और हाथी दोनों को उल्लू की बात अच्छी लगी. दोनों ने फिर एक साथ पूछा, 'इस प्रतियोगिता में क्या करना होगा?'

उल्लू ने कहा, 'इस जंगल को पार करने पर एक दूसरा जंगल आता है. जहां पर एक काफी पुराना पेड़ है, जिस पर एक सोने का फल लगा हुआ है. तुम दोनों में से उस सोने के फल को जो पहले लाएगा, उसे ही इस प्रतियोगिता का विजेता बनेगा और असल मायनों में सबसे शक्तिशाली कहलाएगा.

उल्लू की बात सुनते ही बंदर और हाथी बिना कुछ सोचे-समझे दूसरे जंगल की तरफ निकले. बंदर ने अपनी फुर्ती दिखानी शुरू की. वह एक ही छलांग में एक पेड़ से दूसरे पेड़ तक पहुंच जाता. वहीं, हाथी तेजी से दौड़ने लगा और रास्ते में आने वाली हर चीज को अपने मजबूत सूंड़ से उखाड़ फेंकता.

थोड़ी ही देर में हाथी और बंदर उस जंगल से बाहर निकल गए. इस जंगल से दूसरे जंगल के बीच के रास्ते में एक नदी बहती थी. उसे पार करने के बाद ही दूसरे जंगल में पहुंचा जा सकता था.

बंदर ने फिर से अपनी फुर्ती दिखाई और झट से वह नदी में कूद गया, लेकिन पानी की लहर काफी तेज थी, तो बंदर नदी में बहने लगा. बंदर को नदी में बहते हुए देखकर हाथी ने तुरंत अपनी सूंड़ से उसे पकड़कर पानी के बाहर निकाल दिया.

हाथी के इस व्यवहार को देखकर बंदर काफी हैरान हुआ. उसने विनम्र होकर हाथी को अपनी जान बचाने के लिए धन्यवाद कहा और अपनी हार मानते हुए हाथी को ही आगे का सफर तय करने के लिए कहा.

बंदर की इस बात को सुनकर हाथी ने कहा, 'मैं नदी पार कर सकता है. तुम भी मेरी पीठ पर बैठकर इसे पार कर लो.'

बंदर हाथी की बात मान गया और वह हाथी के पीठ पर बैठ गया. इस तरह दोनों ने नदी पार कर ली और दूसरे जंगल में पहुंच गए. फिर दोनों ने मिलकर सोने के लगे हुए फल वाले पेड़ को भी खोज निकाला.

सबसे पहले हाथी ने अपनी अपनी सूंड़ से उस पेड़ को गिराना चाहा, लेकिन वह पेड़ काफी मजबूत था. हाथी के प्रहार से वो पेड़ नहीं उखड़ा.

फिर हाथी ने निराश होकर कहा, 'मैं अब यह फल नहीं तोड़ सकता हूँ.'

बंदर बोला, 'चलो, मैं भी एक बार कोशिश करके देखता हूँ.'

बंदर फुर्ती से उस पेड़ पर चलने लगा और उस डाली पर पहुंच गया जहां पर सोने का फूल लगा हुआ था. उसने वह फल तोड़ लिया और पेड़ के नीचे उतर गया.

इसके बाद दोनों वापस नदी पार करके अपने जंगल लौट आए और उल्लू को वह सोने का फल दे दिया.

फल पाने के बाद उल्लू जैसे ही इस प्रतियोगिता के लिए विजेता का नाम बोला, वैसे ही बंदर और हाथी ने मिलकर उसकी बात को रोक दिया.

दोनों ने एक साथ कहा, 'उल्लू दादा, अब हमें विजेता का नाम जानने की आवश्यकता नहीं है. इस प्रतियोगिता को हम दोनों ने मिलकर पूरा किया है. हमें यह समझ में आ गया है कि हर किसी का गुण अपने आप में अलग और खास होता है. हमने यह भी फैसला किया है कि आगे से अब हम कभी भी इस बात पर बहस भी नहीं करेंगे और मित्र की तरह इस जंगल में रहेंगे.'

उल्लू को बंदर और हाथी की बात सुनकर काफी खुशी हुई. उसने दोनों से कहा, 'मैं तुम्हें यही समझाना चाहता था कि सभी एक-दूसरे से अलग होते हैं. अलग-अलग गुण और शक्तियां ही हमें एक दूसरे की मदद करने के काबिल बनाती हैं. साथ ही हर किसी की अपनी कमजोरियां भी होती हैं, इसलिए एक-दूसरे के साथ मिलकर रहना ही सबसे अच्छा होता है.'

उसी दिन से हाथी और बंदर दोनों मित्र हो गए और वह जंगल में खुशी-खुशी रहने लगे.

बड़े बुजुर्गों ने अहंकार पर तीर मारा है

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी



बड़े बुजुर्गों ने अहंकार पर तीर मारा है,
कहावतों में ज्ञान बहुत सारा है.
नम्र होकर ग्रहण करो ज्ञान तुम्हारा है,
बड़े बुजुर्गों के जीवन का हमें अटूट सहारा है.

बुजुर्गों ने कहा यह जीवन का सहारा है,
सामने वाले से कहो तुम अज्ञानी नहीं हो.
मैं ज्ञानी नहीं हूँ जीत पल तुम्हारा है,
नम्र बनकर रहो खुशहाल पल तुम्हारा है.

मैं-मैं का विकार अज्ञान का द्वारा है
नम्रता गहना ज्ञान का सहारा है.
ज्ञानी को अज्ञानी से भी ज्ञान का,
गुण लेना गुणवत्ता का सहारा है.

बालवाड़ी हेतु आह्वान गीत

रचनाकार- दिनेश कुमार टांक



नान नान लईका के बने,
शिक्षा बर खुलगे बालवाड़ी.

शिक्षा के नींव ठोसलगहा करेके,
हमर सरकार लिस जिम्मेदारी.
शिक्षा के नींव ठोसलगहा करेके,
हम सबके जुम्मेदारी.
नान नान लईका के बने,
शिक्षा बर खुलगे बालवाड़ी.

अ आ इ ई संग ए बी सी डी ल सीखही,
गिनती पहाड़ा के संगे जोड़ घटाना पढ़ही.

खेल खेल में नइ लागही उनला भारी
नान नान लईका के बने,
शिक्षा बर खुलगे बालवाड़ी.

कविता कहानी अऊ पोयम ल सीखही,
घर म सुनाके बबा के मन ल जीतही.
आवव नोनी बाबू के प्रतिभा निखारी
नान नान लईका के बने,
शिक्षा बर खुलगे बालवाड़ी.

आनी बानी के खेल खिलऊना होही,
मजा मजा म जम्मो सीखे ल मिलही.
रोज रोज ऊखर मन बर देवारी
नान नान लईका के बने,
शिक्षा बर खुलगे बालवाड़ी.

जुर मिल सुधर बालवाड़ी बनाबो,
आखर के बढ़िया अलख जगाबो.
नइ रहन पाछ हमन ये दारी
नान नान लईका के बने,
शिक्षा बर खुलगे बालवाड़ी.

टम-टम

रचनाकार- आशीष मोहन

टम-टम

टम-टम-टम-टम-टम

टम-टम-टम-टम-टम

एक कहानी तुम सुनाओ
एक कहानी हम.

टम-टम-टम-टम-टम

टम-टम-टम-टम-टम

एक था राजा एक थी रानी
खतम कहानी बम.

टम-टम-टम-टम-टम

टम-टम-टम-टम-टम

अधूरी कहानी पूरी करो

पिछले अंक में हमने आपको यह अधूरी कहानी पूरी करने के लिये दी थी—

रमन की चतुराई



एक बार की बात है हंसपुर गाँव में एक बलदेव नाम का एक मुखिया रहता था. वह बहुत ही कंजूस किस्म का था और लोगों की भलाई के लिए पैसे खर्च करने से बचता था. एक बार उस गाँव में बहुत सूखा पड़ गया जिससे लोगों को पाने के पानी के लिए बहुत दिक्कत हो रही थी.

गाँव के लोग दूसरे गाँव से पानी लाकर कुछ दिनों तक अपना काम चलाते रहे लेकिन उसके बाद उनसे भी पानी देने से मना कर दिया. इसके बाद गाँव के लोग मुखिया के पास गए और उसको बोला आप गाँव में एक कुआँ खुदवा दो जिससे गाँव के लोग सूखे की स्थिति में उससे पानी पी सके.

मुखिया ने कहा कुआँ खुदवाने के लिए बहुत पैसे लगेंगे इतने पैसे मेरे पास नहीं हैं. यह कहकर वह चला गया. गाँव में रमन नाम का एक चतुर लड़का रहता था. उसने गाँव वालों से कहा हम गाँव वालों को ही मिलकर कुआँ खोदना चाहिए.

उसकी इस बात को सब गाँव वाले मान गए. सभी गाँव वालों ने पैसे इकट्ठे किये और कुआँ खुदाई का काम शुरू किया. कुछ दिन कुआँ खोदने के बाद नीचे कुँए में एक बहुत बड़ा पत्थर आ गया. जिसके कारण कुआँ खोदने का काम रुक गया.

इस कहानी को पूरी कर हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई उन्हें हम प्रदर्शित कर रहे हैं।

संतोष कुमार कौशिक द्वारा पूरी की गई कहानी

कुएँ में निकले हुए बहुत बड़े पत्थर को देखकर गाँव वाले ने रमन से कहा-बेटा शायद हमारे गाँव वालों को पीने का पानी नसीब नहीं है। तभी तो कुआँ के खुदाई करने में पानी आने के बजाय बहुत बड़ा पत्थर दिखाई दे रहा है। गाँव के मुखिया तो पहले से हार मान लिये है। आपके कहने पर कुआँ खुदाई का काम शुरू किया। जिसे हम लोगों के द्वारा पत्थर को तोड़ा जाना असंभव सा लग रहा है। अब हमें पानी नहीं मिल पाएगा। तभी रमन ने गाँव वालों से कहा-भाई, आप लोग इस तरह से हिम्मत हारोगे तो कैसे बनेगा? हम सब को कुआँ की खुदाई का काम जारी रखना ही चाहिए। ईश्वर के ऊपर भरोसा रखो, कर्म करेंगे तो निश्चित ही ईश्वर उसका फल देंगे।

इन्हीं आशाओं के साथ रमन, अपने साथियों के सहयोग से तेज हथियार का प्रयोग करते हुए कुएँ के पत्थर को बार-बार तोड़ने की कोशिश करता है। कुछ क्षण पश्चात पत्थर में दरार आ जाती है और पत्थर टूटने लगता है। पत्थर टूटते ही तरल पदार्थ का रिसाव प्रारंभ होता है। कुएँ से निकले हुए तरल पदार्थ में पेट्रोल जैसी गंध आने लगती है। रमन आश्चर्यचकित हो जाता है ये क्या है? कुएँ में पानी नहीं पेट्रोल है !!! जैसे-जैसे पत्थर कुआँ से बाहर निकाल रहा था वैसे-वैसे कुएँ में तेल भर रहा था। रमन एवं सभी साथी कुएँ से बाहर निकल जाते हैं। बाहर निकलकर गाँव वालों एवं मुखिया को बुलाकर बैठक आयोजित किया जाता है। बैठक में आये हुए गाँव के नागरिकों एवं सदस्यों को कुएँ में निकलने वाले तेल के बारे में जानकारी देता है।

बैठक में प्रस्तावित निर्णय अनुसार शासन को तेल निकलने की सूचना देता है। साथ ही शासन से प्रार्थना करता है कि कुएँ के तेल का उपयोग तभी करें जब गाँव के बेरोजगार बच्चों को रोजगार दिया जाए तथा गाँव में पीने के लिए स्वच्छ जल और कृषि कार्य हेतु पानी की उचित व्यवस्था किया जाए। शासन ने गाँव के सभी दिए हुए शर्तों को मान लेता है। कुएँ के तेल निकालने के पहले गाँव वालों के लिए पीने हेतु स्वच्छ जल के लिए फिल्टर युक्त टंकी निर्माण और तालाब में मशीन से खुदाई करवाकर कृषि कार्य के लिए पानी उपलब्ध कराते हैं। शासन गाँव वाले बच्चों को उसकी योग्यता अनुसार काम दिया जाता है। तत्पश्चात शासन कुएँ से पेट्रोल निकालने का कार्य करते हैं।

गाँव वाले सभी रमन को धन्यवाद देता है जिसकी चतुराई से गाँव में पीने के लिए स्वच्छ जल, कृषि कार्य हेतु पानी तथा बेरोजगार बच्चों को रोजगार मिल जाता है. जिनके कारण गाँव के प्रत्येक व्यक्ति का जीवन सुखमय होता है.

व्यग्र पाण्डे द्वारा पूरी की गई कहानी

चूँकि गाँव बहुत गरीब था वो दुबारा पैसे इकट्ठा नहीं कर सकता था. सभी गाँव वाले कुआँ खुदाई का काम रुक जाने से परेशान थे. पत्थर कैसे हटे कोई उपाय नहीं सूझ रहा था. एक दिन सभी गाँव वाले एक जगह इकट्ठे होकर इस समस्या को कैसे सुलझाएं इस पर चर्चा कर रहे थे कि अचानक गाँव का मुखिया वहाँ आ गया. सभी ने अभिवादन किया तो मुखिया ने पूछा कि सब इकट्ठे होकर क्या चर्चा कर रहे हो ? मुखिया के प्रश्न का उत्तर रमन ने दिया. मुखिया जी हम आपके पास ही आने की सोच रहे थे. दरअसल कुआँ खोदने से पहले हमें ज्योतिष ने ये स्थान बताते हुए कहा था कि इस जगह की खुदाई करने पर पानी के साथ एक बड़े पत्थर के नीचे बहुत सारा धन भी मिलेगा. अब कुआँ की खुदाई पत्थर तक तो पहुँच गई पर अब हमारे पास पैसे खत्म हो गये. हम सभी आपसे अनुरोध करते हैं कि पत्थर को हटवा दीजिए उसके नीचे का धन आपका और पानी हमारा होगा. रमन की बात सुनकर कंजूस मुखिया के मन में लालच उपजा और कहने लगा- मैं पैसा लगाकर पत्थर तो हटवाने दूँगा पर उसके नीचे के धन पर मेरा ही अधिकार होगा. मुखिया की बात का सभी ने समर्थन किया. मुखिया ने मजदूर लगाकर कुएँ के अंदर के पत्थर को हटवा दिया पर वहाँ कैसा भी धन नहीं निकला. मुखिया गाँव वालों को कोसने लगा तो रमन ने कहा- मुखिया जी, ज्योतिष ने शायद इस पानी को ही धन समझकर कहा हो. और इस प्रकार चतुर और बुद्धिमान रमन ने कंजूस मुखिया से कुएँ की खुदाई में सहभागिता ले ली. ये कहानी "अक्ल बड़ी के भैंस " कहावत को चरितार्थ करती है.

बसंत निषाद, माँ बंजारी गुरुकुल विद्यालय रायपुर द्वारा पूरी की गई कहानी

काम रुक जाने के बाद के गाँव वालों का मनोबल टूट गया. सब मिलकर दोबारा उस मुखिया के पास गए और उनसे प्रार्थना की इस बार वो मुखिया मान गया और गाँव वालों को ऐसे विनती करते देखा न गया और वो खुदाई के लिए तैयार हो गया. इस तरह कुएँ का काम पूरा हो गया और कुछ ही दिन बाद कुएँ में पानी आना शुरू हो गया.

अगले अंक के लिए अधूरी कहानी

सुरक्षा की भावना



एक बार एक गड़रिया अपनी भेड़ को खुला छोड़कर किसी काम से घर से बाहर चला गया. भेड़ अपनी आजादी का मजा ले रही थी. वह घर में यहाँ-वहाँ आजादी से घूमने लगी.

पहले उसने रसोई में जाकर रोटी खाई. उसके बाद वह शयनकक्ष में गई और वहाँ पर लगे नर्म बिस्तर पर आराम करने लगी. फिर सीढ़ियाँ चढ़कर घर की छत पर पहुँच गई.

वहाँ पर बह रही ठंडी हवा का आनंद लेते हुए वह बहुत अच्छा महसूस कर रही थी. अचानक उसने देखा कि घर के प्रवेश द्वार के बाहर खड़ा एक भेड़िया उसी की ओर घूर रहा है.

इसके आगे क्या हुआ होगा? इस कहानी को पूरा कीजिए और इस माह की पंद्रह तारीख तक हमें kilolmagazine@gmail.com पर भेज दीजिए.

चुनी गई कहानी हम किलोल के अगले अंक में प्रकाशित करेंगे.

खरगोश

रचनाकार- आशीष मोहन



आज सुबह जब मैं जागा.
खरगोश निकलकर घर से भागा.

खरगोश के पीछे-पीछे मैं.
मेरे पीछे मेरी माँ.

सुनो-सुनो ऐ राजा बेटा.
भागे-भागे चले कहाँ?

मेरा नाम तोता

रचनाकार- आशीष मोहन



मेरा नाम तोता है,
मेरा रंग हरा है.

मेरी चोंच लाल है,
हरे आम खाता हूँ.

लाल मिर्ची खाता हूँ,
फिर भी मीठा गाता हूँ.

मिशन बुनियाद कार्यक्रम:सफलता के नए आयाम

रचनाकार- पिंकी सिंघल



हम सभी जानते हैं कि शिक्षण संस्थानों में पढ़ने वाले सभी छात्रों का शैक्षणिक स्तर कभी एक जैसा नहीं होता. प्रत्येक शिक्षण संस्थान में छात्रों का मानसिक स्तर अलग अलग होने के कारण उनका शैक्षणिक स्तर भी ऊपर नीचे हो सकता है. एक कक्षा में भी सभी छात्रों का शैक्षणिक स्तर एक जैसा नहीं होता जबकि उन्हें पढ़ाने वाला अध्यापक एक ही होता है, जो सभी छात्रों के लिए एक ही विधि से शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को संचालित करता है. यह प्राकृतिक एवं स्वाभाविक है कि एक ही मां के दो बच्चे भी अपनी आदतों और स्वभाव में अलग-अलग हो सकते हैं इसलिए कभी एक बच्चे की तुलना दूसरे बच्चे से नहीं की जा सकती. किंतु यदि बच्चों के शैक्षणिक स्तर में जमीन आसमान का अंतर दृष्टिगत होता है तो यह सोचने का विषय बन जाता है. 19-21 का फर्क होने पर अधिक चिंता करने की आवश्यकता नहीं होती है, किंतु यदि यह अंतर बहुत ज्यादा होता है तो शिक्षकों और अभिभावकों को इस दिशा में ठोस कदम उठाने की आवश्यकता पड़ सकती है.

सन 2018 में दिल्ली सरकार द्वारा करवाए गए उपलब्धि सर्वेक्षण के दौरान कुछ महत्वपूर्ण तथ्य दृष्टिगत हुए जिनके आधार पर सरकार ने फैसला किया कि छात्रों के शैक्षिक स्तर को ऊँचा उठाने के लिए कक्षा 3 से कक्षा 8 तक के सभी छात्रों के लिए स्कूलों में मिशन बुनियाद कार्यक्रम चलाया जाएगा. मिशन बुनियाद कार्यक्रम, जैसा कि नाम से ही पता चलता है, छात्रों की बुनियाद को मजबूत करने के लिए एक विधिवत कार्यक्रम की नींव रखी गई जिससे छात्रों को बेसिक शिक्षा प्राप्त करने

में कठिनाई न हो और यदि उन्हें कोई कठिनाई है तो उन कठिनाइयों को इस प्रकार के कार्यक्रमों के माध्यम से दूर किया जा सके और छात्रों की उपलब्धि इस स्तर तक पहुँचाई जा सके कि सीखने के कुछ अपेक्षित न्यूनतम स्तर प्राप्त हो सकें.

सीखने के न्यूनतम स्तर से तात्पर्य हिंदी, गणित और अंग्रेजी के न्यूनतम स्तर को प्राप्त करना है. उदाहरण के लिए, हिंदी में अक्षर और शब्दों की पहचान, उन शब्दों से वाक्यों का निर्माण करना और उनको लिखना. इसी प्रकार गणित में संख्याओं की पहचान उन्हें पढ़ना, पहचानना और लिखना और उसके पश्चात साधारण जोड़ घटा के सवालों को हल कर पाना. ठीक इसी प्रकार अंग्रेजी में अल्फाबेट पढ़ना, लिखना और उनका प्रयोग कर अंग्रेजी के साधारण शब्दों को पढ़ और लिख पाना, इत्यादि है.

मिशन बुनियाद कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य छात्रों को मूलभूत शिक्षा प्रदान करना है. गौरतलब है कि मिशन बुनियाद कार्यक्रम दिल्ली में पहली बार 2018 में चलाया गया था. 2022 में भी दिल्ली सरकार की इस योजना में विद्यालयों के अध्यापक सरल, सहज, रोचक और मनोरंजक तरीकों का प्रयोग कर कर विभिन्न शिक्षण सहायक सामग्रियों को बनाएँगे और उनका प्रयोग शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के दौरान करेंगे ताकि बच्चे कम समय में अधिक सीख सकें और उनका अधिगम स्थाई हो पाए. बुनियाद कार्यक्रम में छात्रों को उनके शैक्षणिक स्तर के आधार पर तीन समूहों में बाँटा जाता है जिसमें कमजोर औसत और औसत से ऊपर के छात्रों के अलग-अलग समूह बनाए जाते हैं और उनकी समझ के आधार पर फिर उन्हें सिखाया जाता है, उनकी कठिनाइयों को दूर करने का यथासंभव प्रयास किया जाता है. साथ ही साथ उनका सतत मूल्यांकन भी करने का प्रावधान मिशन बुनियाद में रखा गया है ताकि छात्रों की कठिनाइयों और कमियों का साथ-साथ निदान हो सके और उनके उपचार के लिए विभिन्न छात्र केंद्रित गतिविधियों के माध्यम से सरल और प्रभावी तरीकों का प्रयोग कर शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को क्रियान्वित किया जा सके.

मिशन बुनियाद कार्यक्रम के क्रियान्वयन में विद्यालयों को कुछ अलग से करने की आवश्यकता न पड़े, इसलिए दिल्ली सरकार ने सभी स्कूलों को अपने संसाधनों से ही मिशन बुनियाद कार्यक्रम चलाने संबंधी दिशा निर्देश जारी किए हैं. गौरतलब है कि मिशन बुनियाद कार्यक्रम पूरे दिन नहीं चलाया जाएगा अपितु कक्षा 3 से 9 के विद्यार्थियों के लिए चलाए जा रहे इस कार्यक्रम को दिल्ली सरकार के सभी विद्यालय सुबह 7:00 से 9:00 के बीच चलाएँगे और एमसीडी अर्थात दिल्ली

नगर निगम के सभी विद्यालय 7:30 से 11:30 तक. विद्यालय के अध्यापक विद्यार्थियों के आने से पहले आएँगे और विद्यार्थियों के जाने के बाद ही जाएँगे ताकि छात्रों की सुरक्षा में कोई कोताही न हो सके .

शैक्षणिक सत्र 2022-23 के लिए मिशन बुनियाद को 2 फेज में चलाने के सरकारी आदेश का अनुपालन करते हुए सभी विद्यालयों ने मिशन बुनियाद कार्यक्रम अपने-अपने विद्यालयों में चलाया. पहला फेज 2 अप्रैल 2022 से शुरू हुआ था, 10 अप्रैल को समाप्त हो गया. तत्पश्चात 11 अप्रैल 2022 से 15 जून 2022 तक मिशन बुनियाद का दूसरा फेज चल रहा है.

मिशन बुनियाद कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य हिंदी ,गणित और अंग्रेजी विषयों में छात्रों की उपलब्धि को बढ़ाना है. यहाँ यह बताना आवश्यक है कि पिछले 2 सालों में कोरोना महामारी के चलते विद्यालयों के छात्रों के शैक्षणिक स्तर में गिरावट देखने को मिली है. कोरोना काल के बाद दिल्ली सरकार ने विभिन्न विद्यालयों के सभी छात्रों का राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण करवाया, जिससे पता चला कि अधिकतर छात्रों की पढ़ाई का स्तर उनकी कक्षा के स्तर के अनुरूप नहीं है बड़ी संख्या में बच्चों को अक्षर ज्ञान और संख्या ज्ञान ही नहीं है जो कि बेहद चिंता का विषय है. पिछले सालों में मजबूरीवश सरकार के आदेश पर शिक्षा विभाग को स्कूलों के सभी छात्रों को बिना किसी औपचारिक परीक्षा के ऑनलाइन पढ़ाई के आधार पर ही अगली कक्षाओं में प्रमोट कर दिया गया था जिसके चलते बच्चों की ग्रोथ को सही प्रकार नहीं मापा जा सका और उनकी लर्निंग में गैप आ गया.उनके सीखने के अंतर की खाई को पाटने के लिए ही सरकार ने मिशन बुनियाद कार्यक्रम को चलाए जाने की मुहिम को आगे बढ़ाया और पिछले सालों की कमी को दूर करने के प्रयासों में सभी विद्यालयों का सहयोग भी माँगा.

कई विद्यालयों द्वारा विभिन्न प्रकार की समस्याओं का हवाला देकर मिशन बुनियाद कार्यक्रम को चलाए जाने में असमर्थता जाहिर की गई. उन समस्याओं में से कुछ इस प्रकार बताई गईं; जैसे छात्रों का अपने पैतृक गाँव गमन कर जाना ,मौसम खराब होना, विद्यालयों के पास संसाधनों की सीमितता, विद्यालय में छात्रों की संख्या बहुत कम होना ,साथ ही साथ अभिभावकों की तटस्थता,किंतु दिल्ली सरकार ने विद्यालयों की ऐसी किसी भी दलील को नहीं सुना और सभी विद्यालयों को पूर्ण सख्ती से आदेश दिया कि स्कूल प्रतिदिन 2 घंटे से 4 घंटे के मिशन बुनियाद कार्यक्रम को सफलतापूर्वक चलाएँ और छात्रों की उपलब्धियों संबंधी डेटा शिक्षा विभाग को

उपलब्ध भी कराएँ ताकि यह पता चलता रहे कि वास्तविक अर्थ में बच्चों ने पहले से कितना इंप्रूव किया है और अभी कितना कुछ करना बाकी है. यहाँ यह बात भी बता देना सही है कि हालाँकि मिशन बुनियाद कार्यक्रम 2 से 3 महीने तक चलाए जाने का प्रावधान है ,और यह पूरी तरह संभव नहीं कि इन महीनों में बच्चे को हर विषय में पूरी तरह पारंगत कर दिया जाए. किंतु, शिक्षकों द्वारा की गई मेहनत और प्रयासों से बच्चों के शैक्षणिक स्तर में सुधार अवश्य आता है, इसलिए कहीं न कहीं से तो शुरुआत करनी बनती ही है. यही शुरुआत दिल्ली सरकार ने दिल्ली के सभी स्कूलों में कर दी है जिसका परिणाम सुखद होने वाला है.

शिक्षा का स्तर निसंदेह ऊँचा उठेगा और दिल्ली के स्कूल शिक्षा के मामले में उदाहरण प्रस्तुत करेंगे. गर्व की बात है कि दिल्ली सरकार हर संभव कोशिश कर रही है कि शिक्षा के स्तर में गुणात्मक सुधार आ पाए और बच्चों में रटने की प्रवृत्ति को खत्म किया जाए जिससे उनकी समझ को कुछ नए और पहले से बेहतर आयाम देकर सही रूप में विकसित किया जा सके, आखिर पढ़ेगा इंडिया, तभी तो आगे बढ़ेगा इंडिया.

मुन्ना राजा

रचनाकार- आशीष मोहन



सो जा बेटा सो जा
मुन्ना राजा सो जा.

'गलगल' मौसी आएगी,
मीठी 'छींद' लाएगी.

मीठी छींद लाएगी,
मीठी नींद लाएगी.

(*गलगल एक पक्षी है जिसे छींद जो एक फल है, बहुत पसंद है.)

बचपन

रचनाकार- आशीष मोहन

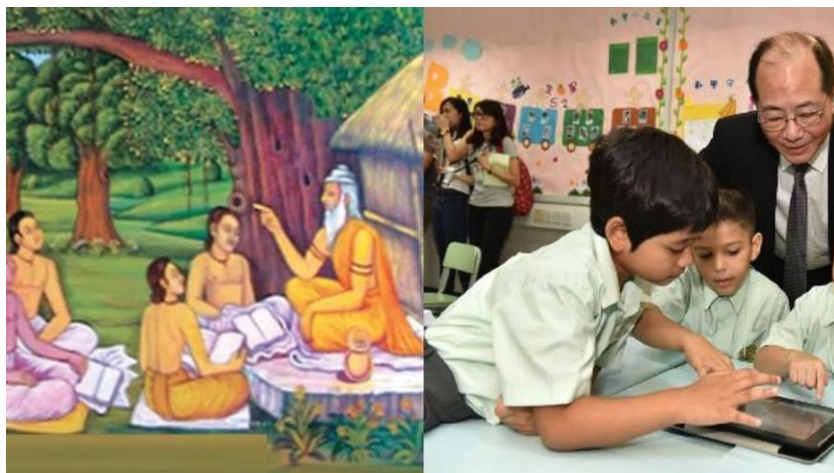


फिर वही बचपन पाऊँ माँ,
गोद तुम्हारी पा जाऊँ.

तुम डराना म्याऊँ-म्याऊँ,
मैं कहूँगा आऊँ-आऊँ.

पारंपरिक और आधुनिक शिक्षा

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी



भारतीय विरासत हजारों वर्ष पुरानी है जिसकी गाथाओं से इतिहास भरा पड़ा है. इसे संरक्षित रखने और प्रचार-प्रसार की नितांत आवश्यकता है क्योंकि बदलते डिजिटल युग में हर क्षेत्र में हर कार्यक्रम डिजिटलाईज्ड हो रहा है. हस्त लिखित का युग अब विलुप्त होने लगा है. ऐसी स्थिति में अब शिक्षा प्रणाली में भी आधुनिकता पर जोर देना स्वभाविक है. अगर हमें विश्व के साथ चलना है, वैश्विक प्रतियोगिता को टक्कर देना है, तो हमें अपना आधारभूत शिक्षण ढांचा वैश्विक स्तर का रखना होगा.

फिर हमारी अद्भुत प्राचीन विरासत कृतियों लिपियों को कैसे संरक्षित रख पाएंगे? अगली पीढ़ियों को, हमारी प्राचीन विरासत का आभास कैसे होगा? इसलिए हमें इसका प्रचार-प्रसार और वर्तमान शैक्षणिक नीतियों में सामंजस्य स्थापित करने की नितांत आवश्यकता है.

इसलिए केंद्रीय शिक्षा और कौशल विकास मंत्री ने एक कार्यक्रम में अपने संबोधन में कहा, कि प्रधानमंत्री के नेतृत्व में भारतीय शिक्षा प्रणाली में वैकल्पिक ज्ञान प्रणालियों, दर्शन और भारतीय परिप्रेक्ष्य को प्रतिबिंबित किया जा रहा है. उन्होंने कहा कि वैसे तो हम अपने प्राचीन अतीत की अच्छी चीजों को अपनाते हैं, लेकिन इसके साथ ही हमें अपने समाज की समस्याओं के प्रति भी सचेत रहना चाहिए और ऐसे भविष्य का निर्माण करना चाहिए जो प्राचीन अतीत के विशिष्ट ज्ञान व समकालीन मुद्दों के बीच उचित सामंजस्य सुनिश्चित करे. उन्होंने कहा कि समस्त दुनिया की अनगिनत समस्याओं का समाधान भारतीय ज्ञान प्रणाली में निहित है.

नई शिक्षा नीति 2020 में भी एक स्पष्ट दिशा बताई गई है और हाल ही में दिनांक 16 मई 2022 को भारतीय ज्ञान प्रणालियों पर परिचर्चा, अवधारणाएं और अमल पर एक पाठ्य पुस्तक का विमोचन हुआ. यह पुस्तक हाल ही में एआईसीटीई द्वारा अनिवार्य किए गए भारतीय ज्ञान प्रणालियों पर एक आवश्यक पाठ्यक्रम की आवश्यकता को पूरा करती है. इसके अलावा, नई शिक्षा नीति में भी उच्च शिक्षा से जुड़े पाठ्यक्रम में इस बारे में विस्तृत जानकारियाँ प्रदान करने के लिए एक स्पष्ट दिशा बताई गई है जिससे आने वाले दिनों में देश के कई उच्च शिक्षण संस्थानों में इस तरह की पुस्तक अत्यंत आवश्यक हो गई है. वैसे तो यह पुस्तक मुख्य रूप से इंजीनियरिंग संस्थानों द्वारा उपयोग के लिए लिखी गई है, लेकिन इसमें निहित संरचना और सामग्री स्वयं ही इस तरह की पुस्तक के लिए अन्य विश्वविद्यालय प्रणालियों (लिबरल आर्ट्स, चिकित्सा, विज्ञान और प्रबंधन) की आवश्यकता को आसानी से पूरा करने में मदद करती है. भारतीय ज्ञान प्रणाली पर हाल ही में जारी पाठ्यपुस्तक विद्यार्थियों को अतीत के साथ जुड़ने, समग्र वैज्ञानिक समझ विकसित करने और बहु-विषयक अनुसंधान एवं नवाचार को आगे बढ़ाने के लिए इसका उपयोग करने का अवसर प्रदान करके विद्यार्थियों को पारंपरिक और आधुनिक शिक्षा प्रणाली के बीच की खाई को पाटने में सक्षम बनाएगी.

केंद्रीय शिक्षा राज्य मंत्री ने भी उस कार्यक्रम में अपने संबोधन में, पारंपरिक भारतीय ज्ञान प्रणालियों के बारे में सीखने की आवश्यकता का उल्लेख किया. उन्होंने आयुर्वेद, प्राचीन काल में जहाजों के निर्माण, विमान संबंधी ज्ञान, सिंधु घाटी शहरों की वास्तुकला, और प्राचीन भारत में मौजूद राजनीति विज्ञान के उदाहरणों का हवाला दिया. उन्होंने 'भारतीय ज्ञान प्रणाली का परिचय' पर लिखी गई पुस्तक की सराहना की जिसका उद्देश्य भारतीय ज्ञान प्रणालियों की ज्ञानमीमांसा एवं सत्त्व शास्त्र को जीवन के सभी क्षेत्रों में लागू करना, और इंजीनियरिंग एवं विज्ञान के छात्रों को इनसे कुछ इस तरह से परिचय कराना है जिससे कि वे इससे जुड़ाव महसूस कर सकें, इसके महत्व को गंभीरता से समझ सकें और इस दिशा में आगे खोज कर सकें. उन्होंने यह भी कहा कि किसी भी व्यक्ति के उत्थान के लिए उसकी जड़ें अवश्य मजबूत होनी चाहिए, इन जड़ों को संरक्षित करने के लिए पारंपरिक भारतीय ज्ञान प्रणाली के बारे में जानकारियाँ जरूर होनी चाहिए.

Similarities between My Mother and Mother Earth

ARSHITA, Class Xth C, Bal Bharati Public School, Rohini Delhi



Mother earth gives rice barley and wheat

My mother cooks all these for us to eat

Both bear every pain before they reach to us

Lesson of live and let live they teach to us

They stop us from doing any wrong deed

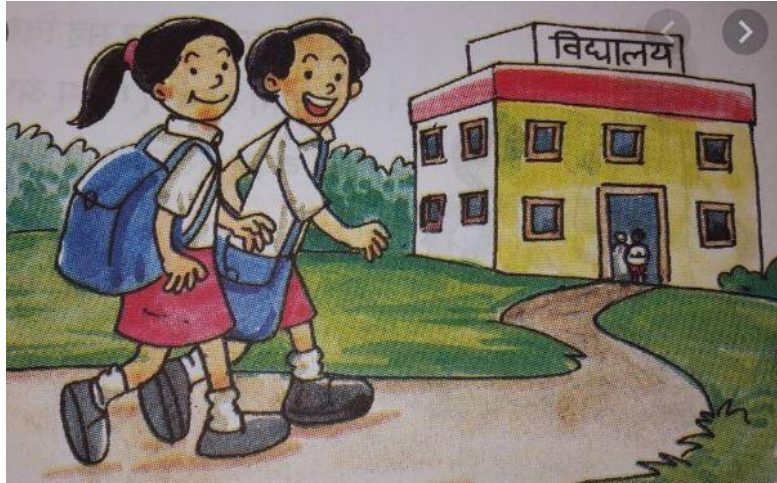
Always inspire us to be generous away from greed

Both encourage us to live happily with others

They are the only who tell we all are brothers

मैं विद्यालय जाऊँगी

रचनाकार- आशीष मोहन



बाबा मुझको स्लेट कलम दो,
मैं विद्यालय जाऊँगी.

अ - अनार, आ - आम,
सब कुछ सीखकर आऊँगी.

फिर छोटे से गाँव में एक दिन,
विद्यालय बनवाऊँगी.

देश-विदेश नहीं जाऊँगी,
खुद शिक्षिका बन जाऊँगी.

सुनो नदी

रचनाकार- आशीष मोहन



सुनो नदी! तुम ऐसी क्यों हो?
ऐड़ी-टेढ़ी बहती क्यों हो?

निर्मल सा मन निर्मल जल है,
कल-कल करके बहती हो.
जो करते हैं तुमको गंदा,
जल उनको तुम देती क्यों हो?
सुनो नदी!

हम बच्चे हैं खूब नहाते,
शोर-शराबा खूब मचाते.
फिर भी मन ललचाता है,
तुम इतनी अच्छी क्यों हो?
सुनो नदी!

हे नदी! तुम दूर बहुत हो,
घर के पास आ जाओ ना.
खूब नहाएँगे फिर दिनभर
इतनी दूर तुम बहती क्यों हो?
सुनो नदी!

वक्त कभी किसी का सगा नहीं

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी



सृष्टि की रचना करने वाली प्रकृति ने खूबसूरत मानव जीवन के साथ वक्त का ऐसा पहिया संलग्न कर दिया है कि जीवन चक्र के साथ वक्त का पहिया भी घूमता रहता है. वक्त किसी का सगा नहीं है. मानव को अपनी बुद्धि का प्रयोग कर परिस्थितियों के अनुसार वक्त का सकारात्मक उपयोग कर ऐसे कार्य करना चाहिए कि हमारा नाम सदियों, पीढ़ियों तक इस सृष्टि में जगमगाता रहे. वक्त हमेशा एक सा नहीं रहता, वक्त का पहिया कब और कैसे करवट बदल देता है, पता ही नहीं चलता. वक्त अपनी गति से चलता रहेगा, कितना भी पकड़ लो फिसलता ज़रूर है. यह वक्त है, बदलता ज़रूर है.

हम खुद अपने पुराने और आज के वक्त का विश्लेषण करें कि कुछ साल पूर्व हम क्या थे और अब क्या हैं, तो हमें पता चल जाएगा कि वक्त कभी एक सा नहीं रहता. इतना ही नहीं अगर हम अपने ही समाज या पीढ़ियों का विश्लेषण करें तो हमें अंदाज लग जाएगा कि वक्त का पहिया कैसे बदलता रहता है. इसलिए बड़े बुजुर्गों का कहना है, समय-समय की बात है आज तुम्हारा समय है कल हमारा समय भी आएगा.

हमें ऐसे कई उदाहरण मिल जाएँगे जिनमें अपने-आपको बड़े शहंशाह, मानने वाले लोगों को भी हमने लाचार, होते देखा होगा, जिनके पास बेशुमार दौलत और शक्ति थी, वे सब कुछ खरीद सकते थे परंतु वक्त का पहिया ऐसा फिसला कि उनका पैसा, शक्ति सब कुछ जमींदोज हो गया और वो पैसे पैसे को मोहताज हो गए.

बड़े-बड़े उद्योगपति, राजनीतिज्ञ, अधिकारी, मंत्री, उच्च पदस्थ व्यक्ति जिनके पास कभी उद्योग, सत्ता, शासन-प्रशासन पावर की चाबी थी, वक्त के पहिए ने ऐसी करवट ली, कि उनका हाथ आज खाली है. जिनकी कभी तूती बोलती थी आज उनकी बोलती बंद है. इसलिए समय रहते कुछ ऐसा काम करना चाहिए कि वक्त को भी रुकने पर मजबूर होना पड़े.

पिछले सालों में वक्त के पहिए की करवट को हम सबने देखा है. कैसे हम खुशहाल थे, फिर कोरोना महामारी आई, वैक्सीनेशन ड्राइव चली, आज सबकुछ करीब-करीब नियंत्रित है, सत्ता में बदलाव, कुछ उद्योगपतियों द्वारा बैंक घोटाला, इत्यादि घटनाएँ हमने देखी हैं. रूस यूक्रेन युद्ध सहित अनेक घटनाक्रमों के आधार पर हम कह सकते हैं कि वक्त करवट जरूर बदलता है. जीवन में सबसे अनमोल चीज वक्त है, जिसका चक्र निरंतर चलता रहता है. इसे कोई रोक नहीं सकता जैसे रेत को कितनी भी जोर से मुट्ठी में बांधकर रखो वह फिसलती ही है. उसी तरह वक्त भी सबको अवसर देता है अगर उस अवसर को पहचान कर उसका लाभ ना उठाएँ तो वह मौका हाथ से निकल जाता है. इसीलिए कहते हैं कि मनुष्य सब कुछ नियंत्रण कर सकता है सिवाय वक्त के. वक्त एक बार चला गया तो लाख कोशिशों के बाद भी कभी वापस नहीं आ सकता.

फूलों की खेती

रचनाकार- आशीष मोहन



मैं फूलों की खेती कर,
दुनिया में फूल खिलाऊँगा.
गोला, बारूद, बंदूकों के,
एक दिन बीज मिटाऊँगा.

प्यार ही प्यार मिले जहाँ मैं,
ऐसा चमन बनाऊँगा.

सबकी चाहत पूरी करने,
शांतिदूत बन जाऊँगा.
इन हाथों से जख्म-जख्म में,
मरहम मैं लगाऊँगा.

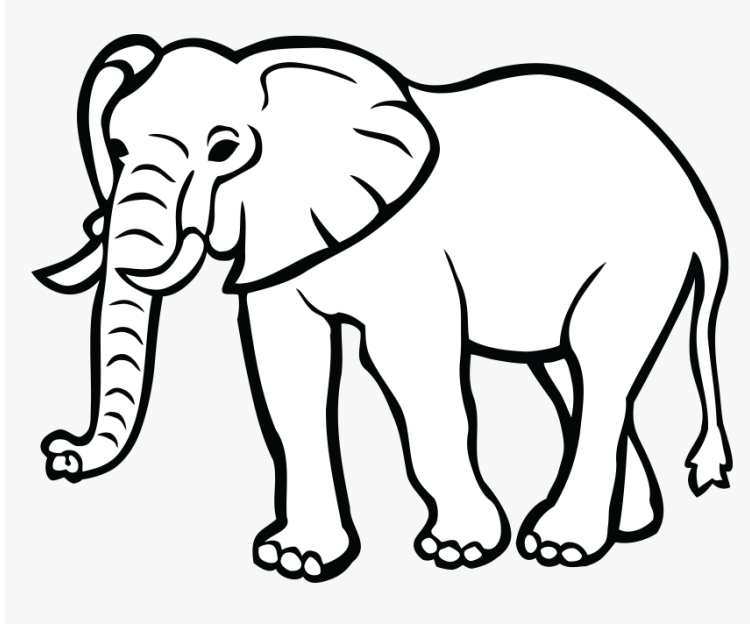
प्यार ही प्यार मिले जहाँ में,
ऐसा चमन बनाऊँगा.

जो गिरता हो उसको जाकर,
हाथ पकड़ उठाऊँगा.
फिर थोड़ी सी हिम्मत देकर,
उसको गले लगाऊँगा.

प्यार ही प्यार मिले जहाँ में,
ऐसा चमन बनाऊँगा.

हाथी दादा

रचनाकार- आशीष मोहन



हाथी दादा,
तुम केले के पेड़ गिराओ ना,
केवल उसके फल-फल तोड़ो,
कुछ तुम खाओ,
कुछ हमें खिलाओ ना.

हाथी दादा,
सूंड में अपनी, जल भर लाओ ना,
कुछ तुम पी लो,
थोड़े में हमको नहलाओ ना.

हाथी दादा,
हाथी दादा गदर मचाओ ना,
थोड़ा-थोड़ा तुम भी खेलो
थोड़ा हमें खिलाओ ना.

हाथी दादा,
हाथी दादा इतना इतराओ ना,
थोड़ा-थोड़ा तुम भी पढ़ लो
थोड़ा हमें पढ़ाओ ना.

मन स्वस्थ है तो तन स्वस्थ है

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी



सृष्टि के अनमोल हीरे मानव में प्रकृति ने अदभुत गुणों की खान सृजित की है. बस! हमें अपनी बुद्धि से उन गुणों को पहचान कर अपने जीवन में ढालना है. फिर हर कोई कहेगा देखो कितनी सुखी जिंदगी है. अपने आप में, परिवार, मोहल्ले, समाज में हम सतयुग का माहौल बना कर सुख चैन से अपना जीवन बिता सकते हैं. अनेक गुणों में से एक गुण संकल्प शक्ति है, जिसके मन और स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव पर हम यहाँ चर्चा करेंगे.

मन स्वस्थ है तो तन स्वस्थ है. मन का संकल्प मनुष्य की आंतरिक शक्ति है. मानव शरीर यदि रथ है तो मन उसका सारथी है. मनुष्य शरीर की असली शक्ति मन है. मन ही वह प्रेरक शक्ति है जो मनुष्य से बड़े-बड़े काम करवा लेती है. यदि मन में दुर्बलता आ जाए तो शक्तिशाली शरीर और विभिन्न साधन भी व्यर्थ हो जाते हैं. मन बहुत बलवान है. शरीर की सभी क्रियाएँ मन पर निर्भर करती हैं. यदि मन में उत्साह और उमंग है तो शरीर भी तेजी से कार्य करता है. व्यक्ति की हार-जीत उसके मन की दुर्बलता या सबलता पर निर्भर है.

शारीरिक रूप से दुर्बल एवं हीन होते हुए भी दृढ़ निश्चयी व्यक्ति ऐसे-ऐसे कार्य कर जाते हैं कि उनकी असाधारणता पर विस्मय हो जाता है. साधारण सा प्रतीत होने वाला व्यक्ति भी अपनी संकल्प शक्ति के बल पर भयावह तूफानों तक का मुँह मोड़ देने में सफल हो जाया करते हैं. मनोविज्ञान का मानना है कि वनस्पति जाग्रत रहती है, पशु सोते हैं, पत्थर में भी चेतना होती है और मनुष्य विचार

चिन्तन करता है इसलिए यह इन अन्य सजीवों तथा निर्जीवों से भिन्न हैं. चिन्तन-मनन करना मानव की विशेषता है जिसका सीधा सम्बन्ध मन से होता है.

संकल्प शक्ति से हीन व्यक्ति कोशिश के पहले ही हार स्वीकार कर लेते हैं. धीरे-धीरे उनमें यह भावना बैठ जाती है कि वे कभी जीत नहीं सकते हैं. दूसरी ओर सफल व्यक्ति हमेशा आशावादी व कर्मवीर होते हैं. वे जीत के लिए प्रयासरत रहते हैं. यदि हमारा मन शिथिल है तो हम कुछ नहीं कर सकते. मनुष्य का जीवन खेल के मैदान के समान है. यहाँ हर व्यक्ति खिलाड़ी है. खेल में विजय प्राप्त करने के लिए खिलाड़ी को चुस्त और तंदुरुस्त होने के साथ-साथ अपने-आप पर भरोसा भी होना चाहिए. जिसका मन मजबूत होता है, वही सच्चे अर्थों में तंदुरुस्त होता है. कबीरदास जी ने कहा है कि

'मन के हारे हार है, मन के जीते जीत.
कहे कबीर हरि पाइए मन ही की परतीत.."

अर्थात्- जीवन में जय और पराजय केवल मन के भाव हैं. यानी जब हम कार्य के शुरू में ही हार मान लेते हैं तो हम सचमुच में हार जाते हैं. लेकिन अपनी मंजिल के लिए जब जूझते हैं, बार-बार गिर कर खड़े होते हैं तो हमारा आत्मविश्वास कई गुना बढ़ जाता है. इसके बाद जब मंजिल मिलती है, तो उसकी खुशी कई गुना होती है. इसलिए आपकी जीत या हार को कोई और तय नहीं कर सकता है. यह खुद आप पर निर्भर करता है. यही बात व्यक्ति के जीवन की तरह किसी राष्ट्र के बारे में भी सत्य है. किसी राष्ट्र की सबसे बड़ी ताकत उस देश के निवासियों की प्रबल इच्छाशक्ति होती है.

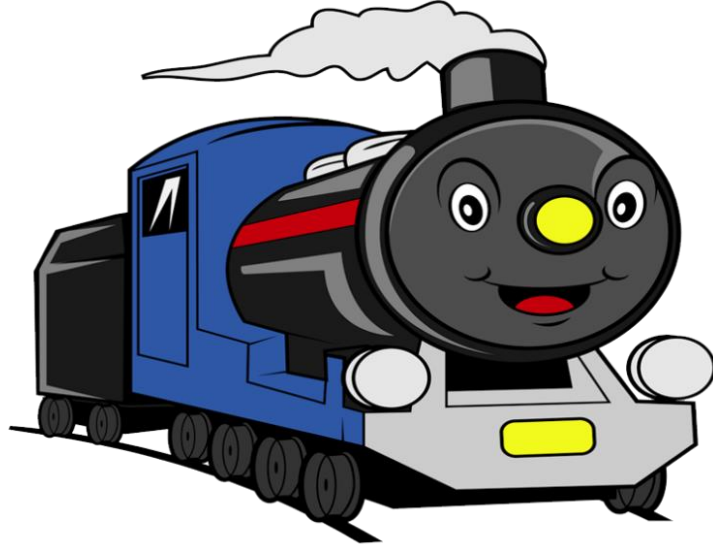
इसीलिए आत्मविश्वास की बात कही जाती है. अखबारों में हम टीम की हार का कारण पढ़ते हैं, तो यही बताया जाता है कि खिलाड़ी अपना मनोबल बनाए नहीं रख सके. या तो वे अतिउत्साह में आ गए या फिर निराशा में. मन की इन दोनों स्थितियों का शरीर पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है. शरीर को इस बात से बहुत फर्क पड़ता है कि मन में उत्साह की तरंगें पैदा हो रही हैं या निराशा की. उसको तो तरंगों से मतलब है. निराशा की तरंगों से उसकी शक्ति विखंडित हो जाती है. इसका परिणाम पराजय में होता है. इसलिए बहुत जरूरी है कि हम संतुलित रहें.

स्वस्थ और तंदुरुस्त रहना हमारे दैनिक कार्यों को पूरा करने में भी मदद करता है. स्वस्थ रहने का अर्थ रोग रहित तन का होना ही नहीं, बल्कि तनावमुक्त मन का होना भी है. यदि एक व्यक्ति का मन अस्वस्थ है, तो वह अपने शरीर को स्वस्थ नहीं रख सकता. शरीर और मन दोनों का स्वास्थ्य जीवन में सफलता और आनंदमय जीवन का सूत्र है. हमें अपने शरीर और मन दोनों को स्वस्थ रखने के लिए जागरूक होने की आवश्यकता है.

मानसिक तनाव धीरे-धीरे शारीरिक स्वास्थ्य को कमजोर कर देता है. ऐसे में जरूरी है कि हम अपने शारीरिक स्वास्थ्य के साथ मानसिक स्वास्थ्य के प्रति भी गंभीर रहें. इसके लिए ध्यान व व्यायाम दोनों का सहारा लिया जाना चाहिए. स्वस्थ मन से बनता है स्वस्थ तन, स्वस्थ तन से बनता है स्वस्थ जीवन और स्वस्थ जीवन से बनेगा स्वस्थ भारत.

रेलगाड़ी

रचनाकार- टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला"



सीटी बजाती
धुआँ उड़ाती
चली रेलगाड़ी-रेलगाड़ी

लोहे से बनती
लोहे पे दौड़ती
भली रेलगाड़ी-रेलगाड़ी

बड़ी सुबह से
अपनी जगह से
निकली रेलगाड़ी-रेलगाड़ी

खेत-खलिहानों से
पर्वत मैदानों से
मिली रेलगाड़ी-रेलगाड़ी

गाँवों को छोड़कर
शहरों से होकर
गली-गली रेलगाड़ी-रेलगाड़ी

मैं का भाव: एक मानवीय विकार

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी



सामाजिक, राजनैतिक, शैक्षणिक, आर्थिक, पारिवारिक इत्यादि अनेक क्षेत्रों में अधिकतर व्यक्तियों में मैं का भाव अधिक देखने को मिलता है. ऐसे व्यक्ति सोचते हैं कि अगर मैं नहीं होता तो ये काम नहीं होता या यह काम तो मैं ही कर सकता था और ये मेरे कारण ही हो रहा है. ऐसा भाव अधिकतर मनुष्यों में होता है. यह भाव असफलता, आपसी फूट व परेशानियों का कारण बनता है. हम उपरोक्त हर क्षेत्र में देखते हैं कि ऐसी प्रवृत्ति मिलती ही है. अगर मनुष्य की यह प्रवृत्ति समाप्त हो गई तो जीवन अलौकिक सुखों से भरपूर हो सकता है.

मनुष्य को अपनी प्रतिभा पर बहुत गर्व होता है. ये सब मेरी प्रतिभा के कारण हो रहा है, ऐसा सोचने वाले भी बहुत हैं. प्रतिभा हर व्यक्ति की वह क्षमता होती है जो उसे प्राकृतिक तौर पर मिलती है. दुनिया में हर व्यक्ति के अंदर किसी न किसी तरह की प्रतिभा जरूर होती है. कुछ लोगों को अपनी प्रतिभा के बारे में पता लग जाता है परंतु कुछ लोग अपनी प्रतिभा को नहीं पहचान पाते. कुछ लोगो को अपनी प्रतिभा को पहचानने में थोड़ा समय लगता है. प्रतिभा जन्मजात प्राप्त होती है, प्रतिभा का मतलब है, मनुष्य की वह स्थिति जिस स्थिति में वह अन्य लोगो के मुकाबले अधिक ज्यादा जानता हो या फिर कोई ऐसा अनूठा काम जो अन्य लोगो को करने के लिए सीखना पड़ता है या फिर अभ्यास से उस काम में कुशलता प्राप्त करनी पड़ती है. आसान भाषा में प्रतिभा आपके नैसर्गिक व्यक्तित्व और पहचान का स्वाभाविक हिस्सा है. यह हमें व्यवसाय/नौकरी, शिक्षा, या जीवन के

अन्य क्षेत्रों में महत्वपूर्ण भूमिका प्रदान करती है. परंतु मनुष्य अपनी प्रतिभा को अपना अहंकार बना लेता है जो उसके विनाश का कारण बनता है.

यदि अहंकार की यह प्रवृत्ति निकल जाए और प्रकृति प्रदत्त प्रतिभा का भाव आ जाए तो जीवन सफल हो जाएगा.

अधिकतर व्यक्तियों को ऐसा लगता है कि मेरा नेतृत्व सर्वोपरि है, बस उनके आगे सब शून्य है. अधिकतर व्यक्ति नेता बनकर नेतृत्व करना चाहते हैं कि मैं जैसा कहूँ वैसा ही हो. यह प्रवृत्ति हमें सामाजिक, राजनैतिक, पारिवारिक क्षेत्रों में देखने को मिलती है. अधिकतर व्यक्ति किसी भी टीम, दल, परिवार, संस्था, ग्रुप, पंचायत, सभा, संगठन हर क्षेत्र का नेता बनना पसंद करता है और अपने विरोध को सहन नहीं कर पाता है. इसलिए हर प्रकार के संगठनों में गुटबाजी होती है.

अधिकतर व्यक्तियों के स्वभाव में उपरोक्त तीनों भाव होते हैं. उपरोक्त तीनों स्थितियों में कहीं ना कहीं स्वार्थ का भाव छिपा होता है और स्वार्थ ही मनुष्य की तीनों विकारी प्रवृत्ति की जड़ है.

संगठन, जिसे एक अथवा अधिक साझा लक्ष्य (यों) की प्राप्ति के लिये कार्यरत दो या ज्यादा लोगों के रूप में परिभाषित किया जाता है, की अवधारणा निस्वार्थ संगठन विकास के मूल में है. इस संदर्भ में विकास यह धारणा है कि समय बीतने पर एक संगठन अपने लक्ष्यों की प्राप्ति में अधिक प्रभावी बन सकता है.

संगठनात्मक विकास एक प्रणाली-स्तरीय अनुप्रयोग और रणनीतियों, संरचना और प्रक्रिया के नियोजित विकास, सुधार और पुनर्प्रवर्तन की ओर व्यवहारात्मक शास्त्र के ज्ञान का स्थानांतरण है, जिसका परिणाम संगठन की प्रभाव कारिता के रूप में मिलता है परंतु वर्तमान परिवेश में हम देखते हैं कि निस्वार्थ संगठित सेवा के लिए परिभाषित राजनीतिक क्षेत्र के अतिरिक्त आध्यात्मिक, शैक्षणिक, पारिवारिक, सामाजिक सहित अन्य क्षेत्रों में भी कुछ हद तक व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए नेतृत्व करने की होड़ लग गई है.

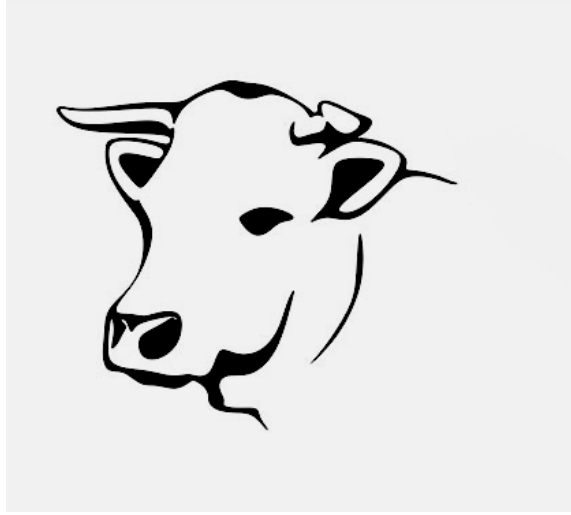
उस आदमी का जीना या मरना अर्थहीन है जो अपने स्वार्थ के लिए जीता या मरता है. जिस तरह से पशु का अस्तित्व सिर्फ अपने जीवन यापन के लिए होता है, मनुष्य का जीवन वैसा नहीं होना चाहिए. ऐसा जीवन जीने वाले कब जीते हैं और कब मरते हैं कोई ध्यान ही नहीं देता है. हमें दूसरों

के लिए निस्वार्थ संगठनात्मक विकास द्वारा कुछ ऐसे काम करने चाहिए कि मरने के बाद भी लोग हमें याद रखें. इससे हमारे अंदर से मृत्यु का भय चला जाता है. वाणी में भी आया है कि

विचार लो कि मर्त्य हो न मृत्यु से डरो कभी,
मरो, परंतु यों मरो कि याद जो करें सभी.
हुई न यों सुमृत्यु तो वृथा मरे, वृथा जिए,
मरा नहीं वही कि जो जिया न आपके लिए.
वही पशु प्रवृत्ति है कि आप आप ही चरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे.

गाय

रचनाकार- लोकेश्वरी कश्यप



प्रथम निवाला गौ को, देता जो परिवार.
सूखी रहता सदा वह, समृद्ध हो भंडार.

सेवा करे जो गौ की, सदा रहे प्रसन्न मन.
बी पी रहे नियंत्रित, शांत रहता है मन.

गोबर गौ मूत्र छुवे, विकार मिटे मन.
दुग्ध उत्पादों को खाय, पुष्ट होवे तन-मन.

कामधेनु है गौ माँ, पूर्ण करे हर काम.
प्रसन्न मन रहे सदा जन, फेरे जब तन हाथ.

खाद बनता गोबर से, धरा करे उपजाऊ.
बढ़े फसले खेतों में, सुखी हो किसान.

जीवन भर सेवा करे, खेतों में गौ-पुत्र.
सेवा से सुख मिले, जान मान यह सूत्र.

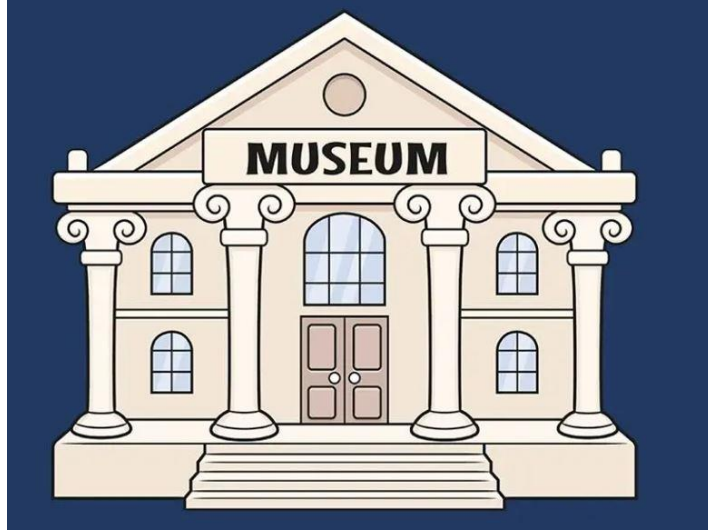
दूध दही माखन खाय, बालक बन जगदीश.
गाय चराये गोपाल, गौ सेवक बनें ईश.

गौ के हर अंग व उत्पाद, अमित गुणकारी.
गोबर, मूत्र, चर्म व हड्डी, सब हैं हितकारी.

जब धरा धरी गौ रूप, दौड़े आये झट हरि.
गौ का मान -सम्मान कर, गौ देव पर भारी.

अंतर्राष्ट्रीय संग्रहालय दिवस

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी



हर देश में अपने इतिहास के खूबसूरत पुरावशेष, कलाकृतियाँ, संस्कृति, प्राकृतिक विज्ञान, मानव विज्ञान विधियों, प्राणी विज्ञान, से संबंधित वस्तुओं को अपने राष्ट्रीय या अन्य संग्रहालय में उनकी सुरक्षा, व्याख्या और उद्देश्य हेतु संवर्धन, संग्रह करना, उनके महत्व का प्रसार करना तथा राष्ट्रीय पहचान के प्रतीक के रूप में संरक्षित किया जाता है। संग्रहालयों के कारण देश के नागरिकों को अपने पूर्व के ज्ञान का बोध होता है। अपने देश की संस्कृति, अपने पूर्वजों के जीवन-यापन और इतिहास का बोध संग्रहालय के द्वारा ही होता है।

आधुनिक युग में हजारों वर्ष पूर्व की मानवीय जीवन-यापन और प्रयोग में लाई वस्तुओं को हम संग्रहालय में देख सकते हैं।

बड़े-बड़े संग्रहालय दुनिया भर के प्रमुख शहरों में स्थित हैं, जबकि हजारों स्थानीय संग्रहालय छोटे शहरों, कस्बों और ग्रामीण क्षेत्रों में भी मौजूद हैं। संग्रहालयों के अलग-अलग उद्देश्य होते हैं। उनमें संग्रहीत वस्तुओं के संरक्षण से लेकर, शोधकर्ताओं और विशेषज्ञों की सेवा तक।

दुनिया के लोकप्रिय संग्रहालयों में जाकर अनेक आयोजनों को देखा जा सकता है दुनिया के कुछ सबसे लोकप्रिय संग्रहालय ये हैं।

- (1) द हर्मिटेज, रूस
- (2) लौवर, फ्रांस
- (3) मिस्र का संग्रहालय, मिस्र
- (4) एक्रोपोलिस संग्रहालय, ग्रीस
- (5) ब्रिटिश संग्रहालय, इंग्लैंड.

भारत में भी बहुत सारे उत्कृष्ट संग्रहालय हैं जिनमें कुछ अद्वितीय हैं.

- 1) प्रिंस ऑफ वेल्स संग्रहालय, मुंबई
- 2) शंकर इंटरनेशनल डॉल्स म्यूजियम, नई दिल्ली
- 3) राष्ट्रीय रेल संग्रहालय, नई दिल्ली
- 4) सालार जंग संग्रहालय, हैदराबाद
- 5) केलिको म्यूजियम ऑफ टेक्सटाइल्स, अहमदाबाद.

इंडियन म्यूजियम, कोलकाता की गिनती देश के सबसे पुराने संग्रहालयों में होती है. इसकी स्थापना वर्ष 1814 में हुई थी.

संग्रहालय एक ऐसा संस्थान है जो समाज की सेवा और विकास के लिए जनसामान्य के लिए खोला जाता है, और इसमें मानव और पर्यावरण की विरासतों के संरक्षण के लिए उनका संग्रह, शोध, प्रचार और प्रदर्शन किया जाता है जिसका उपयोग शिक्षा, अध्ययन और मनोरंजन के लिए होता है. भारत में संग्रहालय की अवधारणा अति प्राचीन काल से देखी जा सकती है जिसमें चित्र-शाला (चित्र-दीर्घा) का उल्लेख मिलता है.

राष्ट्रीय संग्रहालय के मुख्य उद्देश्य निम्नांकित हैं. ऐतिहासिक सांस्कृतिक और कलात्मक महत्व के पुरावशेष और कलाकृतियों को उनकी सुरक्षा और व्याख्या के उद्देश्य हेतु संग्रहीत करना. इतिहास, संस्कृति और कलात्मक उत्कृष्टता और उपलब्धियों के संबंध में कलाकृतियों के महत्व पर ज्ञान का प्रसार करना. कलात्मक और सांस्कृतिक गतिविधियों में लोगों को आनंद प्रदान करने और विचार विमर्श हेतु एक सांस्कृतिक केन्द्र के रूप में सेवाएँ प्रदान करना. राष्ट्रीय पहचान की प्रतीक के रूप में कार्य करना.

बात अगर हम अंतर्राष्ट्रीय संग्रहालय दिवस मनाने के उद्देश्यों की करें तो, दुनियाभर में मनाए जाने वाले अंतर्राष्ट्रीय संग्रहालय दिवस को मनाने की प्रथा इंटरनेशनल काउंसिल ऑफ म्यूजियम ने शुरू की. सबसे पहले इस दिन को साल 1977 में मनाया गया. इंटरनेशनल काउंसिल ऑफ म्यूजियम द्वारा हर साल अंतर्राष्ट्रीय संग्रहालय दिवस को मनाने के लिए एक थीम रखी जाती है. इसका उद्देश्य लोगों को संग्रहालय और धरोहरों के प्रति जागरूक करना है. संयुक्त राष्ट्र संघ ने 18 मई, 1983 को संग्रहालय की महत्ता को समझते हुए एक प्रस्ताव पारित किया, जिसमें हर साल अंतर्राष्ट्रीय संग्रहालय दिवस मनाने की बात कही गई. इसका आयोजन अंतर्राष्ट्रीय संग्रहालय परिषद करती है. हर साल अंतर्राष्ट्रीय संग्रहालय दिवस का आयोजन किया जाता है, जो एक अनूठा दिन होता है. 2020 में, लगभग 158 देशों और क्षेत्रों के 37, हजार से अधिक संग्रहालयों ने इस आयोजन में भाग लिया. जबकि 2021 में लॉकडाउन के कारण ऐसा आयोजन हो पाना संभव नहीं हुआ.

संग्रहालय में प्रदर्शित होने वाली कलाकृतियों और कार्यक्रमों के बीच एक सहजीवी संबंध है, जो लोगों को उनकी संस्कृति से जोड़ता है. संग्रहालय में रखी कलाकृतियों में भारत और पूर्वी दुनिया का इतिहास और संस्कृति समाहित है. भारतीय संग्रहालय एक ऐसा संस्थान है जो जहाँ एक ओर आपको अपने मित्रों, पड़ोसियों से मिलने, उनके विचार जानने और उनसे चर्चा करने के अवसर प्रदान करता है, वहीं समाज के सक्रिय सदस्य के रूप में आपको अंतर्राष्ट्रीय संग्रहालयों में प्रवेश के भी अवसर प्रदान करता है.

राष्ट्रीय संग्रहालय द्वारा पांच दिनों तक विशेष कार्यक्रमों का आयोजन शुरू है. यह कार्यक्रम 16 से 20 मई तक चलेगा. समारोह के दौरान राष्ट्रीय संग्रहालय युवा और वयस्कों दोनों के लिए डिजाइन की गई ऑनलाइन और ऑफलाइन कार्याकलापों और कार्यक्रमों का मिश्रित आयोजन कर रहा है.

देश में 18 मई को मनाए जाने वाले अंतर्राष्ट्रीय संग्रहालय दिवस के मौके पर संस्कृति मंत्रालय ने 16 मई से 20 मई तक सभी संग्रहालयों में निशुल्क प्रवेश की अनुमति दी है.

हिमालय

रचनाकार- लोकेश्वरी कश्यप



हिमालय से चली गंगा, लेकर निर्मल धार.
भव ताप पाप हरण को, बनी नाव-पतवार.

नदी नहीं भवतारन ये, जन करती भव पार.
पापनाशिनी माँ गंगा, नाश करें सब पाप.

हिमालय है सरताज, समझ मत बस पहाड़.
देश रक्षा में तैयार, शत्रु का जमे हाड़.

हिमालय का उपकार, भूलो मत सुजान.
महिमा है अतुलित, जाने सकल जहान.

औषधि की खान यहाँ, करे रोग निदान.
निर्मल नदियाँ बहतीं, जो इसकी संतान.

नदी समीप बसते जन, फले-फूले सभ्यता.
जीवन में समृद्धि हो, उपजाऊ बने धरा.

सब ओर हरा - भरा हो, नीक लगे संसार.
वृक्ष शुद्ध पर्यावरण कर, देते हैं उपहार.

सुखी समृद्ध हो देश, हरियाली जब हो.
उपकार है वृक्षों का, हर जन निरोग हो.

जियो अगर दुख को खुशी से यह अनमोल है

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी



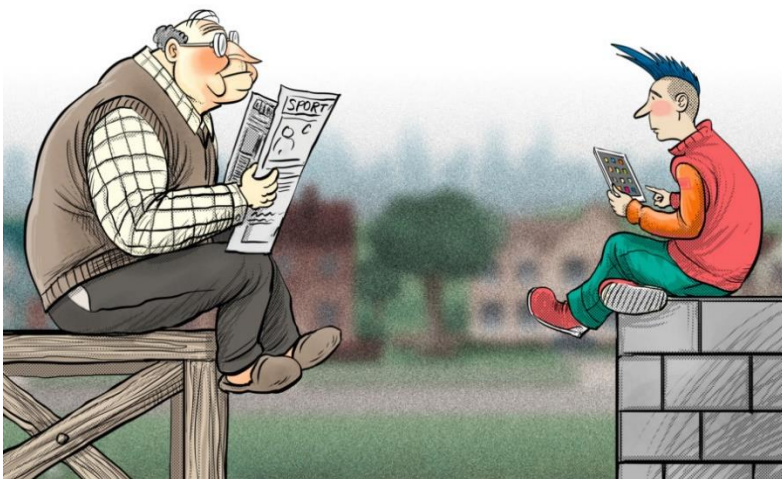
जियो अगर दुख को खुशी से, यह अनमोल है,
दुख भी शरमा जाएगा यह कैसा माहौल है.
सिर्फ सुख या सिर्फ दुख ही जीवन में बेमेल है,
जिंदगी में उतार-चढ़ाव बस यही तो खूबसूरत खेल है.

जिंदगी सुखों और दुखों का मेल है,
जिंदगी में उतार-चढ़ाव बस एक खेल है.
जिस प्रकार दो पहियों से पटरी पर दौड़ती रेल है,
बस उतार-चढ़ाव जिंदगी का खूबसूरत खेल है.

घबरा जाए जो चुनौतियों से वह भी क्या इंसान है,
जीना सिखा दे बुरे वक्त में वही असल इम्तिहान है.
कभी ढेरों खुशियाँ कभी गम बेमिसाल है,
इम्तिहानों से भरी जिंदगी यही खूबसूरत मिसाल है.

बड़े बुजुर्ग हमारे थिंक टैंक हैं

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी



जनरेशन गैप एक प्राकृतिक क्रिया है. इस विषय में किए गए अनेक अध्ययनों से पता चला है कि एक पीढ़ी दूसरी पीढ़ी से अलग क्यों है? कुछ है जो स्वाभाविक रूप से उनमें आता है और ऐसा होना एक तरह से अच्छी बात है, क्योंकि इस तरह से मानव प्रजाति विकसित हो रही है. परंतु इस तरह विकसित मानव प्रजाति से बड़े बुजुर्गों, जो हमारे थिंकटैंक हैं को कम आंकने की दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति को रेखांकित करना जरूरी है. यह एक जीती जागती सच्चाई वर्तमान समाज में दिख रही है. अतः आज हम जनरेशन गैप की बढ़ती समस्या और उसके समाधान के अनेक तर्कों पर चर्चा करेंगे.

जनरेशन गैप तब होता है जब दो लोगों के बीच उम्र का काफी अंतर होता है. यह अक्सर माता-पिता और बच्चों के बीच टकराव का एक कारण बन जाता है. जनरेशन गैप को दो अलग-अलग पीढ़ियों से संबंधित लोगों के बीच के विचारों और विचारधाराओं के अंतर के रूप में समझाया गया है. यह राजनीतिक विचारों, धार्मिक विश्वासों या जीवन के प्रति सामान्य दृष्टिकोण में अंतर हो सकता है.

वर्तमान बदलते आधुनिक परिवेश में आज की जनरेशन की पौराणिक कथाओं, कहानियों में रुचि नहीं है पौराणिक परंपराओं, प्रथाओं, रीति-रिवाजों से भी बहुत बड़ा वर्ग आज किनारा करने की कोशिश कर रहा है. मेरी निजी राय है कि इसका एक बड़ा कारण आज के डिजिटल युग में विभिन्न मोबाइल ऐप्स और अनेक इलेक्ट्रॉनिक प्रोग्राम सहित नशीली चीजें, खेल सब शामिल हैं जिसके

कारण जनरेशन गैप को बहुत बल मिला है. बच्चे आधुनिकता में तल्लीन होकर पुराने तौर-तरीकों को नापसंद करने लगते हैं.

एक सत्य यह भी है कि, यदि आज के बच्चे आधुनिकता से नहीं परिपक्व होते हैं तो समाज, रिश्तेदार और आस पड़ोस के लोग उन्हें पुराने विचारों और दब्बू किस्म के नौजवान समझते हैं. इन परिस्थितियों में अभिभावकों की जिम्मेदारी बहुत बढ़ जाती है. अभिभावकों को जनरेशन गैप को समझना होगा और उसके अनुरूप व्यवहार से बच्चों में अनुशासन, मर्यादा, के साथ आधुनिकता के सही संतुलन बनाने के प्रयासों में उनका साथ देना होगा. अपने पुराने विचारों से कुछ पीछे हटना होगा. बच्चों में अगर असभ्य और अनैतिक आचरण की आदत है तो उनसे यह आदत सख्ती से छुड़वानी होगी. आज के समय में पालकों और अभिभावकों को एक रणनीति के तहत बच्चों का मार्गदर्शक, दोस्त, साथी, सलाहकार सब बनना होगा. ऐसा माहौल पैदा करना होगा कि उनकी समझ में यह बात आए कि मेरे अभिभावक जो कर रहे या कह रहे हैं वह सत्य है.

बच्चों की उम्र का एक दौर ऐसा होता है कि, हम उसका दोष पूरी तरह बच्चों पर नहीं डाल सकते क्योंकि एक निश्चित उम्र का यह दौर ऐसा होता है कि बच्चा केवल बच्चा बनकर ही रहता है. जब उनकी उम्र परिपक्व हो जाती है तो, बात उन्हें समझ में आ जाती है. इस परिपक्वता तक के समय का हर अभिभावक या पालक को संयम से इंतजार करना होता है. बच्चों को मार्गदर्शन, अच्छी सीख, सलीका अच्छी आदतें, अच्छे विचार अच्छे कार्य, सिखाने का काम करना होता है और यह सब प्लानिंग और रणनीति के तहत करना होता है ताकि काम भी हो जाए और बच्चों को पता भी न लगे कि क्या हो रहा है.

हम अपने बचपन और अभिभावकों की बात करें, और वर्तमान से तुलना करें तो बहुत बड़ा फर्क महसूस करेंगे. दशकों पहले का दौर कुछ और था, वर्तमान दौर कुछ और है. हमारे अभिभावक जिस प्रकार से हमारे साथ कड़ाई, गुस्सा या दंड दिया करते थे, हम वर्तमान जनरेशन के साथ ऐसा नहीं कर सकते.

दशकों पूर्व अभिभावकों की धाक अगली जनरेशन में चलती थी, वह आज नहीं चलती. दूसरे शब्दों में हम अपने अभिभावकों का बहुत सम्मान करते थे आज की जनरेशन में वह गुण कम दिखाई दे रहा है.

वर्तमान जनरेशन के साथ हमको अभिभावक, दोस्त, साथी, बच्चा, मार्गदर्शक आदि अनेक रूपों में खड़ा होना पड़ेगा. उनकी नई सोच और विचारों के साथ तालमेल बनाना होगा. परंतु यह भी ध्यान रखना होगा कि बच्चे मर्यादा की सीमा न लांघें, अश्लील हरकतें न करें सामाजिक व्यवस्था, आर्थिक सजगता, नैतिक मूल्य, स्कूल कॉलेज प्रशासन की मर्यादा में चूक ना करें.

मधुर मुरलिया रहा बजाए

रचनाकार- लोकरश्वरी कश्यप



नटखट कान्हा, मधुर मुरलिया रहा बजाय.
खींची जाएँ जब गोपियाँ, कदंब ऊपर चढ़ जाय.
इत-उत ढूँढे बावरी हो, वह पत्तों में छिप जाय.
छलिया, नटखट, कृष्णा, सबको बड़ा सताय.

कान्हा के मोहनी मुस्कान से भला कौन बच पाय.
मुरली की मधुर धुन में, भला कौन न खो जाय.
जमुना तीर, कदंब के नीचे, कृष्णा जब बुलाय.
कौन होगा वो बावला, जो इस बुलाने पर ना जाय.

कान्हा तेरा चाँद सा मुखड़ा, हर पल मुझे सताय.
बता मूझे तू, तेरे सिवा मुझे कुछ और क्यों न भाय.
तुझ संग प्रीत लगाके मोहन, मन बड़ा पछताय.
तेरे चरणकमल का भौंरा बना मन अब कहाँ जाय.

नटवर है रासरचैया,सबको उँगलियों पे नचाय.
वो भी नाचे तेरी धुन में, जो कभी नाच ना पाय.
तेरी मोहनी माया व्यापे सबको, कोई बच ना पाय.
इस माया से वही उबरे, जिसको मोहन तू ले बचाय.

प्राण पखेरू तुझसे मिलने, पंख रहे फड़फड़ाय.
लाख करे ये जतन, पर ये पिंजड़ा तोड़ ना पाय.
धीरज धर जी में अपने, सखियाँ रही समझाय.
पाने तेरा शांति भरा आलिंगन,मन रहा छटपटाय.

अंत समय आया कृष्णा मेरा, सुध -बुध रहा गँवाय.
बता क्या करूँ मैं जतन,जो मुझे तेरे दरस हो जाय.
देर न कर दे दर्शन प्यारे, प्राण-पखेरू ना उड़ जाय.
तेरे दर्शन पाकर कान्हा, जीवन मेरा धन्य हो जाय.

स्कूल चलें अभियान

रचनाकार- लोकरश्वरी कश्यप



लड़की-लड़का सबको हो बराबर शिक्षा का अधिकार.
इसलिए स्कूल चलो अभियान चला रही है सरकार.

स्कूल चलो अभियान को सफल बनाना है.
प्रत्येक बच्चे का स्कूल में दाखिला कराना है.

जन-जन में शिक्षा का अलख जगाना है.
बच्चे नियमित शाला आएँ यह समझाना है.

चलो सफल बनाएँ स्कूल चलें अभियान.
स्कूल आएँगे बच्चे बढ़ाएँगे अपना ज्ञान.

अपने बच्चों को नियमित स्कूल ले जाना है.
उनके जीवन को ज्ञानदीप से रोशन बनाना है.

हमारे प्रेरणास्रोत

डॉ. खूबचंद बघेल



छत्तीसगढ़ के पृथक राज्य के सपना दिखाइए और पुर खा के सुरता डॉ खूबचंद बघेल को जयंती पर सब्बो जन ला गाड़ा गाड़ा बधाई

बच्चों आज हम बात कर रहे हैं डॉ खूबचंद बघेल जी की, जिन्होंने अपना पूरा जीवन समाज और किसानों के कल्याण के लिए समर्पित कर दिया .

डॉ.खूबचंद बघेल जी का जन्म 19 जुलाई 1900 में रायपुर के पथरी गांव के एक मालगुजार परिवार में हुआ.उनके पिता का नाम जुड़ावन प्रसाद एवं माता का नाम केतकी बाई था.प्रारंभिक शिक्षा के बाद वर्ष 1920 में रायपुर के रॉबर्टसन मेडिकल कॉलेज में उन्होंने शिक्षा ग्रहण किया और चिकित्सा के क्षेत्र में अपनी सेवा दी, परन्तु 1930 में वह महात्मा गांधी के विचारो से प्रभावित होकर कांग्रेस में शामिल हुए. 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन में गांधी जी के साथ शामिल हुए .इस दौरान उन्हें गिरफ्तार किया गया और जेल भी जाना पड़ा.

छत्तीसगढ़ के हित और मान सम्मान के लिए उन्होंने कई महत्वपूर्ण कार्य किए.उन्होंने जाति प्रथा खत्म करने के लिए पंक्ति छोड़ो आंदोलन चलाया अर्थात कोई भी व्यक्ति किसी के भी साथ पंक्ति में बैठकर भोजन कर सकता है. उन्होंने समारोह में जाति के आधार पर पंक्ति में बैठने का विरोध किया और वह सफल रहे.

1951 में पिथौरा, सरायपाली, बसना के पिछड़े आदिवासियों से जबरदस्ती चंदा वसूली किया जा रहा था. इस बात से वह बहुत दुखी हुए और उन्होंने मंत्रिमंडल से इस्तीफा देकर किसान मजदूर पार्टी की सदस्यता ग्रहण की. इस घटना के बाद उनकी लोकप्रियता ऐसी बढ़ी कि वह धरसीवा विधान सभा क्षेत्र से तीनो बार विजई हुए.

डॉ. खूबचंद बघेल जी 1962 में राज्य सभा सदस्य नियुक्त किए गए. उन्होंने 1967 में भारतीय संघ का गठन किया और स्वयं उसके अध्यक्ष बने. 1950 सिक्स में राजनांदगांव में छत्तीसगढ़ महासभा का गठन किया.

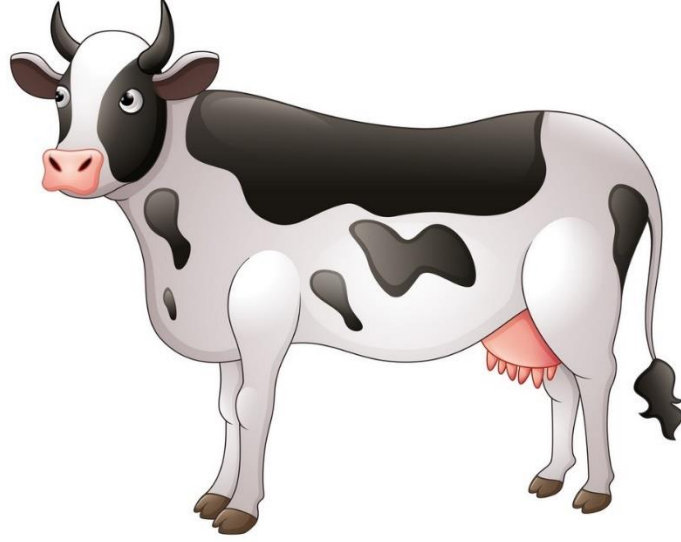
उनके कृतित्व और व्यक्तित्व के प्रति सम्मान प्रकट करते हुए चिकित्सा क्षेत्र में डॉ खूबचंद बघेल स्वास्थ्य सहायता योजना शुरू की गई जिसके तहत ₹500000 तक निशुल्क इलाज की व्यवस्था मरीजों के लिए उपलब्ध कराई गई

जब खूबचंद बघेल जी राज्यसभा के सदस्य थे तभी उनकी मृत्यु 22 फरवरी 1969 को दिल्ली में हुई थी उनकी मौत के उपरांत जब पार्थिव शरीर को मालगाड़ी से भिजवाया गया तो पूरे छत्तीसगढ़ में इसका भारी विरोध हुआ इसके बाद ही निर्णय लिया गया कि किसी भी राजनेता के पार्थिव शरीर को हवाई जहाज से ही भेजा जाएगा.

खूबचंद बघेल जी के कार्य छत्तीसगढ़ के लिए ही नहीं वरन पूरे देश के लिए एक प्रेरणा स्रोत है जीवन के अंत समय तक वे छत्तीसगढ़ के हित को ध्यान में रखकर कार्य करते रहें और देश के नक्शे में स्वतंत्र स्थान दिलाने में महत्वपूर्ण योगदान रहा.

गाय

रचनाकार- पूजा जोगवंशी, कक्षा चौथी, शासकीय प्राथमिक शाला सिंगारपुर, मुंगेली



गाय हमारी बड़ी प्यारी है,
हरी-हरी घास यह खाती है.

सफेद दूध हमें यह देती है,
गाय सबके मन को भाती है.

तितली

रचनाकार- पूजा जोगवंशी, कक्षा चौथी, शासकीय प्राथमिक शाला सिंगारपुर, मुंगेली

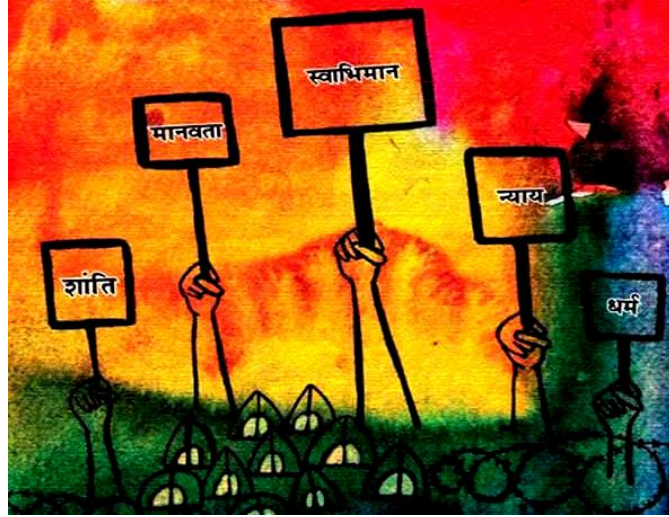


रंग -बिरंगी प्यारी तितली,
सबके मन को भाती तितली.

बैठ फूल पर यह रस लेती,
मन मेरा ललचाती तितली.

तस्वीर बदलनी होगी

रचनाकार- लोकेश्वरी कश्यप



हर तरफ फैला झूठ, फरेब, अत्याचार,
बहू-बेटियों का घर से निकलना हुआ दुश्वार.
चारों ओर बढ़ रहा बेहिसाब दुराचार,
सबको मिलकर अब यह तस्वीर बदलनी होगी.

हर तरफ लूट है, मच रहा हाहाकार,
कहीं युद्ध, कहीं षड्यंत्र का गर्म है बाजार.
अकेले निपट नहीं सकती कोई भी सरकार,
सबको मिलकर यह तस्वीर बदलनी होगी.

हो कही कुछ गलत, और अत्याचार,
एक दूजे पर दोषारोपण करना है बेकार.
बिना डरे हमको करना होगा प्रतिकार,
सबको मिलकर यह तस्वीर बदलनी होगी.

कब तक अपनी जिम्मेदारी से बचने ढूँढ़ेंगे राह,
सच्चाई को अब दिल से करें स्वीकार.
अपने लिए स्वयं ही बनना होगा हमें तारणहार,
सबको मिलकर यह तस्वीर बदलनी होगी.

षडयंत्रों की विभीषिका में जल रहा संसार,
प्रकृति कब तक झेले मानव रूपी दानव के अत्याचार.
इसलिये पड़ रही अब प्रकृति की भी मार,
सबको मिलकर यह तस्वीर बदलनी होगी.

बंद करो यह युद्ध, छल, पाप, दुराचार,
शांति, प्रेम, समृद्धि का करो मिलकर सम्मान.
बनाये इसे ही हम अपने जीवन का सार,
सबको बाँटे प्यार तब होगा जीवन का उद्धार.

बढ़ता फैशन, घटते संस्कार

रचनाकार- पिकी सिंघल



परिवर्तन जीवन का नियम है. 10 साल पहले जैसे हम थे वैसे अब नहीं हैं और 10 साल बाद भी हम वैसे नहीं रहेंगे जैसे हम आज हैं. कहने का अर्थ यह है कि समय के साथ-साथ हमारे विचार, खानपान, शिक्षा, बोलचाल, रहन-सहन एवं पहनने ओढ़ने के तरीकों में बदलाव आता है. समय के अनुसार चलने में समझदारी मानी जाती है. समय के अनुसार स्वयं को न बदलने वाले लोग अक्सर शिकायती प्रवृत्ति के बन जाते हैं और दुखी रहने लगते हैं. चूँकि वे समय के अनुसार अपने आप को नहीं ढाल सके इस बात की उन्हें परेशानी रहती है, इसी परेशानी के चलते वे किसी अन्य को भी बदलते देखना स्वीकार नहीं कर पाते, जिसके कारण उनके विचारों में मतभेद होता है और धीरे-धीरे वह मतभेद मनभेद में परिवर्तित होने लगता है.

बात बदलते समय के अनुसार स्वयं को बदलने तक ही है तो उचित है, किंतु वर्तमान पीढ़ी बदलाव की आड़ में अपनी मनमानी करने पर आमादा दिखाई देती है, जो स्वीकार्य नहीं है. क्योंकि उनकी इस प्रवृत्ति से हमारी संस्कृति और सभ्यता प्रभावित होती है.

फैशन से हमारा तात्पर्य बदलाव से होना चाहिए. किंतु युवा पीढ़ी फैशन के अर्थ को दूसरी दिशा में ले जाकर सोचती है. उनके अनुसार फैशन के नाम पर कुछ भी पहनना ही फैशन है. यह बात सही है कि अपने मन मुताबिक कपड़े पहनना, घूमना-फिरना, खाना-पीना, मौलिक अधिकारों में से एक है किंतु, फैशन के नाम पर कुछ भी पहनकर अपने को आधुनिक दिखाना एक सीमा तक ही सही माना जा सकता है.

निसंदेह प्रत्येक पीढ़ी कुछ बदलावों के साथ आगे आती है, यह एक विकासशील समाज की पहचान भी है. पर फैशन की इस अंधाधुंध दौड़ में आज की युवा पीढ़ी पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति को अपनाने में लगी है. अगर यह कहा जाए कि युवा पीढ़ी भौतिकवादी सभ्यता के पीछे उन्मादी हो रही है तो अतिशयोक्ति न होगी. फैशन के नाम पर अंग प्रदर्शन करना एवं इस प्रकार के वस्त्र पहनना जो देखने में अजीब लगें, किसी भी दृष्टि से सही नहीं कहे जा सकते. अब बात यह उठेगी कि वस्त्रों के अजीब लगने का क्या मापदंड है. हो सकता है किसी एक को जो पहनावा अजीब लगता हो, वही पहनावा किसी अन्य के लिए सामान्य हो. हाँ, यह बिल्कुल सही है, ऐसा हो सकता है. परंतु एक आयु के पश्चात प्रत्येक व्यक्ति को इस बात की समझ आ ही जाती है कि जो वस्त्र उसने पहने हैं वे उस पर जंच भी रहे हैं अथवा नहीं, अथवा कहीं उसने कुछ ऐसे वस्त्र तो धारण नहीं कर लिए हैं जो फैशन के नाम पर सिर्फ नग्नता का ही प्रदर्शन कर रहे हैं.

आगे बढ़ने का तात्पर्य यह कदापि नहीं होता कि हम फैशन के नाम पर कुछ भी ऐसा पहनावा धारण करें जो एक सभ्य समाज में पहनने लायक न हो. कुछ लोगों का यह तर्क होगा कि कभी कभी हमारे वस्त्रों में नहीं होती, अपितु उन लोगों की नजरों में होती है जो उन वस्त्रों पर भद्दी टिप्पणी करते हैं. कुछ हद तक यह बात सही है किंतु बात जब हमारे संस्कारों की आती है तो हमें यह सोचना और समझना चाहिए कि अश्लीलता का प्रदर्शन करने वाले कपड़े किसी भी तरह स्टाइलिश नहीं कहे जा सकते. बात यहाँ स्त्री या पुरुष की नहीं है. जिन वस्त्रों को पहनकर असहजता हो वे वस्त्र कदापि पहनावे योग्य नहीं हो सकते. जिन वस्त्रों को धारण करने के पश्चात हमारे मन में संशय और डर की स्थिति बनी रहे उन्हें पहनने की आवश्यकता ही क्यों है. हम जो भी वस्त्र पहनें, सबसे पहले वह स्वयं को उचित एवं आरामदेह लगने चाहिए, उसके पश्चात ही हमें दूसरों की दृष्टि से अपने पहनावे का विश्लेषण करना चाहिए. यहाँ यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि हर चीज के लिए समाज के दूसरे लोगों की सोच पर निर्भर नहीं रह सकते और न ही हमें यह करने की आवश्यकता है, क्योंकि कुछ तो लोग कहेंगे लोगों का काम है कहना, परंतु कुछ चीजें ऐसी होती हैं जिनके लिए जब तक हमारा दिल और दिमाग स्वीकृति न दें हमें उन पर अमल नहीं करना चाहिए. यह सत्य है कि हम जो भी कार्य करते हैं, हमारी अंतरात्मा सबसे पहले हमें बताती है कि ऐसा करना हमारे लिए सही है अथवा नहीं. खुद को सौम्य, सुंदर, आकर्षक एवं सुरक्षित महसूस कराने के लिए ही वस्त्र धारण किये जाते हैं इसमें संदेह नहीं, किंतु यदि हमारे वस्त्र हमें असुरक्षा के घेरे में लाकर खड़ा कर दें, तो हमें अपने पहनावे पर ध्यान देने की आवश्यकता है.

वर्तमान युग में कुछ लोग बढ़ते फैशन के चलते अपने संस्कारों को तिलांजलि देने से भी पीछे नहीं हटते. अपने माता पिता अथवा पुरानी पीढ़ी को दकियानूसी सोच का टैग लगाने वाला यह वर्ग अपनी मनमानी कर कुछ भी पहनने के लिए तैयार रहता है क्योंकि उनके अनुसार तन पर जितने कम वस्त्र होंगे, उतने ही वे अधिक आधुनिक कहलाएंगे. अर्थात् आधुनिक दिखने की उनकी इस चाह में अपने बदन को दूसरों की निगाहों का निशाना बनते देखने में वे तनिक भी असहज महसूस नहीं करते. जब उनके माता-पिता उन्हें समझाते हैं कि तन पर जँचने वाले कपड़े ही पहनने चाहिए तो वे पलटकर उनको जवाब देने से भी नहीं चूकते. कभी-कभी तो स्थिति इतनी खराब हो जाती है कि वे अपने बड़े बुजुर्गों की आयु तक का लिहाज नहीं करते और उनकी हर बात काटना शुरू कर देते हैं. क्योंकि वे हर कीमत पर अपनी इच्छाएँ पूरी करना चाहते हैं बिना यह सोचे कि उनके बड़े अपने अनुभव के आधार पर ही उन्हें समझा रहे हैं, उनका मार्गदर्शन कर रहे हैं.

बदलते फैशन के साथ-साथ सोच भी बदलने लगती है, चीजों और रिश्तों के प्रति लोगों का नजरिया भी बदलने लगता है. यह बदलाव अगर अच्छे के लिए हो, अपनों को करीब लाने या उनके करीब जाने के लिए हो, सुधार लाने के लिए हो तो कोई परेशानी नहीं, किंतु, यदि यह बदलाव अपनों से अपनों को दूर करने लगे, संबंधों में खटास पैदा करने लगे और मनो में दूरियाँ उत्पन्न करने लगे तो इस विषय पर सोचने की अत्यंत आवश्यकता है.

फैशन और संस्कारों के संदर्भ में तो इस बात को अनदेखा नहीं किया जा सकता कि बढ़ते फैशन के अनुसार खुद को चलाने के लिए लोग गलत आदतों का शिकार भी होते देखे गए हैं. अपनी पहुँच के बाहर, बाजार में बिकने वाली चीजों के प्रति आकर्षण पैदा होना स्वाभाविक है, किंतु यदि जेब में इतने पैसे न हों कि अपने मन मुताबिक चीजों को क्रय किया जा सके तो असंतोष उत्पन्न होता है, मानसिक उथल-पुथल होती है और इस उथल-पुथल में गलत एवं अनैतिक कार्य करने की सोच भी विकसित होती है.

आजकल एक नई बात और चलन में देखी जा रही है कि पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति के साथ साथ हमारे युवा और प्रत्येक आयु वर्ग के लोग फिल्मी हस्तियों को अपना आदर्श मानते हैं और उनके खान-पान, रहन-सहन, आदतों और पहनावे को ज्यों का त्यों अपनाना फैशन समझते हैं. फिल्मी जगत और सेलिब्रिटीज के ग्लैमर की चकाचौंध में अंधे होकर वे यह भूल जाते हैं कि पर्दे पर दिखाई जाने वाली फिल्मों का वास्तविकता से बहुत ज्यादा लेना देना नहीं होता है. रियल और

रील लाइफ में आकाश पाताल का अंतर होता है. फिल्मी कलाकारों का अंधानुकरण करना मूर्खता ही कहलाएगा. बिना यह जाने समझे कि दूसरों की नकल करने का क्या परिणाम होगा, हमें किसी के पीछे नहीं भागना चाहिए, उनकी नकल नहीं करनी चाहिए . आप जैसे हैं वैसे ही रहें क्योंकि आप की मौलिकता एवम स्वाभाविकता ही आप की असली पहचान होती है और उसे गंवाने का अर्थ यह है कि हम अपने आप से ही दूर होते जा रहे हैं.

अपने संस्कारों से दूरी बनाना भला कहाँ की समझदारी है. फैशन के नाम पर यदि हमें अपने आप और अपनों से दूरी बनानी पड़े तो इससे दुखद और कुछ नहीं हो सकता. अक्सर देखने को मिलता है कि फैशन एक छोटे अंतराल के बाद बदल जाता है. पुरानी चीजों का स्थान एक अवधि के बाद नई चीजें लेने लगती हैं. फैशन के नाम पर यदि हम भी इसी प्रकार अपने को थोड़े-थोड़े अंतराल के बाद बदलते रहे ,तो वह दिन दूर नहीं जब हम स्वयं ही यह भूल जाएँगे कि वस्तुतः हम हैं कौन, हमारा असली अस्तित्व क्या है.

यहाँ मैं एक बात स्पष्ट कर देना चाहती हूँ कि फैशन करना गलत नहीं है .समय के अनुसार चलना ही समझदारी कहलाती है और जो व्यक्ति समय के अनुसार नहीं चलता वह पिछड़ जाता है, यह भी सत्य है.परंतु, फैशन के नाम पर हमें क्या खरीदना है क्या नहीं ,क्या अपनाना है क्या नहीं ,इसकी समझ भी बहुत मायने रखती है. दूसरों के महलों को देखकर अपनी झोंपड़ी में आग लगाना सही नहीं है. समाज में विभिन्न वर्गों के लोग रहते हैं, सभी का आर्थिक स्तर एक जैसा नहीं हो सकता. इसलिए हमें सदैव उतने ही पैर पसारने चाहिए जितनी हमारी चादर हो.

निष्कर्ष यह है कि हमें अपनी इच्छाओं पर नियंत्रण करना भी आना चाहिए. अपने मस्तिष्क में एक बात हमें बिठा लेनी चाहिए कि बाहरी सुंदरता कभी भी आंतरिक सुंदरता की बराबरी नहीं कर सकती. फैशन अपनाकर निसंदेह आप स्वयं को बाहरी तरीके से बहुत सुंदर बना सकते हैं. किंतु यदि आंतरिक सुंदरता का अभाव है तो बहुत जल्द वह बाहरी सुंदरता भी आस पास के लोगों को अखरने लगती है. अपने रीति-रिवाजों, परंपराओं, नैतिक मूल्यों एवं संस्कारों को महत्व देते हुए ही हमें समय के अनुसार आगे बढ़ना चाहिए. ये संस्कार तो हमारी धरोहर होते हैं, हमारी पहचान होते हैं, हमारी शान होते हैं. खुद को आधुनिक दिखाने की चाह में हम यह नहीं भूल सकते कि हमारी संस्कृति अत्यधिक समृद्ध एवं पुरातन है. अपनी सांस्कृतिक विरासत को हमें अपने साथ लेकर चलना होगा. साथ ही साथ आगे आने वाली अपनी पीढ़ियों को भी इस विरासत को सौंपना होगा,

उन्हें इसका सांस्कृतिक महत्व समझाना होगा ताकि वे भी इसे अमूल्य पूंजी समझकर सदैव संजो कर रखें और समय आने पर अगली पीढ़ी को प्रेषित करें.

भारत की संस्कृति सादा जीवन उच्च विचार वाली रही है. बाह्य आडंबर, चकाचौंध, ढोंग और दिखावे से दूर हमारी संस्कृति की विश्व में विशिष्ट पहचान है, इस बात से कोई इनकार नहीं कर सकता. अपनी संस्कृति को हमें हीरे की तरह तराशना होगा जिस प्रकार हमारे पूर्वजों ने इसे तराशकर समृद्ध बनाया और सुरक्षित हम तक पहुँचाया.

संस्कारों को भूलकर कभी, किसी प्रकार के फैशन की वकालत नहीं की जा सकती .संस्कारों ने हमें सदियों से बाँधकर रखा है. रोज बदलते फैशन के वशीभूत होकर हमें अपने संस्कारों को कदापि नहीं भूलना चाहिए और अपनी संस्कृति और सभ्यता का मान-सम्मान बनाए रखना चाहिए.

संगीत

रचनाकार- लोकेश्वरी कश्यप



पक्षियों के कलरव में है संगीत,
मोहन के मुरली में है संगीत.
निर्झर के झर-झर में है संगीत,
प्रकृति के कण-कण में है संगीत.

कटु- मधुर वाणी में है संगीत,
हवा के झोंकों में है संगीत.
अग्नि की चटक में है संगीत,
प्रकृति के कण-कण में है संगीत.

जल के कल-कल में है संगीत,
बारिश की बूंदों में है संगीत.
सागर की लहरों में है संगीत,
प्रकृति के कण-कण में है संगीत.

पायल की छन-छन में है संगीत,
चूड़ी की खन-खन में है संगीत.
दिल की हर धड़कन में है संगीत,
प्रकृति के कण-कण में है संगीत.

बच्चों की किलकारी में है संगीत,
हाथों की बजती हुई ताली में है संगीत.
भूखे की बजती थाली में है संगीत,
प्रकृति के कण-कण में है संगीत.

पत्तों की सरसराहट में है संगीत,
भौरों की गुनगुनाहट में है संगीत.
अपनों की आहट में है संगीत,
प्रकृति के कण-कण में है संगीत.

मां की प्यारी लोरी में है संगीत,
पिता की थपकी में है संगीत.
दादी-नानी के गीतों में है संगीत,
प्रकृति के कण-कण में है संगीत.

गायों के रंभाने में है संगीत,
शेर की दहाड़ में है संगीत.
जंगल के कोने-कोने में है संगीत,
प्रकृति के कण-कण में है संगीत.

हंसी ठिठोली में है संगीत,
रुदन और विलाप में है संगीत.
मातम और उत्सव में है संगीत,
प्रकृति के कण-कण में है संगीत.

केवल वाद्य यंत्रों में ही नहीं है संगीत,
ध्यान से सुनो तो सही, कहाँ नहीं है संगीत.
विरह में है, मिलन में है संगीत,
शांति में, हर ध्वनि में है संगीत.
प्रकृति के कण-कण में है संगीत.

तोता राजा

रचनाकार- अंशिका कश्यप, कक्षा 7वीं, शासकीय माध्यमिक शाला सूरजपुराकला,
जिला -कबीरधाम

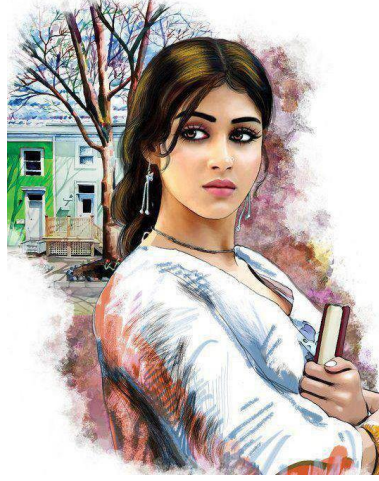


नन्हा सा तोता राजा,
मिर्च खाता, टें -टें करता.
लाल होती इसकी चोंच,
हरे-हरे पंख फैलाता।

अपनी मनमानी करता,
पानी पीता, दाना खाता.
पंखों को फड़फड़ाता,
नील गगन में उड़ जाता.

मेरा अस्तित्व

रचनाकार- लोकेश्वरी कश्यप



मैं नारी हूँ, नारीत्व मेरा अस्तित्व है,
मैं मां हूँ, ममत्व ही मेरा अस्तित्व है.
मैं बेटी हूँ, स्वाभिमान मेरा अस्तित्व है,
पर इनसे परे भी मेरा स्वतंत्र अस्तित्व है.

मैं बहन हूँ, सौहाद्र मेरा अस्तित्व है,
मैं पत्नी हूँ, सहधर्मिता मेरा अस्तित्व है.
मैं बहु हूँ, मर्यादा मेरा अस्तित्व है,
पर इनसे परे भी मेरा स्वतंत्र अस्तित्व है.

मैं शिक्षिका हूँ, शिक्षण मेरा अस्तित्व है,
मैं वैद्य हूँ, सेवा मेरा अस्तित्व है.
मैं लेखिका हूँ, रचनात्मकता मेरा अस्तित्व है.
पर इनसे परे भी मेरा स्वतंत्र अस्तित्व है.

मैं भक्त हूँ, भक्ति मेरा अस्तित्व है,
मैं शक्ति हूँ, सामर्थ्य मेरा अस्तित्व है.
मैं लक्ष्मी हूँ, ऐश्वर्य मेरा अस्तित्व है,
पर इनसे परे भी मेरा स्वतंत्र अस्तित्व है.

मैं एकता हूँ, बंधुत्व मेरा अस्तित्व है,
मैं मुक्ति हूँ, विरक्ति मेरा अस्तित्व है.
मैं युक्ति हूँ, बुद्धि मेरा अस्तित्व है,
पर इनसे परे भी मेरा स्वतंत्र अस्तित्व है.

मैं नेत्र हूँ, दर्शन मेरा अस्तित्व है,
मैं ध्वनि हूँ, एकाग्रता मेरा अस्तित्व है.
मैं सफलता हूँ, प्रयास मेरा अस्तित्व है,
पर इनसे परे भी मेरा स्वतंत्र अस्तित्व है.

मैं जो भी हूँ, मेरा स्वतंत्र अस्तित्व है,
मेरा अपना सुख है, अपना दुख है.
मेरे आपने सपने है, स्वतंत्र भावनाएं हैं,
मत भूलो मुझसे भी तेरा अस्तित्व है.

चैन से मुझे भी जीने दो ये समाज,
मैं भी उस ईश्वर की स्वतंत्र रचना हूँ,
मेरा भी अपना स्वतंत्र अस्तित्व है.

मातृदेवो भव, पितृदेवो भव, आचार्यदेवो भव

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी



भारत की मिट्टी में ही संस्कार है, भारत में जिस प्रकार के संस्कार, आस्था, परोपकार और जैसी भावना है, ऐसी विश्व में कहीं और दिखाई नहीं देती. भारत की मिट्टी में ही ऐसे भाव होते हैं कि यहाँ रहने वाला हर व्यक्ति स्वभाविक ही ऐसे भावनात्मक गुणों से ओतप्रोत हो जाता है. यूँ तो संस्कारों की माला में बहुत मणियाँ, मोती हैं पर हम आज एक मणि, माता-पिता के सम्मान पर चर्चा करेंगे. यह दुनिया में सबसे अनमोल रिश्ता है जिससे कोई भी अछूता नहीं है. एक ऐसा रिश्ता जो अपना है, जिसमें कोई धोखा नहीं है, जिसमें स्वार्थ का कोई स्थान नहीं है, जिसमें परायेपन की तो परछाई तक नहीं है, और वो रिश्ता है-माता-पिता का अपनी संतान से. यह एक ऐसा रिश्ता है जो दिल से जुड़ा होता है.

तैत्तिरीय उपनिषद् में कहा गया है- 'मातृदेवो भव, पितृदेवो भव, आचार्यदेवो भव. अर्थात् माता-पिता और आचार्य को देवता मानो. ये तीनों प्रत्यक्ष ब्रह्मा, विष्णु और महेश हैं. इन्हें सदैव संतुष्ट और प्रसन्न रखना हमारा धर्म है. गरुड़ पुराण में कहा गया है कि माता-पिता के समान श्रेष्ठ अन्य कोई देवता नहीं है. अतः सदा सभी प्रकार से हमें अपने माता-पिता की सेवा करनी चाहिए.

भारत में इस रिश्ते का बहुत मान सम्मान है. अगर हम पहले की बात करें तो सबसे सटीक उदाहरण हम श्रवणकुमार का दे सकते हैं परंतु यह समय का चक्र है जो घूमता रहता है समय कैसे बदल जाता है पता नहीं चलता. आज हम पुराने समय के श्रवण कुमार से अच्छा तो फिलहाल कोई उदाहरण

बता सकते. आज के बदलते परिवेश में श्रवण कुमार तो बमुश्किल मिलेंगे. आज समय के हिसाब से पुत्र में भी काफी बदलाव आया है. अब पहले वाली बात नहीं रह गयी.

बच्चे के लिये माता-पिता का होना बहुत महत्वपूर्ण होता है, जितनी मेहनत एक पौधे को पालने में माली करता है, उससे कहीं अधिक जिम्मेदारी बच्चों को पालने में माता-पिता को उठानी पड़ती है. वह माली जो पौधे को लकड़ी का सहारा देकर, पानी, खाद आदि से सिंचित कर पौधे को वृक्ष बनाता है; उसी प्रकार माता-पिता भी नन्हे बच्चे को अनेक कष्ट झेलते हुए युवक बनाते हैं. माता-पिता के अथक प्रयास के बदौलत ही एक बच्चा अपनी सफलता के मार्ग पर चलता है. इसीलिये माता-पिता को बच्चों का प्रारंभिक विद्यालय कहते हैं. क्योंकि हर बच्चा पैदा होते ही स्कूल नहीं जाता, उसे घर पर पहली सीख माँ और पिता ही देते हैं. मनुष्य को पहला निस्वार्थ और सच्चा प्यार सिर्फ अपने माँ-बाप से मिलता है.

माता-पिता ने हमें अच्छी जिंदगी देने के लिए कितनी कठिनाइयों का सामना किया इसका अंदाजा भी नहीं लगाया जा सकता. इसीलिए माता-पिता से हमेशा प्यार करें उनकी सेवा करें, माता-पिता की सेवा करना मतलब ईश्वर को राज़ी करना. हालांकि इस बदलते परिवेश में भी हम सभी एक बात महसूस करते हैं कि बेटे की अपेक्षा बेटी की माता-पिता के प्रति भाव, लगाव, आस्था, अधिक होती है और स्वाभाविक रूप से माता-पिता के भी बेटी के प्रति भाव अपेक्षाकृत अधिक होते हैं फिर भी बेटा बेटी दोनों माता-पिता की आँखों के दो तारे होते हैं और दोनों आँखों को समान भाव देना मनुष्य की प्राकृतिक प्रवृत्ति है.

अतः हर बेटे बेटी को चाहिए कि अपने माता-पिता का भरपूर सम्मान करें. हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि, हमने माता-पिता की ऊँगली थाम के चलना सिखा और उनकी मेहनत से पले. आज हम जो कुछ भी हैं हमारे माता-पिता की वजह से हैं. माता-पिता के त्याग और बलिदान का कर्ज हम अपनी जान देकर भी नहीं चुका सकते. इस दुनिया में माँ की ममता का कोई मोल नहीं है और पिता के प्यार का कोई तोड़ नहीं है. हम जब बड़े हो गए हैं तो हमारा कर्तव्य बनता है कि हम अपने माता-पिता की सेवा करें, उनकी सलाह लें, उनका सम्मान करें और अपने माता-पिता का कभी दिल न दुखाएँ.

अगर आपके माता-पिता आपसे खुश हैं तो समझो ईश्वर आपसे खुश हैं. जिस घर में माता-पिता की इज्जत नहीं होती है उस घर में बरकत नहीं होती है. माता-पिता की दुआ आपको मिल गयी तो

समझो कि आपकी जिंदगी सँवर गयी, माता-पिता को आखिरी साँस तक खुश रखे और उन्हें हर वो सुख दे जो वो अपनी जिन्दगी में न पा सके, उनके हर एक सपने को पूरा करे.

माता-पिता में ही ईश्वर समाया है, गुरु समाया है, उनकी सेवा करने से सौ गुना अधिक पुण्य फल भी प्राप्त होता है.

कविता

रचनाकार- लोकेश्वरी कश्यप



तारों भरी रात है कविता,
शब्दों भरी जज्बात है कविता.
नदियों सी लहरती है कविता,
सबको लुभाती हैं कविता.

शब्दों की शोभा हैं कविता,
मुखड़े की आभा हैं कविता.
माँ की ममता हैं कविता,
नारी का सौंदर्य हैं कविता.

कवियों की दुलारी है कविता,
जग में सबसे न्यारी है कविता.
सबको प्यारी होती है कविता,
बच्चों की मुस्कान है कविता.

फूलों की खुशबु है कविता,
रंगों की भरमार है कविता.
मन में उठती हिलोर है कविता,
मन से मन की डोर है कविता.

सर्दियों की धूप है कविता,
अमराई की छाँव है कविता.
मिश्री की मिठास है कविता,
अरमानों भरी उड़ान है कविता.

भौरों की गुनगुनाहट है कविता,
चिड़ियों की चहचहाहट है कविता.
झरने का ठंडा पानी है कविता,
रचनाओं की रानी है कविता.

गीतों भरी कहानी है कविता,
चढ़ती हुई जवानी है कविता.
गागर में सागर समाती है कविता,
भावों से भर-भर जाती है कविता.

इंसान के रंग

रचनाकार- अंशिका कश्यप, कक्षा 7वीं, शासकीय माध्यमिक शाला सूरजपुराकला,
जिला -कबीरधाम



बहुत पहले की बात है. तब सभी फूलों का रंग एक ही था. वे सफेद रंग के होते थे. उनकी पहचान उनकी खुशबू और पत्तों से होती थी. लेकिन तब इंसान अलग-अलग रंग के होते थे. कोई काला, कोई सफेद, कोई गुलाबी, कोई लाल, कोई हरा, कोई नीला, कोई पीला, कोई बैंगनी, कोई नारंगी. जैसे उनके रंग होते थे, उसके अनुसार ही वे अपने नाम के साथ सरनेम लगाते थे. जैसे कोई लाल रंग का होता, वह अपने नाम के साथ लालवानी लगाता था. जो नीले रंग का होता, वह अपने नाम के साथ लिलवानी लगाता. लोगों के नाम ऐसे होते थे जैसे जेठा लाल, मंसूर हरियर, वेद लाल, प्रभा नीलवानी, हरीश पिलवानी. जिसे जो रंग पसंद होता था, वह उसी रंग के लड़के या लड़की से शादी करता था. कई बार ऐसा भी होता, कि वे जिस रंग का बच्चा चाहते थे उसी रंग का होता था. कभी-कभी उनके बच्चे उस रंग के नहीं हो पाते थे बल्कि किसी दूसरे रंग के हो जाते थे तो वे निराश हो जाते थे. लोगों के बीच रंगों को लेकर झगड़े होने लगे. सभी को अपना ही रंग पसंद आता था, किसी दूसरे का रंग नहीं पसंद आता था. ब्रह्मा जी ने सोचा, मेरी बनाई सुंदर दुनिया में इतने रंग-बिरंगे इंसान हैं. पर वे सभी लड़ते झगड़ते रहते हैं और खुश नहीं रह पा रहे हैं. मैंने सभी फूलों को एक ही रंग का बनाया है. केवल फूलों की खुशबू को अलग रखा है फिर भी फूल सभी तरफ खुशबू फैलाते हैं और खुश रहते हैं. रंग बिरंगे इंसानों से अच्छे तो यह बेरंग फूल हैं. क्यों न मैं इन फूलों को उपहारस्वरूप इंसानों के रंग दे दूँ. और इंसानों से इनके सारे रंग छीन लूँ. इन्हें इतने सुंदर रंग पाने का

कोई अधिकार नहीं है. ब्रह्मा जी ने यह सोच कर सारे इंसानों को श्राप दिया कि जाओ अब से मैं तुम्हारे खूबसूरत रंगों को सभी फूलों को देता हूँ.

तब से इंसानों के सारे रंग फूलों को मिल गए और इंसानों का रंग उनके स्वभाव में दिखाई देने लगा. पर इंसान ने अभी भी सबक नहीं सीखा है. वे अब भी काले, गोरे रंग को लेकर एक दूसरे को नीचा दिखाने की कोशिश में लगे हुए हैं. अबकी बार पता नहीं ब्रह्मा जी इंसान से क्या छीन लें.

छुक छुक रेलगाड़ी

रचनाकार- पिकी सिंघल



छुक-छुक, छुक-छुक रेलगाड़ी
धुआं उड़ाती रेलगाड़ी
नानी घर पहुंचाती गाड़ी
सरपट दौड़े रेलगाड़ी

चुन्नू बैठा मुन्नू बैठा
भाती सबको रेलगाड़ी
तनिक न इसको सुस्ती भाए
हवा संग बतियाए रेलगाड़ी

लाल झंडी का समझ इशारा
रुकती फाटक पर रेलगाड़ी
हरी झंडी देखकर फिर से
इतरा कर चलती रेलगाड़ी

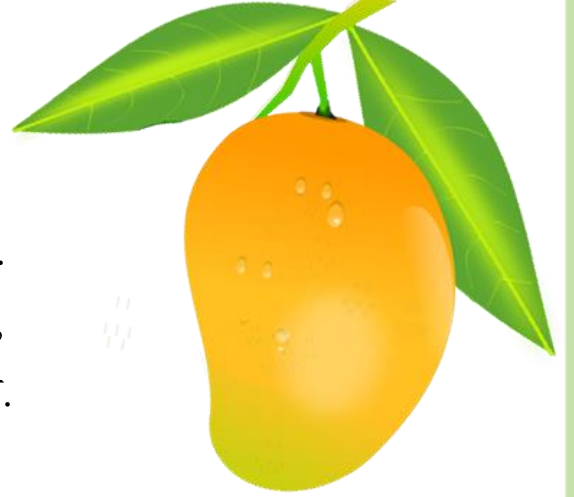
पेड़ नदी और पहाड़ों की दौड़ में
सबको हराती रेलगाड़ी
सीट के ऊपर सीट दिलाए
हर्षाए मन को रेलगाड़ी

तुम भी आना हम भी आएंगे
खूब मन को भाए रेलगाड़ी
टिकट कटाना जल्दी-जल्दी
कहीं छूट न जाए रेलगाड़ी

रसीले आम

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू

पीले-पीले रसीले आम,
सबके मन को भाता आम.
बिन खाए कोई रह न पाए,
सबका जी ललचाता आम.



चौसा, दशहरी, लंगड़ा आम,
तरह-तरह के इनके नाम.
कुश, परी, गीताली बिटिया,
सब मिले चूसे मीठे आम.

कच्चा आम-पक्का आम,
नहीं लिखा है इसमें नाम.
जो खायेगा, वो गायेगा,
फलों का राजा कहलाता आम.

विनम्रता सफलता की कुंजी

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी



भारतभूमि संस्कारों की खान है, जिसमें अनेक लाजवाब, बुद्धिमान मोती भरे हैं, जो विश्व प्रसिद्ध हैं। हर क्षेत्र में, भारत में हमें अच्छे संस्कारों से परिपूर्ण गुणवान व्यक्तित्व मिलेंगे। भारत की मिट्टी में ही अच्छे संस्कारों की महक समाई हुई है।

किसी ने ठीक ही कहा है कि श्रेष्ठता जन्म से नहीं आती बल्कि गुणों के आधार पर निर्मित होती है। किसी महान व्यक्ति ने यह भी जोड़ा कि दूध, दही, छाछ, मक्खन, सब एक ही कुल के होते हैं, पर सबके गुण और मूल्य अलग- अलग होते हैं।

श्रेष्ठता संस्कारों की कड़ी के साथ जुड़ती है, जो भारत की मिट्टी में समाई हुई है। भारत वैश्विक स्तर पर संस्कारों, गुणों और बौद्धिक क्षमता के लिए प्रसिद्ध है। आज के विकसित देशों की बौद्धिक उन्नति में भारतीय मूल के लोगों का बड़ा योगदान है। आज विकसित देशों में भारतीय मूल के डॉक्टर, इंजीनियर, विशेषज्ञों की संख्या काफी अधिक है। अमेरिकी अंतरिक्ष दल के साथ अंतरिक्ष तक पहुँचने वाली महिला भी भारतीय मूल की ही है।

अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन के प्रशासन में उपराष्ट्रपति भी मूल रूप से भारतीय ही हैं। भारतीयों में परिश्रम, पारिवारिक सहयोग, शैक्षणिक स्तर, बौद्धिक क्षमता, काफी विस्तृत है, जो भारतीयों में गुणों का निर्माण या काफी तीव्रता से पैदा करता है। भारतीय गुणों से ओतप्रोत व्यक्तित्व विश्व में सफलता के झंडे गाड़ता है।

एक भारतीय में संस्कारी गुण व बौद्धिक क्षमता ऐसी समाई रहती है कि यदि वह दिन-रात मेहनत कर अपनी मंजिल पर पहुँचने की ठान लेता है, तो सफलता की सीढ़ियों पर आसानी से पहुँच जाता है. किसी ने कहा है कि भारतीयों जैसे मेहनतकश इंसान विश्व में कहीं नहीं है, और विनम्रता का गुण सबसे अधिक भारतीयों में ही पाया जाता है. श्रेष्ठता पाने के लिए जो गुण होते हैं उसमें विनम्रता का महत्वपूर्ण स्थान है विनम्रता से असामान्य और असंभव कार्य भी संभव हो जाते हैं.

विनम्रता ही सफलता की कुंजी है. गुणों में बुद्धिमता का भी श्रेष्ठ स्थान है, जो भारतीय में कूट-कूट कर भरी है. इसका उदाहरण हम अनेक कोविड वैक्सीनों के भारत में निर्माण के रूप में देख रहे हैं.

आज भारत आत्मनिर्भरता की ओर तेजी से बढ़ रहा है, जिसका कारण भारतीयों में आधुनिक तकनीकी गुणों का तेजी से विकास होना है. एक सर्वे के अनुसार भारत सबसे अधिक मेहनती देश है और अधिकतम भारतीय अपनी मेहनत से खुश हैं. स्वाभाविक रूप से मेहनतकश इंसान में भरपूर गुण होते हैं. भारत में रहकर भारत की मिट्टी से ओतप्रोत इंसान में गुणों की अधिकतम मात्रा होना स्वाभाविक है. भारत में ही नहीं वैश्विक स्तर पर भारतीय नागरिक व्यवसाय, व्यापारिक, अन्य सेवा, प्रदान करने वाले व्यक्ति का महत्व अपेक्षाकृत अधिक होगा. अगर योजनाबद्ध रणनीति बनाकर कार्य किया जाए तो स्वरोजगार, सरकारी नौकरी और विदेशों में सेवाओं के अनेक अवसर सबसे पहले भारतीय नागरिकों को ही प्राप्त होंगे क्योंकि एक भारतीय में अपेक्षाकृत योग्यता, गुण, बुद्धिमता, कुशलता अधिक है.

दिन नवतपा के

रचनाकार- टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला"



रवि दहकते अंगारे लाए.
दिन नवतपा के आए.

दहक उठी धरती रानी,
नीलगगन थर्राए.
दिन नवतपा के आए.

गर्म हवा के थपेड़ों से,
पेड़-पौधे मुरझाए.
दिन नवतपा के आए.

कुआँ-बावली, नदी-ताल,
जल बिन न सुहाए.
दिन नवतपा के आए.

पसीने से भीगे नर तन,
पशु-पक्षी चिल्लाए.
दिन नवतपा के आए.

आओ एक और एक ग्यारह बने

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी



एक और एक ग्यारह



भारत में बड़े बुजुर्गों, बुद्धिजीवियों, निपुण विद्वानों, कुशल मनीषियों के विचारों का अकूत खज़ाना है. इनकी वैचारिक शक्ति का प्रयोग और क्रियान्वयन भी संस्कारों की जननी भारतमाता के गोद में किया जाता है.वर्तमान में हमारे भारतवर्ष में एक विषय जोरों से चर्चा में है, उस पर बहुत गंभीरता से हर देशवासी को सोचना होगा. यह विषय है, 135 करोड़ जनसंख्या के कार्यबल, बुद्धि कौशल और शुभ संकल्प का संपूर्ण क्षमता के साथ दोहन करना.

यह विषय अगर हर भारतीय नागरिक जिसमें राजनैतिक, शासन-प्रशासन, पक्ष विपक्ष, सबकी समझ में आ गया और उसका क्रियान्वयन बड़े पैमाने पर करना शुरू हुआ तो दुनिया की कोई ताकत भारत को विश्व का सर्वश्रेष्ठ देश बनाने से नहीं रोक सकती.

23 मई 2022 को प्रधानमंत्री ने जापान के टोक्यो में क्वाड सम्मेलन में भाग लेने के दौरान भारतीय समुदाय से बातचीत करते हुए कहा कि आज हिन्दुस्तान के 130 करोड़ लोगों की आँखों में देख रहा हूँ 130 करोड़ देशवासियों का आत्मविश्वास, 130 करोड़ संकल्प 130 करोड़ सपने और इस 130 करोड़ सपनों को पूर्ण करने का ये विराट सामर्थ्य परिणाम निश्चित लेके रहेगा. हमारे सपनों का

भारत हम देख के रहेंगे. आज का भारत अपनी सभ्यता, अपनी संस्कृति, अपने खोये हुए विश्वास को फिर से हासिल कर रहा है.

अभी जरूरत है जनसंख्या की वर्तमान स्थिति का संज्ञान लेकर उसके कार्यबल, बौद्धिक कुशलता का उपयोग करने के रणनीतिक रोडमैप बनाने की, क्योंकि भारत माता की मिट्टी के गुण इतने प्रभावी हैं कि यहाँ हर नागरिक में किसी न किसी प्रकार की कुशलता, बुद्धिमता का गुण समाया हुआ है! बस, जरूरत है उसे तराशने की, उचित ट्रेनिंग देने की, जिसमें अगर हम सफल हो जाते हैं तो रोजगार माँगने वाला रोजगार सृजनकर्ता बन जाएगा, 135 करोड़ लोगों के हाथों में काम होगा तो हम भारतीय अर्थव्यवस्था को पाँच क्या, 25 ट्रिलियन डॉलर तक की अर्थव्यवस्था बनाने की क्षमता रखते हैं.

हमारा एक राज्य उत्तरप्रदेश, दुनिया की सबसे बड़ी जनसंख्या वाले देशों के पांचवे देश के बराबर है, तो हम विचार करें कि, हमारे संयुक्त भारत में आज 35 राज्य हैं. हमसे बहुत छोटी जनसंख्या वाले देशों के नागरिकों के हाथ में काम है, और कुशलता है तथा उनका जीवन स्तर उच्चतर है, तो फिर भारत में तो अपेक्षाकृत अधिक बुद्धि कुशलता, कार्य करने की क्षमता और काबिलियत है! बस जरूरत है उसे तराशने की जो काम राजनीतिक बुद्धि और वैचारिक एकता के मंत्र को अपनाने पर क्रियान्वित होगा.

हालांकि अलग-अलग मंत्रालयों के तहत अनेक कार्य योजनाएँ चलाई जा रही है. परंतु मेरा एक सुझाव है जिस तरह से सेना के तीनों अंगों के लिए एक पीडीएस पद का सृजन कर नियुक्ति की गई है उसी प्रकार 135 करोड़ जनसंख्या के लिए अलग-अलग मंत्रालयों के तहत कार्यबल बुद्धि कुशलता, क्षमता का उपयोग करने के लिए बनाए गए अपने-अपने विभाग के रणनीतिक रोडमैप को एक विशेष मंत्रालय का गठन कर दिया जाए तो इस कार्य में तीव्रता से वृद्धि होगी और हमारी 135 करोड़ जनसंख्या की कार्यक्षमता और उनके कौशल क्षमता के दोहन का अभूतपूर्व विकास होगा. हम शीघ्र ही लक्ष्यों को प्राप्त करेंगे और आत्मनिर्भर बहुत तेजी से बनेंगे.

अगर 135 करोड़ जनसंख्या को उनके कार्यबल और कुशलता का आभास करा कर उनको निखारा जाएगा तो हर हाथ में रोजगार होगा तो जातीयता, आरक्षण, राजनीति, नकारात्मकता की ओर किसी का ध्यान नहीं जाएगा, हालांकि अगर हम इस मुद्दे को नकारात्मकता से संज्ञान में लेकर

विश्लेषण करें तो नकारात्मक परिणाम निकलेगा इसीलिए हमें इस विषय को सकारात्मकता से संज्ञान में लेने की ज़रूरत है.

कुछ समय पहले केंद्रीय गृह मंत्री ने एक कार्यक्रम के संबोधन में 135 करोड़ जनसंख्या के बारे में कहा कि आज़ादी का अमृत महोत्सव भारत के उज्ज्वल भविष्य और विश्व में भारत को उन्नत स्थान दिलाने के लिए मन में आशा जगाने, संकल्प लेने और अपने कार्यों से इन आशाओं को पूरा करने का है. उन्होंने कहा कि भारत 130 करोड़ की आबादी वाला देश है और अगर सभी 130 करोड़ भारतीय आज़ादी के अमृत महोत्सव में एक-एक संकल्प लें तो एक बहुत बड़ी शक्ति बन जाएगी.

अगर हम सब भारतीय एक ही दिशा में एक एक कदम चलते हैं, तो हम सब एक साथ 130 करोड़ कदम आगे बढ़ते हैं. ये हम सबकी ज़िम्मेदारी है कि हम आज़ादी के अमृत महोत्सव को प्रेरणा का एक स्रोत व चेतना जागृत करने का माध्यम बनाकर भारत के विकास का राजमार्ग बनाएं.

पूर्णरूपेण डिजिटल बैंक अब हमारे हाथ में है

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी



पूर्णरूपेण डिजिटल बैंक अब हमारे हाथ में है,
बिना किसी इमारत बैंक हमारे साथ में है.
चौबीस घंटे मोबाइल ऐप हमारे साथ में है,
प्रौद्योगिकी का कमाल बटन दबाना हमारे हाथ में है.

मुद्रा का इतिहास बताता है,
इस क्षेत्र में क्रमिक विकास हुआ है.
उसी तरह हमारे लेनदेन के स्वरूप
का भी विकास हुआ है.

वस्तुओं की अदला-बदली से लेकर,
धातुओं तक का विनिमय हुआ है.
फिर सिक्कों से नोटों तक का विकास,
फिर चेक, कार्ड, एटीएम अब डिजिटल हुआ है.

प्रौद्योगिकी से वित्त की दुनिया में तेज़ी से
बहुत बड़ा बदलाव हुआ है.
अब मोबाइल द्वारा भुगतान नें
एटीएम नगद निकासी को पीछे छोड़ दिया है.

खुशखबरी

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"



गर्मी बढ़ने के कारण जंगल के सारे पशु-पक्षी बहुत परेशान थे. दूर-दूर तक पानी का कोई साधन नहीं था. धरती सूखने लगी थी. यदि वे जंगल से बाहर न जाते तो शिकारी उनका शिकार कर लेते. इसलिए सभी बहुत परेशान थे. एक दिन मिन्नी गौरैया को बहुत प्यास लगी थी. वह सीनू तोते से बोला-"सीनू भैया, चलो जंगल से बाहर चलते हैं. मुझे बहुत प्यास लगी है. मेरे मम्मी-पापा ने मुझे अकेले बाहर जाने से मना किया है." फिर भी सीनू तोता और मिन्नी गौरैया जंगल के बाहर जाने लगे.

रास्ते में शिकारी झाड़ियों में छिप कर शिकार की ताक में बैठा था. मौका मिलते ही शिकारी ने मिन्नी गौरिये व सीनू तोते पर हमला कर दिया. दोनों घायल होकर बेहोश हो गए. शिकारी उन्हें पकड़ पाता, इससे पहले ही टिन्नू भालू वहाँ गुर्राता हुआ आ गया. शिकारी जैसे-तैसे भालू से बचकर वहाँ से भाग गया. मिन्नी गौरैया और सीनू तोते को तड़पते देख टिन्नू भालू ने आवाज लगाई- "कोई है..... अरे कोई है....! जल्दी आओ. दौड़ो...दौड़ो....." टिन्नू भालू भी स्वयं भूख-प्यास के कारण कमजोरी महसूस कर रहा था.

मोटू हाथी और बिन्नु जिराफ उसी ओर आ रहे थे.

तभी उन्हें टिन्नू भालू की आवाज सुनाई दी. बिन्नू जिराफ बोला - "अरे ! यह तो टिन्नू की आवाज है. चलो देखते हैं." पास आकर देखा कि मिन्नी गौरैया और सीनू तोता बेहोश पड़े हैं. बिन्नू जिराफ और टिन्नू भालू से मोंटू हाथी ने कहा - "तुम दोनों इन्हें जंगल के अंदर ले जाओ. मैं तुरंत पानी का इन्तजाम करता हूँ." दोनों मिन्नी गौरैया और सीनू तोता को अंदर ले गए. तब तक सारे जानवर वहाँ इकट्ठा हो गए. मिन्नी गौरैया व सीनू तोता के मम्मी-पापा जोर-जोर से रोने लगे- "सीनू बेटा ! मिन्नी बेटा ! उठो न. क्या हुआ है हमारे बच्चों को?" मोंटू हाथी अपनी सूँड में पानी भर कर लाया और मिन्नी गौरैया और सीनू तोते के मुँह में डाला. उन्हें होश आया तो वे "मम्मी... पापा कहते हुए..." अपने-अपने मम्मी-पापा के सीने से लग गए. सीनू तोता और मिन्नी गौरैया ने सबको पूरी घटना बताई.

सभी जानवरों ने मिलकर सोचा कि रोज कोई न कोई जंगल से गायब होता जा रहा है. पानी की तलाश में बाहर जाना ही पड़ता है. रोज किसी न किसी पशु-पक्षी का आखिरी दिन होता है. इस संबंध में राजा शेरसिंह से बात करनी चाहिए." मोंटू हाथी की बात पर सबने हाँ में हाँ मिलायी. सभी राजा शेरसिंह की गुफा के बाहर इकट्ठे हो गये.

राजा शेरसिंह गुफा से बाहर निकले. देखा- "अरे ! क्या बात है ? यहाँ जंगल के सभी सदस्य एक साथ !" टिन्नू भालू और मोंटू हाथी ने पूरी बात राजा को बतायी. मिन्नी गौरैया और सीनू तोता के माता-पिता ने भी रोते-रोते अपनी बात रखी. शेरसिंह ने कहा - " क्या करना चाहिए कि हमें प्यास लगने पर बाहर न जाना पड़े." मिन्नी के मम्मी-पापा बोले - " महाराज ! क्यों न हम जंगल में ही एक छोटा सा तालाब बना लें ताकि हमें बाहर जाना न पड़े." राजा शेरसिंह हँसते हुए बोला - "गौरिये ! तुम दोनों तो ऐसे बोल रहे हो, जैसे तालाब बनाना आसान काम हो."

मोंटू हाथी बोला - "क्यों नहीं बना पाएँगे ? अगर हम सभी थोड़ी-थोड़ी मेहनत रोज करेंगे तो यह काम हो जाएगा."

"मोंटू दादा बिल्कुल सही कह रहे हैं." सबने एक स्वर में कहा. शेरसिंह ने कहा कि ठीक है, अगर तुम सब मिलकर जंगल में तालाब का निर्माण कर लेते हो तो मैं सभी को एक खुशखबरी सुनाऊँगा."

दूसरे दिन से सभी जानवरों ने मिलकर जंगल में गड्ढा खोदना प्रारम्भ कर दिया. आखिरकार एक छोटा सा तालाब बन ही गया. सभी ने खुश होकर एक-दूसरे से कहा- "हमारी मेहनत रंग लाई. चलो... चल कर राजा शेरसिंह को बताते हैं."

सभी राजा शेरसिंह के पास गये. बोले- " हे राजन ! तालाब तैयार हो चुका है. आप चल कर देख सकते हैं." राजा शेरसिंह बोले- "अरे अभी तो सप्ताह भर भी नहीं हुआ है; और तुम सब कहते हो कि तालाब बन भी गया."

भालू बोला- "महाराज ! आप चलकर देखिए तो सही..... ."

राजा शेरसिंह ने जाकर देखा कि सचमुच एक तालाब बन गया था, जिसमें पानी भरा हुआ था. शेरसिंह हैरानी से बोले- " मुझे तो यकीन ही नहीं हो रहा कि यह तालाब तुम सबने बनाया है." गौरैया बोली - "महाराज ! अगर मन में आत्मविश्वास, लगन और मेहनत का भाव हो, तो जमीन क्या, पत्थर से भी पानी निकाला जा सकता है. किसी को छोटा नहीं समझना चाहिए. इस काम में चींटियों ने सबसे ज्यादा हमारी सहायता की है. हम सभी चींटियों के सदा आभारी रहेंगे." नन्हीं चींटियों की आँखों से आँसू बहने लगे. वे कहने लगीं कि यह तो हमारा फर्ज है. मुसीबत में एक दूसरे के काम आना ही चाहिए. हम अपनों की मदद नहीं करेंगे तो कौन करेगा."

शेरसिंह सभी की बातें सुनकर बोले - "मैं यह घोषणा करता हूँ कि आज से जंगल के बाहर कोई नहीं जाएगा; और मैं तुम सबको एक खुशखबरी सुनाने जा रहा हूँ कि इस जंगल के पशु-पक्षियों का मैं कभी शिकार नहीं करूँगा. हम सभी एक साथ एक परिवार की तरह रहेंगे. जो भी शिकारी जंगल के अंदर आएगा, उसका हम सब डटकर सामना करेंगे." सभी ने खुश होकर तालियाँ बजाईं.

मुस्कान

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी



मुस्कान उस कला का नाम है,
भरपूर खुशबू फैलाना उसका काम है.
अपने स्वभाव में ढाल के देखो,
फिर तुम्हारा नाम ही नाम है.

मुस्कान में मिठास की परछाई है,
इस कला में, अंधकारों में भी,
भरपूर खुशहाली छाई है.
स्वभाव की यह सच्ची कमाई है.

मुस्कान में पराए भी अपने होते हैं,
अटके काम पल भर में पूरे होते हैं.
सुखी काया की ये नींव होते हैं,
मानवता का प्रतीक होते हैं .

मुझको भैयाजी माफ़ करना

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी



भारतीय सभ्यता, संस्कृति, मूल्यों मर्यादा और आध्यात्मिकता के जैसी सजगता दुनिया में कहीं नहीं है. हमारी सभ्यता के अनेक मोतियों में से एक क्षमा माँगना है, बड़े बुजुर्गों का कहना है जो क्षमा करता है, पुरानी बातों को भूल जाता है; वही सबसे बड़ा दानी है, क्योंकि क्षमादान जैसा कोई दान नहीं. यह शक्ति है भारतीय सभ्यता की.

क्षमा करने के सुनहरे नियम के साथ-साथ एक पहलू यह भी है कि हमसे अगर गलती हो जाए तो हमें शांत स्वभाव से अपनी गलती को स्वीकार कर लेना चाहिए और माफी माँगनी चाहिए, क्योंकि माफी माँगने से रिश्ते मजबूत ही होंगे, दो लोगों के बीच कभी बैर नहीं होगा. माफ़ करने या माफी माँगने की आदत से यह मालूम पड़ता है कि व्यक्ति तुच्छ भावों के मुकाबले रिश्ते को ज्यादा अहमियत देता है.

क्षमा भाव जिसके भीतर विकसित हो जाता है, वह व्यक्ति समाज में आदरणीय माना जाता है. किसी को उसकी किसी भूल के लिए क्षमा करना और आत्मग्लानि से मुक्ति दिलाना बहुत बड़ा परोपकार है. कितना आसान है किसी से अपनी गलती की माफी माँगना और उससे भी ज्यादा आनंद तब मिलता है, जब वह व्यक्ति हमें माफ़ कर देता है. क्षमा का शस्त्र जिसके पास है, उसका दुष्ट कुछ नहीं बिगाड़ सकते. जिस तरह बिना तिनकों की पृथ्वी पर गिर कर अग्नि खुद ही शांत हो जाती है.

यदि हमसे वाकई गलती हो गई है तो गंभीरता से क्षमा माँगें. स्पष्टीकरण दें, हमारी गलती से वह विचलित है और हमारे कारणों को समझने की स्थिति में नहीं है. उसे पहले शांत कर सामान्य स्थिति में लाएँ. दिल से माँगी गई माफी से स्थिति सामान्य हो जाएगी. यह हमारा बड़प्पन भी होगा कि कोई व्यक्ति हमारे कारण दुखी हुआ, हम अपनी गलती स्वीकार कर उसे सामान्य होने में मदद कर रहे हैं. फिर हुए नुकसान या असुविधा की पूर्ति के लिए तत्काल प्रयास करें. व्यर्थ की दलीलों में समय बर्बाद करने के बजाय तत्काल कदम उठाएँ. इस तरह हम अपनी खामियों के बावजूद सम्मान और भरोसा हासिल करेंगे. अन्यथा भावनाओं की गलत अभिव्यक्ति से आप हमेशा तनाव में रहेंगे, जो आपको समाधान से दूर, और दूर ले जाएगा.

कमजोर व्यक्ति कभी क्षमा नहीं कर सकता, क्षमा करना तो शक्तिशाली व्यक्ति का गुण है. जो पहले क्षमा माँगता है वह सबसे बहादुर है और जो सबसे पहले क्षमा करता है वह सबसे शक्तिशाली है. शास्त्रों में कहा गया है कि क्षमा वीरों का आभूषण है. बाणभट्ट के हर्षचरित में उल्लेख किया गया है कि क्षमा सभी तपस्याओं का मूल है. महाभारत में कहा गया है कि क्षमा असमर्थ मनुष्यों का गुण और समर्थ मनुष्यों का आभूषण है.' श्री गुरु ग्रंथ साहिब का वचन है- क्षमाशील को रोग नहीं सताता और न ही यमराज डराता है.

खासकर पारिवारिक झगड़ों में हम देखते हैं कि, पति का पत्नी से झगड़ा हो गया है. उनके बीच कोई समस्या हो सकती है, जिस पर ध्यान देने की जरूरत है. चूंकि पत्नी का मूड खराब है तो वह बेटे पर गुस्सा उतारेगी. बेटे पर माँ मामूली-सी बात पर चिल्लाई तो वह अपने साथियों से लड़ पड़ा और हम जितनी कल्पना कर सकें उतना इस कहानी को विस्तार दे सकते हैं. भावनाएँ यदि समस्या के स्रोत की दिशा में हो तो भी यह उसे सुलझाने की बजाय बड़ा बना देती हैं. यहीं पर बड़ी समस्या है, क्योंकि कोई माफी माँगे इसकी बजाय भावनात्मक विस्फोट के कारण आखिर में हमें ही माफी माँगनी पड़ सकती है.

मुझे अफ़सोस है, इन तीन छोटे शब्दों के बिना माफी वास्तव में माफी नहीं है. इनका उपयोग करने से हम यह प्रदर्शित कर सकते हैं कि हम वास्तव में उस समस्या को उत्पन्न करने के लिए पछता रहे हैं जिसने शिकायत को प्रेरित किया. इन शब्दों के साथ माफी माँगने से हमको यह दिखाने में मदद मिलती है कि हम अतीत में जो कुछ हुआ है उसकी ज़िम्मेदारी लेने के लिए तैयार हैं. हम सुनिश्चित करेंगे कि ऐसा दोबारा न हो, यह समझाते हुए कि जो हुआ अब आगे हमेशा एक अच्छा विचार

होगा, भविष्य में गड़बड़ी से मुक्त रखने के लिए हम जो कुछ भी बदलने की योजना बना रहे हैं उसे रेखांकित करना सबसे अच्छा है.

यदि हम गलत हैं, आंशिक रूप से भी, किसी की माँग करने से पहले क्षमा माँगना बेहतर है. क्षमायाचना उन समस्याओं को हल करने में मदद कर सकती है जिन्हें हल करना सामान्य रूप से कठिन है. क्षमा की वांछनीयता इसमें शामिल लोगों की संस्कृति पर निर्भर करती है. शर्म की संस्कृति में, एक उच्च स्थिति वाले व्यक्ति से जबरन माफी माँगना एक बहुत ही मूल्यवान चीज के रूप में देखा जाता है, क्योंकि माफी माँगने वाले व्यक्ति के सामाजिक अपमान को एक महत्वपूर्ण कार्रवाई के रूप में देखा जाता है.

शिष्टाचार दूसरों से अपेक्षा करने का मानक नहीं है, यह एक ऐसा मानक है जिसका आप स्वयं पालन करते हैं. यह कहना कभी आसान नहीं होता, मुझे क्षमा करें. लेकिन कभी-कभी, गलती के लिए माफी माँगना ही आपकी प्रतिष्ठा की रक्षा करने का एकमात्र तरीका है.

क्षमा दान महादान है
क्षमा के बराबर कोई दान नहीं है
गलती करना मानवीय विकार है
क्षमा करना ईश्वरीय गुण है.

भारत ड्रोन महोत्सव

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी



आधुनिक तकनीकी युग में ऐसा दौर चल पड़ा है कि हर क्षेत्र में, हर कार्य में प्रौद्योगिकी का प्रवेश हो चुका है. चलते फिरते मानव तक बना दिए गए हैं जिसे रोबोट का नाम दिया गया है. रोबोट लगभग हर मानवीय कार्य रिमोट कंट्रोल के सहारे करते हैं, फर्क बस इतना है कि उनमें जान नहीं है.

प्रधानमंत्री द्वारा 27 मई 2022 को प्रगति मैदान दिल्ली में भारत ड्रोन महोत्सव 2022 का उद्घाटन किया गया. यह महोत्सव भारतीय प्रौद्योगिकी का बहुत बड़ा उत्सव है. ड्रोन टेक्नोलॉजी को लेकर भारत में उत्साह देखने को मिल रहा है और उपस्थित इंजीनियरों, तकनीकी विशेषज्ञों, किसानों में जो उत्साह दिख रहा है अद्वितीय है. भारत एक कृषि और गाँव प्रधान देश है जहाँ वर्तमान परिस्थितियों में ड्रोन तकनीक को विस्तृत स्तर तक प्रोत्साहित कर मानवीय जीवन को एक स्मार्ट टूल दिया गया है जो अब शीघ्र ही आम लोगों के जीवन का हिस्सा बनने जा रहा है.

कुछ दशक पहले कंप्यूटर क्रांति हुई थी और आज कंप्यूटर के बिना मानव जीवन ही कठिन महसूस होता है और अब भारत में ड्रोन क्रांति की दस्तक हुई है, भारत भविष्य का ड्रोना-चार्य बनने जा रहा है. प्रधानमंत्री ने अपने संबोधन में 2030 तक भारत को ड्रोन हब बनाने की बात कही है.

आज किसान भी ड्रोन का प्रयोग खेती में कर रहे हैं. उन्होंने कहा कि ड्रोन की मदद से देश भर में विकास कार्यों का निरीक्षण किया जा रहा है. देश भर में विकास कार्यों का ड्रोन की मदद से औचक

निरीक्षण हो रहा हैं. दो दिवसीय इस महोत्सव में सरकारी अधिकारियों, विदेशी राजनयिकों, सशस्त्र बलों, केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बलों, सार्वजनिक उपक्रमों, निजी कंपनियों और ड्रोन स्टार्टअप आदि सहित 1600 से अधिक प्रतिनिधि भाग लेंगे.

प्रधानमंत्री ने अपने भाषण में कहा कि ड्रोन टेक्नोलॉजी को लेकर भारत में जो उत्साह देखने को मिल रहा है, वो अद्भुत है. ये जो ऊर्जा नज़र आ रही है, वो भारत में ड्रोन सर्विस और ड्रोन आधारित इंडस्ट्री की लंबी छलाँग का प्रतिबिंब है. ये भारत में रोज़गार जेनरेशन के एक उभरते हुए बड़े सेक्टर की संभावनाएँ दिखाती है. आज भारत, स्टार्ट अप पावर के दम पर दुनिया में ड्रोन टेक्नोलॉजी का सबसे बड़ा एक्सपर्ट बनने की ओर तेज गति से आगे बढ़ रहा है.

ड्रोन टेक्नोलॉजी कैसे एक बड़ी क्रांति का आधार बन रही है, इसका एक उदाहरण पीएम स्वामित्व योजना भी है. इस योजना के तहत पहली बार देश के गांवों की हर प्रॉपर्टी की डिजिटल मैपिंग की जा रही है, डिजिटल प्रॉपर्टी कार्ड लोगों को दिए जा रहे हैं. इसमें मानवीय संपर्क कम हुआ है, और भेदभाव की गुंजाइश खत्म हुई है. इसमें बड़ी भूमिका ड्रोन की रही है. थोड़ी देर पहले मुझे भी ड्रोन उड़ाने का, उसकी टेक्नोलॉजी समझने का अवसर मिला है. मुझे खुशी है कि ड्रोन की मदद से अभी तक देश में लगभग 65 लाख प्रॉपर्टी कार्ड जेनरेट हो चुके हैं. और जिसको ये कार्ड मिल गया है, उसको संतोष है कि मेरी जितनी जमीन है उसकी सही डिटेल मिल गई है.

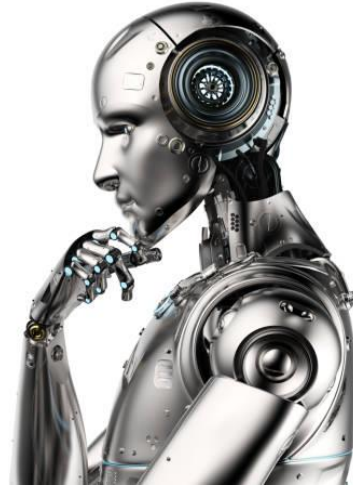
प्रधानमंत्री ने रक्षा, आपदा प्रबंधन, कृषि, पर्यटन, फिल्म और मनोरंजन के क्षेत्र में ड्रोन प्रौद्योगिकी के महत्व पर प्रकाश डाला. उन्होंने कहा कि आने वाले दिनों में इस तकनीक का इस्तेमाल बढ़ना तय है. उन्होंने प्रगति की समीक्षाओं और केदारनाथ परियोजनाओं के उदाहरणों के माध्यम से अपने आधिकारिक निर्णय लेने में ड्रोन के इस्तेमाल के बारे में भी बताया.

उन्होंने कहा कि पहले के समय में टेक्नोलॉजी और उससे हुए इन्वेंशन, एलीट क्लास के लिए माने जाते थे. उन्होंने कहा कि आज हम टेक्नोलॉजी को सबसे पहले आम लोगों को उपलब्ध करा रहे हैं. कुछ महीने पहले तक ड्रोन पर बहुत सारे रिस्ट्रिक्शंस थे. हमने बहुत ही कम समय में अधिकतर रिस्ट्रिक्शंस को हटा दिया है. हम पीएलआई जैसी स्कीम्स के जरिए भारत में ड्रोन मैन्युफैक्चरिंग का एक सशक्त इको-सिस्टम बनाने की तरफ भी बढ़ रहे हैं. अंत में प्रधानमंत्री ने कहा, तकनीक जब जन-जन तक जाती है तो उसके उपयोग की संभावनाएँ भी उसी के अनुसार बढ़ जाती हैं.

उन्होंने कहा कि ड्रोन तकनीक किसानों को सशक्त बनाने और उनके जीवन को आधुनिक बनाने में प्रमुख भूमिका निभाने जा रही है, क्योंकि जैसे-जैसे गांवों में सड़क, बिजली, ऑप्टिकल फाइबर और डिजिटल तकनीक का आगमन हो रहा है. इसके बावजूद भी, कृषि कार्य पुराने तरीकों से किए जा रहे हैं, जिससे परेशानी, कम उत्पादकता और अपव्यय हो रहा है. उन्होंने भू-अभिलेखों से लेकर बाढ़ और सूखा राहत तक की गतिविधियों के संबंध में राजस्व विभाग पर निरंतर निर्भरता के बारे में भी बात की. उन्होंने कहा कि इन सभी मुद्दों से निपटने के लिए ड्रोन एक प्रभावी उपकरण के रूप में उभरा है. प्रधानमंत्री ने यह भी कहा कि कृषि क्षेत्रों की मदद के लिए किए गए उपायों ने सुनिश्चित किया है कि प्रौद्योगिकी अब किसानों के लिए डराने वाली नहीं है.

आजकल कृत्रिम बुद्धिमत्ता की लहर छाई है

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी



आजकल कृत्रिम बुद्धिमत्ता की लहर छाई है,
हर काम में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की भावना समाई है.
मानवीय दिनचर्या चलाने में आलस्यता आई है,
इसलिए मानव ने यह तरीका अपनाई है.

डिजिटल युग में ऐप से इलाज के जरिए,
डिजिटल डॉक्टर की टेक्नोलॉजी आई है.
सिर्फ एक टच से बीमारी का इलाज होगा,
ऐसी-ऐसी ऐप्स सॉफ्टवेयर भी आई है.

परंपरागत संसाधनों की परंपरा भुलाई है,
प्रौद्योगिकी क्षेत्र में अपार सफलता पाई है.
इसलिए डिजिटल युग की परिकल्पना आई है,
सूरज - चांद अदालतों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता अपनाई है.

मानव ने जो यह संकल्पता दर्शाई है,
सारी प्रकृति को कृत्रिम करने की इच्छा जताई है.
ऊपर वाले का अस्तित्व है यह बात भुलाई है,
हे मानव!! उसी के बल पर यह बुद्धिमता पाई है.

तितली रानी

रचनाकार- पिकी सिंघल



तितली रानी तितली रानी, कहो कहाँ से आई हो.
इतने रंग-रंगीले पंख तुम्हारे, कहो कहाँ से लाई हो.

मकरंद तुमको बहुत ही भाता, यह बतलाने आयी हो.
फुदक-फुदक कर फूलों पर तुम, हम सबके दिल को भायी हो.

प्रखर तुम्हारी गंध क्षमता, दृष्टि तेज अति पाई हो.
हम बच्चों को पीछे भगा-भगा कर, मन ही मन मुस्काई हो.

फूलों के ऊपर मंडराती और इठलाती-सी आई हो .
मिलजुल कर संग रहो सदा सब, तुम यह संदेशा लाई हो.

बढ़ती आधुनिक सुविधाएं - गिरता स्वास्थ्य

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी



प्रौद्योगिकी के वर्तमान युग में सुविधाओं की ऐसी झड़ी लग गई है कि आज मानव जीवन इन सुविधाओं पर पूरी तरह आश्रित हो गया है. यहाँ तक कि कैलकुलेटर, कंप्यूटर, वाहन जैसी सुविधाओं के बिना जीवन थम सा जाता है क्योंकि हम इसके आदी हो चुके हैं. आजकल कोई चार कदम भी पैदल नहीं जाना चाहता. छोटे छोटे कैलकुलेशन भी कैलकुलेटर, कंप्यूटर के बिना नहीं कर पाते. हमें चिंतन करना जरूरी है कि इन सबका हमारे स्वास्थ्य पर कितना विपरीत प्रभाव पड़ रहा है. आधुनिक जीवन शैली में हमने अपने शरीर की फिक्र करना छोड़ दिया है जिससे अपेक्षाकृत अधिक बीमारियों से हम ग्रस्त हुए हैं.

पुराने जमाने में लोग कई किलोमीटर तक पैदल और साइकल से जाते थे, ऑफिशियल व्यवहारिक, सामाजिक, घरेलू और दैनिक जीवन के कई कार्य हम शारीरिक श्रम से ही कर लेते थे जिससे हमारा शरीर सुचारू रूप से संचालित होता था. खानपान उस तरह के थे जो हमारे शरीर को भरपूर पौष्टिकता देते थे, जिसका स्थान आज जंक फूड ने ले लिया है. हम जब छोटे थे तो घर के आँगन, मोहल्ले में दिनभर खेलते रहते थे. आज समय ऐसा आ गया है कि बच्चे दिनभर स्कूल कार्य या मोबाइल से खेलते हैं और घर पर ही बैठे रहते हैं. माता-पिता उन्हें बाहर खेलने के लिए कहते हैं परंतु बच्चा कंप्यूटर गेम, मोबाइल गेम में ही लगा रहता है, जिसका स्वास्थ्य और स्वभाव पर असर होना स्वाभाविक है.

हमारा शरीर एक जटिल मशीन है. यह अपने पोषण के लिए पूरी तरह प्रकृति पर निर्भर है. जैसे-जैसे हम रोजाना काम करते हैं और अपनी दिनचर्या रखते हैं, वैसे-वैसे हमारे शरीर के तत्वों को टूट-फूट का सामना करना पड़ता है. इस स्थिति को शरीर के तत्वों की अच्छी गुणवत्ता और मात्रा द्वारा प्रतिस्थापित किया जाना है. अगर इन शरीर तत्वों को अच्छी गुणवत्ता और तत्वों की मात्रा से बदल दिया जाए तो हमारा शरीर स्वस्थ हो जाता है और हमारे शरीर में कोई सप्ताह का लूप नहीं रहता है. लेकिन अगर शरीर के इन तत्वों को अच्छी गुणवत्ता और मात्रा से नहीं बदला जाता है, तो हमारे शरीर में वीक लूप रह जाते हैं और वह हिस्सा हमारे शरीर में तनाव और विकृति पैदा करने लगता है. यह तनाव की शुरुआत है.

आधुनिक जीवन शैली ने लोगों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव डाला है. कम मेहनत और चिकनाई युक्त भोजन लोगों को अस्वस्थ बना रहा है. अस्पताल में सुविधाओं की कमी नहीं है फिर भी रहन सहन में लापरवाही के कारण मरीजों की संख्या बढ़ रही है. खुद को स्वस्थ रखने के लिए लोग अनेक प्रकार के नुस्खे अपना रहे हैं. कोई योग तो कोई व्यायाम और कोई मार्निंग वॉक कर फिट रहने का प्रयास करता है. इसके बावजूद लोग पूरी तरह से स्वस्थ नहीं रह पा रहे हैं. स्वास्थ्य विशेषज्ञों का कहना है कि दिनचर्या का अनियमित होना लोगों के बीमार रहने का प्रमुख कारण है. न तो समय पर नाश्ता हो रहा है और न ही किसी को समय पर खाना खाने की फुर्सत है लिहाजा बीमारियाँ शरीर को घेर रही हैं. चिकित्सक आधुनिक जीवन शैली को अस्वस्थता का प्रमुख कारण मानते हैं. वे कहते हैं कि देर रात तक जागना और सुबह देर तक सोना भी बीमारी पैदा करते हैं.

हमें चाहिए कि हम इस युग में आधुनिक जीवन शैली के साथ ठीक समय पर जागें, ठीक समय पर व्यायाम करें, ठीक समय पर भोजन करें, पढ़ाई करें, खेलकूद करें और ठीक समय पर ही विश्राम करें. हमारी जीवनशैली एकदम ठीक होना चाहिए तभी हम सुखी और स्वस्थ रह पाएंगे.

साथियों अगर हम आधुनिक सुविधाओं से लाभ हानि की बात करें तो, सुविधाजनक प्रक्रियाएं, उत्पाद और सेवाओं का उद्देश्य पहुंच में आसानी बढ़ाना, समय और ऊर्जा को बचाना और निराशा को कम करना है. आधुनिक सुविधा एक श्रम -बचत उपकरण, सेवा या पदार्थ है जो किसी कार्य को पारंपरिक पद्धति की तुलना में आसान या अधिक कुशल बनाती है. सुविधा एक सापेक्ष अवधारणा है, और संदर्भ पर निर्भर करती है. उदाहरण के लिए, ऑटोमोबाइल को कभी एक सुविधा माना जाता था, पर आज इसे जीवन का एक सामान्य हिस्सा माना जाता है.

तकनीक तो ठीक, लेकिन इंटरनेट के उपयोग से शिक्षा सहित चिकित्सा, विज्ञान से लेकर ऑनलाइन बैंकिंग, ई कॉमर्स, एम कॉमर्स सुविधा, संचार और मनोरंजन, डाटा शेयरिंग तथा ऑनलाइन बुकिंग जैसे अनेक क्षेत्रों में सर्च इंजन की सहायता से रोजगार के अवसर बढ़े हैं। ऐसे में आज देश-दुनिया के लाखों लोग, छोटे बच्चों और युवाओं सहित इंटरनेट के साथ फेसबुक, ट्विटर, मीडिया और कंप्यूटर गेम जैसी अनेक सुविधाओं से लैस हो गए हैं। सरकार भी घर-घर से इसे जोड़ने में दिलचस्पी ले रही है। लेकिन ऑनलाइन गेम, मूवी, गाने आदि ने पढ़ाई के साथ-साथ बच्चों की दिनचर्या भी बिगाड़ दी है। बढ़ती आधुनिक सुविधाओं के कारण गिरते स्वास्थ्य और बदलते स्वभाव को रेखांकित करना जरूरी है। बढ़ती आधुनिक सुविधाओं पर निर्भरता के साथ शारीरिक स्वास्थ्य पर ध्यान देना समय की मांग है।

उत्कर्ष का जन्मदिन

रचनाकार- जीवन चन्द्राकर "लाल"



उत्कर्ष अपने जन्मदिन की तैयारी के लिए अपने पापा के साथ बाजार गया. पापा ने उत्कर्ष की पसंद के अनुसार केक, कपड़े, खिलौने, गुब्बारे आदि खरीदे.

वापिस लौटते समय कार रोककर पापाजी फल खरीदने लगे, कार में बैठे उत्कर्ष का ध्यान सड़क किनारे बैठे एक वृद्ध भिखारी पर गया, जो इशारे से कुछ माँग रहा था.

उत्कर्ष से रहा नहीं गया, वह केक और पानी की बोतल लेकर उतरा. दोनों चीजें भिखारी को देकर वापस कार में बैठ गया. पापा जी फल लेकर आए तो कार में केक को न पाकर उत्कर्ष से पूछा. उत्कर्ष ने बताया- "पापाजी मैंने केक उस भूखे भिखारी को दे दिया और पानी की बोतल भी"

पापा बोले "क्यों?"

उत्कर्ष ने कहा हमारे शिक्षक ने कल बताया था, कि किसी भूखे की भूख मिटाने से बढ़कर कोई भी उत्सव नहीं है." इसलिए मैंने उस भिखारी को केक दे दिया.

पापा बिल्कुल गुस्सा नहीं हुए, उन्होंने कार केक के दुकान की तरफ वापस मोड़ ली. उन्हें अपने बेटे की शिक्षा व संस्कार पर गर्व का अनुभव हो रहा था.

विश्व गुरु भारत

रचनाकार- डिजेन्द्र कुर्रे "कोहिनूर"



उतुंग हिमालय से लेकर,
खुशी हो कन्याकुमारी तक.
श्रीरामचंद्र के त्यागों से,
उस छलिया कृष्ण मुरारी तक.
इस वसुंधरा से अम्बर तक,
जो है अथाह वो समंदर तक.
हैं भिन्न मगर हम एक रहें,
भाईचारे में नेक रहें.
अब हाथ नहीं हम छोड़ेंगे,
हम सबके मन मे हर्ष रहे.
जो सदियों से है विश्व गुरु,
सुरभित वो भारत वर्ष रहे.

मुनियों की भू कहलाती है,
जहाँ गंगा नित नहलाती है.
जो सबकी प्यास बुझाती है,
जहाँ परम्परा की थाती है.
जहाँ चंदन जैसी माटी है,
केसर की सुरभित घाटी है.
जहाँ कभी नहीं अवनति बड़े,
हर कण-कण में उत्कर्ष रहे.
जो सदियों से है विश्व गुरु,
सुरभित वो भारत वर्ष रहे.

जहाँ वीर वीरता के मूरत,
लड़ ही लेते हैं हर सूरत.
अरिदल को धूल चटाते हैं,
हर दिन इतिहास बनाते हैं.
रक्षित है देश जवानों से,
पोषित है प्रजा किसानों से.
सबका मन उज्ज्वल दर्पण है,
जन-जन में सत्य समर्पण है.
अब कभी नहीं हम पीछे हैं,
चाहे निज अँखिया मीचे हैं.
हम हार कभी न मानेंगे,
चाहे कितने संघर्ष रहे.
जो सदियों से है विश्व गुरु,
सुरभित वो भारत वर्ष रहे.

घनाक्षरी - समय

रचनाकार- डिजेन्द्र कुर्रे "कोहिनूर"



समय का मान करो,
नित गुणगान करो,
समय से धन धान्य है,
समय सबसे बलवान है.

समय से ही प्रेम धारा
समय से ही जग सारा,
समय के कारण ही,
विविध विधान है.

समय ही हार करे,
समय ही जीत करे,
समय ही तपन में,
सुख का वितान है.

समय को जान लिया,
भेद पहचान लिया,
जग में वही मनुज,
सबसे महान है.

पानी रे पानी तेरा रंग कैसा

रचनाकार- पिकी सिंघल



सभी जानते हैं कि पानी जीवन का आधार है, बिना पानी के किसी भी जीव के जीवन की कल्पना करना असंभव है. हम पानी पिए बगैर कुछ दिन तक रह सकते हैं किंतु एक अंतराल के पश्चात हमें पानी पीने की आवश्यकता होती ही है और यदि उस समय हमें पानी न मिले तो हमारे प्राण भी निकल सकते हैं.

पानी, अनेक नामों से जाना जाता है जैसे जल, नीर, सलिल इत्यादि, अपने में अनेक गुणों को समाहित किए होता है. आज हम पानी की कुछ सामान्य विशेषताओं के बारे में बात करेंगे. हम सभी पानी के गुणों से ,विशेषताओं से भली भांति परिचित हैं परंतु कभी-कभी ऐसा होता है कि हमें पता सब कुछ होता है परंतु अपने व्यस्त रूटीन के चलते हमारे पास वक्त ही नहीं होता कि हम इस विषय पर सोचें तो दोस्तो, आज हम उन सभी जानकारीयों पर प्रकाश डालेंगे.

सभी को मालूम है कि दिन भर में 8 से 10 गिलास पानी पीना अनिवार्य है ,परंतु हम में से अधिकतर लोग इसको अनदेखा करते हैं और अपर्याप्त मात्रा में ही पानी पीते हैं. परंतु जब बात हमारे स्वास्थ्य की हो तो हमें इन बातों को अनदेखा नहीं करना चाहिए और लगभग 8 से 10 गिलास पानी दिन भर में पी लेना चाहिए, ताकि हमारे शरीर में पानी की कमी न होने पाए.

दिन भर में सेवन किए जाने वाले पानी का 40% पानी यदि हम सुबह खाली पेट ही पी लें तो दिन भर पानी पीने का उतना ध्यान रखने की हमें जरूरत नहीं रह जाती है क्योंकि कई बार हम काम में इतने व्यस्त होते हैं कि पानी पीने का ध्यान नहीं रहता कभी-कभी आलस्य के कारण भी हम ऐसा करते हैं और उसी वजह से हमें पानी की कमी से होने वाली परेशानियों का सामना करना पड़ जाता है.

पर्याप्त मात्रा में पानी पीने से शरीर से अवांछित तत्वों का निकास होता है और हमारी आँतें और शरीर के अन्य आंतरिक अंग सहजता से अपना कार्य कर पाते हैं. शरीर से अवांछित और दूषित तत्वों के निकलने के पश्चात हमारा शरीर हल्का महसूस होता है, जिसका असर हमारे बाहरी अंगों पर भी दिखाई देता है. पर्याप्त मात्रा में पानी पीने से हमारी त्वचा की रंगत भी खिलने लगती है. जितना अधिक हम पानी पीते हैं उतना ही अधिक हमें पसीना आता है, हमारे शरीर से पानी उत्सर्जित होता रहता है और अंदर की सफाई होती रहती है जब आंतरिक अंग साफ होंगे तो बाहरी रंगत अपने आप ही खिलने लगेगी.

पर्याप्त मात्रा में पानी पीने से हमारी प्यास तो बुझती ही है ,साथ ही हम पूरा दिन तरोताजा भी महसूस करते हैं, जिसका हमारे व्यक्तित्व पर सकारात्मक प्रभाव देखने को मिलता है

पानी का एक विशेष गुण यह भी है कि यह खाद्य पदार्थों को सहजता से पचाने में बहुत मदद करता है. खाना खाने के कुछ समय पश्चात यदि पानी पिया जाता है तो भोजन तेजी से पचने लगता है जिससे हमारी भूख भी बढ़ती है और हम तंदुरुस्त रहते हैं.

अस्वस्थ होने की स्थिति में हमें दवाओं का सेवन करना पड़ता है, उस समय हमें पानी पीने का विशेष ध्यान रखना चाहिए क्योंकि पानी कम पीने से दवाइयां अपना असर देर से दिखाती हैं और हमारे शरीर के भीतर विषैले तत्व इकट्ठा होना शुरू हो जाते हैं. ऐसा न हो इसलिए हमें पर्याप्त मात्रा में पानी का सेवन करना चाहिए.

बिना किसी रंग, आकार तथा स्वाद के भी पानी का नैसर्गिक गुण है कि पानी हमारी प्यास बुझाने के साथ-साथ काफी हद तक हमारी भूख को भी शांत करता है. अक्सर आपने देखा होगा कि घर के बाहर जब हमारे पास खाने को कुछ न हो तो हम पानी का ही सेवन करते हैं जिससे कुछ समय के लिए हमारी क्षुधा शांत हो जाती है. पानी पीने से हमारे शरीर की अनावश्यक चर्बी भी घटने

लगती है चर्बी कम करने के लिए गुनगुना पानी बहुत उपयोगी माना जाता है. स्मरण रहे कि फ्रिज में रखा हुआ आवश्यकता से अधिक ठंडा पानी और पानी में बर्फ डाल कर पीना स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं माना जाता. दूसरी और महत्वपूर्ण बात यह भी है कि हमें कभी भी खड़े होकर पानी नहीं पीना चाहिए इससे घुटनों में दर्द की समस्या होनी शुरू हो जाती है पानी हमेशा बैठकर धीरे-धीरे घूंट घूंट पीना चाहिए.

पानी पीने का कोई निश्चित समय नहीं होता जब भी प्यास लगे अथवा आपको महसूस हो कि आपने पिछले 2 घंटे में पानी का सेवन नहीं किया है ,आप पानी पी सकते हैं. पानी एकमात्र ऐसी चीज है जिसे पीने का कोई साइड इफेक्ट नहीं होता. हमारे शरीर पर अधिक पानी पीने से कोई दुष्प्रभाव नहीं होता. हाँ,जिन लोगों को किडनी संबंधी समस्याएँ होती हैं उनको दिन भर में कितने पानी का सेवन करना चाहिए, इसके लिए अपने चिकित्सक से परामर्श करना चाहिए क्योंकि हम जितना अधिक पानी पीते हैं हमारी किडनी को भी उतना ही अधिक कार्य करना पड़ता है.

पीने के साथ-साथ पानी अनेक कार्यों में प्रयोग में लाया जाता है जिसकी सूची बनाना लगभग असंभव है, पानी जीवन का आधार कहा जाता है और बिना पानी के सब सूना सूना प्रतीत होता है.

जिस प्रकार पानी पीने के हमारे शरीर को अनेक फायदे होते हैं उसी प्रकार यदि पानी साफ न हो तो उसके नुकसान भी उतने ही अधिक होते हैं.दूषित पानी का सेवन करने से हमें अनेक प्रकार की बीमारियाँ घेर लेती हैं ,जिनमें हैजा और टाइफाइड मुख्य बीमारियाँ हैं. इसलिए हमें सदैव ताज़े, स्वच्छ, या उबले पानी का ही प्रयोग पीने के लिए करना चाहिए.

भारत में धर्मनिरपेक्षता की सौगात मिली

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी



भारत में धर्मनिरपेक्षता की सौगात मिली
अधिकारों-कर्तव्यों के पालन के लिए
संविधान जैसी अनमोल ताकत मिली
नव भारत के निर्माण की शक्ति मिली

हम अत्यंत सौभाग्यशाली हैं हमें
भारतीय सभ्यता संस्कृति मिली
हम भारतीयों की किस्मत खुली
स्वच्छंद हवा में सांस लेने को मिली

अहिंसात्मक सोच सच्चे उपयोग की युक्ति
आध्यात्मिकता से आत्मशुद्धि की ताकत मिली
लोकतंत्र, न्याय, बंधुत्व की विरासत हमें मिली
हम अत्यंत सौभाग्यशाली हैं हमें मां भारती मिली

आज बहाएं कागज की नाव

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान



नदी-नालें पानी से भर गये
आज बहाएं कागज की नाव.
छम्मक-छम्मक झूमती
दूर बहुत जाएगी नाव.

पानी के ऊपर देखो
दौड़ खूब लगा रही है.
देखो मेरी नाव आज
हंसती गाती जा रही है.

यह नहीं डूबेगी पानी में
ना किसी से टकराएगी.

हम बच्चों की मेरी नाव
मन खूब बहलाएगी.

आता जब बरसात का मौसम
नाव खूब बहाते हैं.
भीग-भीग कर पानी में
हम अपना मन बहलाते हैं.

मानवता के लिए योग

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी



स्वास्थ्य ही धन है, स्वस्थ माहौल लोगों को स्वस्थ है, अगर हिट रहना है तो फिट रहना होगा, योग से करो खुद को निरोग, जब रखोगे शरीर का ध्यान तभी कर सकोगे सारे काम, देश के नागरिक स्वस्थ हैं तो देश स्वस्थ इत्यादि अनेक वाक्यांश या कहावतें हमने अपने बड़े बुजुर्गों, बुद्धिजीवियों से सुने हैं परंतु इन विचारों पर चलकर अपना शरीर स्वस्थ रखने का काम अपेक्षाकृत कम लोग करते हैं.

इसलिए मानव को स्वस्थ रखने, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सामाजिक संगठनों, विभिन्न मंचों, देशों द्वारा स्वस्थ रहने के लिए अनेक दिवस और कार्यक्रम मनाए जाते हैं ताकि मानव सजग होकर सतर्कता से अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखे. इसी कड़ी में अंतराष्ट्रीय योग दिवस हर वर्ष 21 जून को मनाया जाता है. योग एक ऐसा अभ्यास है जो आनंद, स्वास्थ्य और शांति लाता है और यह व्यक्ति की आंतरिक चेतना तथा बाहरी दुनिया के बीच संबंध की भावना को गहराई प्रदान करता है.

उल्लेखनीय है कि, 21 जून को सम्पूर्ण विश्व में अंतराष्ट्रीय योग दिवस मनाया जाता है. पहली बार यह 2015 में मनाया गया था, इसकी पहल भारत के वर्तमान प्रधानमंत्री ने 27 सितम्बर 2014 को संयुक्त राष्ट्र महासभा में अपने भाषण से की थी,

संयुक्त राष्ट्र में 193 सदस्यों द्वारा 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाने के प्रस्ताव को 11 दिसम्बर 2014 को मंजूरी मिली थी. 170 से अधिक देशों ने योग दिवस के प्रस्ताव का समर्थन किया था.

संयुक्त राष्ट्र महासभा में प्रधानमंत्री ने कहा था कि योग भारत की प्राचीन परंपरा का अमूल्य उपहार है, यह मन और शरीर की एकता का प्रतीक है. विचार और कार्य, संयम और पूर्ति, मनुष्य और प्रकृति के बीच सामंजस्य, स्वास्थ्य और कल्याण के लिए समग्र दृष्टिकोण पैदा करता है. यह अभ्यास के बारे में नहीं है बल्कि अपने आप, दुनिया और प्रकृति के साथ एकता की भावना को खोजने के लिए है. हमारी जीवनशैली बदलकर और चेतना पैदा करके, यह जलवायु परिवर्तन से निपटने में हमारी मदद कर सकता है. आइये हम अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस को अपनाने की दिशा में काम करें.

इस वर्ष 2022 में योग दिवस के 8 वें संस्करण को यादगार बनाने के लिए तैयारियाँ शुरू हैं. पीआईबी के अनुसार मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान के सहयोग से आयुष मंत्रालय द्वारा अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के 8 वें संस्करण का कई कार्यक्रमों के माध्यम से प्रचार प्रसार किया जा रहा है. 13 मार्च 2022 को 100 दिनों की उलटी गिनती चिह्नित करने के लिए एक पूर्वावलोकन कार्यक्रम आयोजित किया गया.

दुनिया भर में 13 मार्च से 21 जून, 2022 तक 100 दिन, 100 शहर और 100 संगठन को शामिल करने वाला यह अभियान शुरू किया गया. नई दिल्ली के लाल किले में 75 वें दिन उलटी गिनती का कार्यक्रम आयोजित किया गया. 50 वें दिन की उलटी गिनती असम के शिवसागर में मनाई गई और 25 वें दिन की उलटी गिनती तेलंगाना के हैदराबाद में मनाई गई.

इस बार योग दिवस की थीम है मानवता के लिए योग. कोरोना महामारी ने हम सभी को यह एहसास कराया है, कि हमारे जीवन में, स्वास्थ्य का, कितना अधिक महत्व है, और योग, इसमें कितना बड़ा माध्यम है, लोग यह महसूस कर रहे हैं कि योग से शारीरिक आध्यात्मिक और बौद्धिक कल्याण को भी बढ़ावा मिलता है.

विश्व के शीर्ष व्यापार व्यक्तित्व से लेकर सिनेमा और खेलों के व्यक्तित्वों तक, छात्रों छात्राओं से लेकर सामान्य लोगों तक, सभी, योग को अपने जीवन का अभिन्न अंग बना रहे हैं.

इस बार देश-विदेश में योग दिवस पर होने वाले कुछ बेहद इनोवेटिव उदाहरणों के बारे में जानकारी मिली है, कई चीजें पहली बार देखने को मिलेंगी, उनमें से गार्जियन रिंग नामक एक अभिनव कार्यक्रम है, जो सूर्य की गति को प्रदर्शित करेगा, योग करने वाले लोगों की भागीदारी विभिन्न देशों में, पूर्व से शुरू होकर पश्चिम की ओर बढ़ते हुए सूर्य की गति के साथ होगी. यह एक अद्भुत रिले योग स्ट्रीमिंग कार्यक्रम होगा जिसका दूरदर्शन के चैनलों पर सीधा प्रसारण किया जाएगा.

अलग-अलग देशों में भारतीय मिशन वहाँ के स्थानीय समय के मुताबिक सूर्योदय के समय योग कार्यक्रम आयोजित करेंगे. एक देश के बाद दूसरे देश से कार्यक्रम शुरू होगा. पूरब से पश्चिम तक निरंतर यात्रा चलती रहेगी, फिर ऐसे ही, ये, आगे बढ़ता रहेगा. इन कार्यक्रमों की स्ट्रीमिंग भी इसी तरह एक के बाद एक जुड़ती जायेगी, यानी, ये, एक तरह का रिले योगा स्ट्रीमिंग इवेंट होगा. आप भी इसे जरूर देखिएगा. मानवता के लिए योग पर ध्यान केंद्रित करते हुए, इस वर्ष विशेष रूप से दिव्यांग लोगों, ट्रांसजेंडर आबादी, महिलाओं और बच्चों के लिए विशेष कार्यक्रम तैयार किए गए हैं. स्कूलों में योग शिक्षा का एक अभिन्न अंग, मानवीय मूल्यों पर भी ध्यान दिया जा रहा है. इस वर्ष हमारे गांवों/ग्राम पंचायतों में भी बड़ी संख्या में भागीदारी होगी, क्योंकि सामान्य सेवा केंद्र, सामान्य योग प्रोटोकॉल के अभ्यास और प्रशिक्षण को बढ़ावा दे रहे हैं और उम्मीद है कि अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2022 में लाखों ग्रामीण नागरिक भी भाग लेंगे.

बाढ़

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान



नदियों में आई है बाढ़
बड़ी मुसीबत लाई बाढ़.
पानी में अपने साथ
सब कुछ है बहाई बाढ़.

आफत का नजारा ले
देखो आई है यह बाढ़.
सबको घर से बेघर
आज बनाई है यह बाढ़.

ताल पोखरा सब भर गये
बरसात की मार है बाढ़
चारो तरफ पानी ही पानी
सबको दिखलाई है बाढ़.

घर-आँगन गांव-शहर सब डूबा
बड़ी मुसीबत ले कर आई बाढ़.
ना जाने कितने घर द्वार
पानी में गिराई है यह बाढ़.

खुल गए स्कूल

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान



आया माह जुलाई देखो
खुल गए सब स्कूल.
सारे बच्चे बस्ता ले कर
पढ़ने जा रहे स्कूल.

नई कापियां नई किताबें
मिल कर हम पढ़ेंगे.
पढ़ लिख कर ही जीवन में
आगे हम बढ़ेंगे.

हम सरकारी स्कूलों का
खूब बढ़ाएँगे शान.
नाम लिखा कर इसमें
अपना बढ़ाएँगे ज्ञान.

प्राइवेट स्कूलों में
हम पढ़ने नहीं जाएंगे.
सरकारी स्कूलों में सब
निशुल्क शिक्षा पाएंगे.

भारतीय भाषाएं नदियां हैं और हिंदी महानदी

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी



वैश्विक स्तर पर भारत की राजकीय भाषा हिन्दी का प्रचार, प्रसार, महत्व, प्रतिष्ठा इतनी तेजी से बढ़ी है जिसका अनुमान हमने नहीं लगाया था. पिछले कुछ वर्षों में हमारे प्रधानमंत्री महोदय ने अंतरराष्ट्रीय मंचों पर हिन्दी में संबोधनों, हिन्दी में संवाद, विदेशों में रह रहे भारतीयों से मुलाकात और हिन्दी में बातचीत सहित ऐसी उत्साहवर्धक प्रक्रिया शुरू की है जिसके कारण राजभाषा हिन्दी में ऊर्जा का संचार व हिन्दी की प्रतिष्ठा का विस्तार हुआ है.

रविंद्र नाथ टैगोर ने कहा था कि भारतीय भाषाएँ नदियाँ हैं और हिन्दी महानदी. हम जानते हैं कि हिन्दी, बहुत सरल, सहज और सुगम होने के साथ विश्व की संभवतः सबसे वैज्ञानिक भाषा है जिसे दुनिया भर में समझने, बोलने और चाहने वाले लोग बहुत बड़ी संख्या में मौजूद हैं. यह विश्व में तीसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है जो हमारे पारम्परिक ज्ञान, प्राचीन सभ्यता और आधुनिक प्रगति के बीच एक सेतु भी है. संविधान के अनुच्छेद 343 के अंतर्गत संघ की राजभाषा के संबंध में प्रावधान किया गया है. अनुच्छेद 343 के खंड (1) के अनुसार देवनागरी लिपि में लिखित हिन्दी संघ की राजभाषा है. संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रूप होगा.

साथियों हिन्दी के प्रचार प्रसार, में हर क्षेत्र का सहयोग प्राप्त है. हिन्दी को वैश्विक संदर्भ देने में उपग्रह चैनलों, विज्ञापन एजेंसियों, बहुराष्ट्रीय निगमों तथा यांत्रिक सुविधाओं का विशेष योगदान है. वह जनसंचार माध्यमों की सबसे प्रिय एवं अनुकूल भाषा बनकर निखरी है. आज विश्व में सबसे ज्यादा पढ़े जानेवाले समाचार पत्रों में आधे से अधिक हिन्दी के हैं.

साथियों अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारतीय विचार और संस्कृति का वाहक होने का श्रेय हिन्दी को ही है. आज संयुक्त राष्ट्र जैसी संस्थाओं में भी हिन्दी की गूंज सुनाई देने लगी है. हमारे प्रधानमंत्री द्वारा संयुक्त राष्ट्र महासभा में हिन्दी में ही अभिभाषण दिया गया था. विश्व हिन्दी सचिवालय विदेशों में हिन्दी का प्रचार-प्रसार करने और संयुक्त राष्ट्र में हिन्दी को आधिकारिक भाषा बनाने के लिए कार्यरत है. उम्मीद है कि हिन्दी को शीघ्र ही संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषा का दर्जा भी प्राप्त हो सकेगा.

पीआईबी के अनुसार एक कार्यक्रम में केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री ने कहा, कि आज देश के लगभग सभी प्रांतों में हिन्दी की पढ़ाई हो रही है जिससे हिन्दी के प्रति लोगों का रुझान बढ़ रहा है. किसी भी राष्ट्र के लिए यह जरूरी है कि वह अपनी भाषाओं के प्रति सजग रहे और उन्हें आगे बढ़ाने के लिए आवश्यकतानुसार कदम उठाए. इस दिशा में देश का शीर्ष नेतृत्व पूरी तरह से सजग है और हमारे प्रधानमंत्री ने सदैव सभी भारतीय भाषाओं को आगे बढ़ाने का काम किया है. वे विश्व में जहाँ भी गए, उन्होंने हिन्दी में संबोधन दिया. इससे वर्तमान पीढ़ी को नई ऊर्जा प्राप्त हुई है और लोग दैनिक व्यवहार में हिन्दी का उपयोग करने में हिचक महसूस नहीं करते. हमारे गृह मंत्री भी सर्वभाषा प्रेमी हैं और विभिन्न अवसरों पर हिन्दी में ही बात करते हैं, इससे लोगों का उत्साह भी बढ़ता है. एक अन्य बुद्धिजीवी ने कहा, गृह मंत्री के नेतृत्व में आज गृह मंत्रालय का अधिकतर कार्य हिन्दी में हो रहा है. उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता के बाद अधिकतर मूल कार्य हिन्दी में किए जाने का लक्ष्य था परंतु अभी तक यह लक्ष्य प्राप्त नहीं हो सका, अब समय आ गया है कि मूल कार्य हिन्दी में हो और अंग्रेजी में उसका अनुवाद हो. दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा का जिक्र करते हुये उन्होंने कहा कि आजादी से पहले ही कई संस्थाएँ हिन्दी के संवर्धन की दिशा में काम कर रही हैं. पं दीन दयाल उपाध्याय ने कहा था कि साँस्कृतिक राष्ट्रवाद की पुनर्स्थापना और इतिहास के पुनर्लेखन का काम भाषा के उत्थान के बिना संभव नहीं है. गृह राज्य मंत्री ने कहा कि श्री अटलबिहारी वाजपेयी ने पहली बार संयुक्त राष्ट्र में हिन्दी में संबोधन दिया और सुषमा स्वराज के प्रयासों से संयुक्त राष्ट्र के हिन्दी में ट्विटर और अन्य सोशल मीडिया चैनल शुरू किये गये.

हिन्दी आम आदमी की भाषा के रूप में देश की एकता का सूत्र है। सभी भारतीय भाषाओं की बड़ी बहन होने के नाते हिन्दी विभिन्न भाषाओं के उपयोगी और प्रचलित शब्दों को अपने में समाहित करके सही मायनों में भारत की संपर्क भाषा होने की भूमिका निभा रही है। हिन्दी जन-आंदोलनों की भी भाषा रही है। हिन्दी के महत्व को देखते हुए तकनीकी कंपनियाँ भी इसे बढ़ावा देने की कोशिश कर रही हैं। यह खुशी की बात है कि सूचना प्रौद्योगिकी में हिन्दी का इस्तेमाल बढ़ रहा है। आज वैश्वीकरण के दौर में, हिन्दी विश्व स्तर पर एक प्रभावशाली भाषा बनकर उभरी है। आज पूरी दुनिया में 175 से अधिक विश्वविद्यालयों में हिन्दी पढ़ाई जा रही है। ज्ञान-विज्ञान की पुस्तकें हिन्दी में लिखी जा रही हैं। सोशल मीडिया और संचार माध्यमों में हिन्दी का प्रयोग निरंतर बढ़ रहा है।

भाषा का विकास उसके साहित्य पर निर्भर करता है। आज के तकनीकी युग में विज्ञान और इंजीनियरिंग के क्षेत्र में भी हिन्दी में काम को बढ़ावा देना चाहिए ताकि देश की प्रगति में ग्रामीण जनसंख्या सहित सबकी भागीदारी सुनिश्चित हो सके। इसके लिए यह अनिवार्य है कि हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं में तकनीकी ज्ञान से संबंधित साहित्य का सरल अनुवाद किया जाए। इसके लिए राजभाषा विभाग ने सरल हिन्दी शब्दावली भी तैयार की है। राजभाषा विभाग द्वारा राष्ट्रीय ज्ञान-विज्ञान मौलिक पुस्तक लेखन योजना के द्वारा हिन्दी में ज्ञान-विज्ञान की पुस्तकों के लेखन को बढ़ावा दिया जा रहा है। इससे विद्यार्थियों को ज्ञान-विज्ञान संबंधी पुस्तकें हिन्दी में उपलब्ध होंगी। हिन्दी के माध्यम से शिक्षित युवाओं को रोजगार के अधिक अवसर उपलब्ध हो सकें, इस दिशा में निरंतर प्रयास भी जरूरी है।

परंतु समस्या यह है कि, तकनीकी और आर्थिक समृद्धि के साथ-साथ अंग्रेजी पूरे देश पर हावी होती जा रही है। हिन्दी देश की राजभाषा होने के बाद भी हर जगह अंग्रेजी का वर्चस्व कायम है। हिन्दी जानते हुए भी लोग हिन्दी में बोलने, पढ़ने या काम करने में हिचकते हैं। इसलिए सरकार का प्रयास है कि हिन्दी के प्रचलन के लिए उचित माहौल तैयार किया जाए।

आया महीना जून का सूरज उगले आग

रचनाकार- निहारिका झा



हरित नीड़ को काट कर
नर ने किया है पाप.
धधक रही है धरती और
निकल रही है भाप.
चक्र ऋतु का बदल गया,
गर्मी बन गयी श्राप.
बारहों मास गर्मी पड़ती
बढ़े धरा का ताप.
सूख गए हैं नदी सरोवर
पानी की है त्रास.
जीव भला अब कैसे जिये
प्राणों को है त्रास.

जून में गिरता पहले पानी
धरा की बुझती प्यास.

आज ये देखो कैसा पल है
सूरज उगले आग.
अब तो चेत जाओ हे मानव
छोड़ो ये मनमानी.
बंजर धरती सूखे तरुवर
कहाँ मिलेगा पानी?
ऐसे आलम में फिर होगी
खतरे में जिनगानी.

समझो मानव छोड़ भी दो
अपनी ये मनमानी.

चंदा मामा आओ ना

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू



चंदा मामा आओ ना,
खीर पूड़ी लाओ ना.
इतने दूर क्यों रहते हो,
पास मेरे आ जाओ ना.

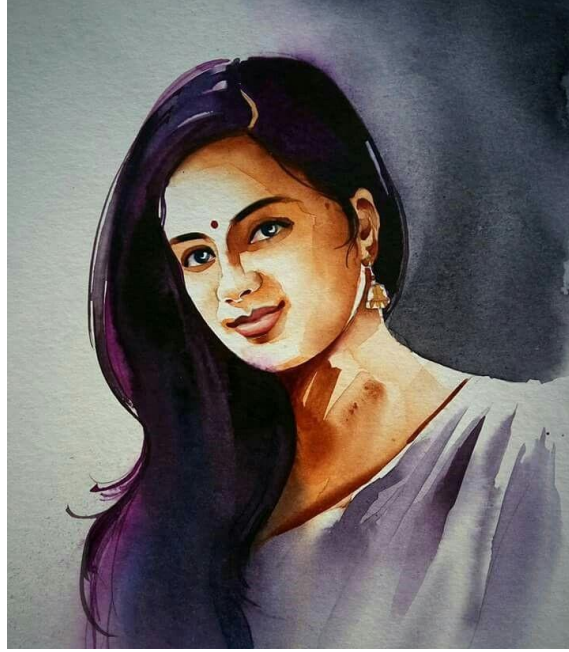
मिलकर खेल खेलेंगे,
साथ में झूला झूलेंगे.
स्कूल पढ़ने जाएंगे,
गीत खुशी के गाएंगे.

रात में ही चमकते हो,
दिन में नहीं दिखते हो,
क्या सूरज से तुम डरते हो?
या अंधियारा दूर करते हो.

हमको भी ले जाओ ना,
तारों की सैर कराओ ना,
कैसे दिखती वहाँ से धरती,
हमको भी दिखलाओ ना.

जिंदगी में रंग भरती बिटिया

रचनाकार- प्रियंका सौरभ



श्रुति शर्मा, अंकिता अग्रवाल तथा गामिनी सिंगला संघ लोक सेवा द्वारा घोषित सिविल सेवा परीक्षा 2021 में क्रमशः प्रथम, द्वितीय और तृतीय रैंक प्राप्त किया है. लड़कियों ने आज हर क्षेत्र में डंका बजा रखा है. पढ़ाई से लेकर नौकरी और व्यवसाय से लेकर अंतरिक्ष में छलांग लगाने के मामले में लड़कियों ने अपनी प्रतिभा से सबको परिचित करा दिया है.

पश्चिमी उत्तर प्रदेश के जिला बिजनौर की रहने वाली श्रुति शर्मा ने यूपीएससी 2021 प्रथम रैंक प्राप्त की है. यह उत्तर प्रदेश और विशेषकर जिला बिजनौर के लिए बेहद गर्व की बात है. जिस क्षेत्र को कृषि प्रधान क्षेत्र कहा जाता है और जहां पर शिक्षा के क्षेत्र में पिछड़ापन और जागरूकता का अभाव एक लंबे समय तक बना रहा; वहां पर एक स्त्री होने के नाते चुनौतियां और बढ़ जाती हैं. विवाह की जल्दी, बाहर पढ़ने जाने का संघर्ष, अच्छी संस्थाओं (केंद्रीय विश्वविद्यालय) का अभाव, मार्गदर्शन की कमी आदि बहुत कुछ झेलना पड़ता है, लड़ना पड़ता है. लेकिन ऐसे क्षेत्र से आने वाली कोई लड़की अगर यूपीएससी टॉप करती है तो यह भविष्य के लिए बहुत अच्छा संकेत है. इस बार टॉप १० में प्रथम तीन स्थान पर नारी शक्ति का बोलबाला रहा. यह भी समाज में स्त्री शिक्षा के बदलते स्वरूप को दिखाता है.

महिलाएं आने वाले समय में हजारों नवयुवतियों के लिए प्रेरणा की स्रोत बनेंगी. भारत जैसे परंपरागत समाज में भी अपनी प्रतिभा और लगन की बदौलत स्त्रियां अनछुई ऊंचाइयों तक पहुंच सकती हैं, उनकी वजह से यह आत्मविश्वास नई पीढ़ी की महिलाओं में पैदा होगा. सिविल सेवा परीक्षा में लड़कियां टॉप करती है तो जमीनी हकीकत भी सामने आती है. देश में 52 फीसदी लड़कियां स्कूल शिक्षा के स्तर पर ही पढ़ाई छोड़ देती हैं. क्यों हैं ऐसे हालात और क्या है इससे आगे निकलने का रास्ता? अगर ध्यान से देखेंगे तो पाएंगे हमारे देश में जब लड़कियां बड़ी हो रही होती हैं तो उनमें से ज्यादातर को उतने मौके नहीं मिलते शिक्षा और दूसरे क्षेत्रों में आगे बढ़ने के जितने की लड़कों को मिलते हैं. हमारा समाज घर और बाहर, अभिभावक और शिक्षक उनसे अपेक्षा ही नहीं करते कि वे घर के कामों के अलावा दूसरे काम भी अच्छी तरह से करें. वास्तव में उनके ऊपर सामाजिक-आर्थिक और भावनात्मक रूप से उतना निवेश नहीं किया जाता जितना कि लड़कों पर किया जाता है. परिणामस्वरूप लड़कियों में आगे बढ़ने का आत्मविश्वास, बंधनों से जूझने की हिम्मत ही विकसित नहीं होती. यह सभी के बारे में सच है कि अगर किसी बच्चे से अच्छे प्रदर्शन की उम्मीद की जाती है तो फिर उसकी आत्मछवि में और सुधार आता है. लेकिन लड़कियों के साथ तो प्रायः उल्टा होता है. स्कूलों में या घर में उनके काम की सराहना कम होती है, उन्हें शाबासी कम मिलती है. जिससे उसकी अस्मिता सिमट कर रह जाती है और इसका उसके प्रदर्शन पर नकारात्मक असर होता है. बेटियों की शिक्षा और फिर उच्च शिक्षा से कब और क्यों वंचित कर दिया जाएगा, इस संशय से वे हमेशा भयग्रस्त रहती हैं. देश की करीब 52.2 प्रतिशत बेटियां बीच में ही अपनी स्कूली पढ़ाई छोड़ रही हैं. अनुसूचित जाति और जनजाति को करीब 68 प्रतिशत लड़कियां स्कूल में दाखिला तो लेती हैं, लेकिन पढ़ाई पूरी करने से पहले ही स्कूल छोड़ देती हैं.

हमारे देश में लड़कियों या महिलाओं के जीवन के कई मोड़ों पर उन के ऊपर यह दबाव आता है जब उनसे घरेलू जिम्मेदारियों तक सिमट जाने की अपेक्षा की जाती है. पहला मोड़ तब आता है जब उनकी इंटर तक की पढ़ाई पूरी हो जाती है. जो लड़कियां इस दबाव से बच पाती हैं वे सुनहरे भविष्य के लिए आगे निकल जाती हैं, पर जो इस बाधा-दौड़ से आगे नहीं निकल पातीं, वे बेचारी हाईस्कूल या इंटर तक पहुंच ही नहीं पातीं. कोई लड़की इस अनचाही बाधा-दौड़ को लांघ पाएगी या नहीं, यह लड़की पर बहुत ही कम निर्भर करता है. यह तो सीधा परिवार की आर्थिक और सामाजिक हैसियत और आसपास के क्षेत्र में स्कूल की मौजूदगी और कानून व्यवस्था की बेहतर स्थिति पर निर्भर करता है. देशों में हम जिन बच्चियों को हम इंटर और हाईस्कूल आदि में टॉप करते

और लड़कों से बेहतर प्रदर्शन करते देखते हैं, उनमें से अधिकांश संपन्न तबके से होती हैं। गरीब परिवारों से लड़कियां प्रायः इस मोड़ से आगे नहीं बढ़ पातीं। गरीब परिवारों से लड़के तो भी आगे बढ़ने में सफल हो जाते हैं पर लड़कियों का आगे बढ़ना काफी मुश्किल होता है। एक बार लड़की बाधा-दौड़ को पार कर जाये तो उसे यह अहसास होता है कि यह मौका बहुत संघर्ष से मिला है, गंवाना नहीं है, तो वह पूरे समर्पण और मेहनत से काम को अंजाम देती हुई लड़कों की तुलना में बेहतर सफलता अर्जित करती है।

मेरे देश की बेटियां क्यों स्कूल छोड़ देती हैं। इस विषय पर बिहार और उत्तर प्रदेश में किए गए एक शोधपत्र में तथ्य सामने आए हैं कि बीच में पढ़ाई छोड़ चुकी हर पांच लड़कियों में से एक का मानना है कि उनके माता-पिता ही उनकी पढ़ाई में बाधक हैं। समाज में असुरक्षित माहौल एवं विभिन्न कुरीतियों के कारण आठवीं या उससे बड़ी कक्षा की पढ़ाई के लिए उनके परिवार वाले मना करते हैं। करीब 35 प्रतिशत लड़कियों का मानना है कि कम उम्र में शादी होने के कारण बीच में ही पढ़ाई छोड़नी पड़ती है। यह अध्ययन स्पष्ट इंगित करता है कि बेटियों की शिक्षा के मध्य अवरोध उनके परिवार के सदस्यों द्वारा ही खड़ा किया जाता है। हमारी बेटियां क्यों हतोत्साहित हैं? ऐसा क्या है, जो वह स्वयं को इन क्षेत्रों से दूर कर लेती है जहां समय और श्रम अधिक अपेक्षित हैं। शोध तो ऐसा बताते है कि 5 प्रतिशत लड़कियां ही विज्ञान, तकनीक, गणित और इंजीनियरिंग के क्षेत्र में अपना कैरियर नहीं बनाना चाहती। गणित और विज्ञान जैसे विषयों में लड़कियों का प्रदर्शन लड़कों से कमतर नहीं रहा।

व्यक्ति हो या देश, उसकी सफलता इसमें मानी जाती है कि उसमें निहित संभावनाएं उभर कर आएँ और इन संभावनाओं का भरपूर उपयोग हो। यदि कार्यबल में महिलाओं के लिए नए द्वार खुलते हैं तो इससे तमाम महिलाओं में निहित संभावनाओं को फलीभूत करने का मार्ग प्रशस्त होगा और हम अपने राष्ट्र की आबादी में मौजूद संभावनाओं का लाभ उठा सकेंगे। इसके लिए सरकार और निजी क्षेत्र दोनों को नए सिरे से आगे आना होगा। लड़कियों की यह कामयाबी सरकार के 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' अभियान को भी यकीनन बल देगी। इससे समाज में कमजोर पड़ रही वह सोच और भी बेदम होगी कि लड़कियां सिर्फ चूल्हे-चौके का काम करने के लिए होती है। इससे तमाम मां-बाप तक संदेश पहुंचेगा कि लड़कियां किसी भी मामले में कमतर नहीं है। अभिभावकों की बदलती सोच, सरकारी समर्थन के साथ-साथ खुद लड़कियों के तेवर भी जिस तरह बदल रहे

हैं, उम्मीद की जानी चाहिए कि उनकी सफलता का सिलसिला भविष्य में और अधिक व्यापक रूप से जारी रहेगा.

जल

रचनाकार- नंदिनी राजपूत



जल है तो आज है, जल है तो कल है.
जल से ही जीवन का, हर एक- एक पल है.

जल में पूरी दुनिया हैं, दुनिया में हैं सारे लोग.
जल को बचाना सीख लो, करो ना इसका दुरुपयोग.

जल में रहते कई जीव है, जल के कारण ही हम सजीव हैं.
जीवन में अगर जल नहीं, जीव- जंतु, प्राणी निर्जीव हैं.

खाने-पीने, नहाने में जल को काम में लाते हैं.
अगर एक दिन जल ना मिले, तो रह नहीं पाते हैं.

गर्मी के भयंकर दिनों में ऐसी तंगी हो जाती है.
पशु- पक्षी, छोटे जीवों की जान तक चली जाती है.

आओ सब मिलजुल कर ऐसा नेक काम करें.
घर के बाहर, छत, पेंडों पर जल कटोरा भरे.

बरसात के दिनों में यह बाढ़ का रूप ले लेती है.
गाँव -बस्ती के लोगों को चुटकी में बहा देती है.

आओ पेड़ों की अंधाधुंध कटाई पर रोक लगाएँ.
जान माल की हानि को, गंगा माता की कोप से बचाएँ.

जल को हम पीते ही नहीं, पूजा में उपयोग लाते हैं.
जीवन चले जाने पर गंगा में, अस्थि विसर्जन करने जाते हैं.

समझ लो मेरी एक बात, करो ना कोई ऐसा काम.
जल का सही उपयोग करो, ना करो गंगा माँ का अपमान.

आत्मनिर्भरता

रचनाकार- पिकी सिंघल



आत्मनिर्भर होना मानवीय गुणों में सर्वश्रेष्ठ गुण माना जाता है. दूसरों के बलबूते हासिल की गई सफलता के वह मायने कभी नहीं हो सकते जो अपने अथक प्रयासों के पश्चात प्राप्त सफलता के होते हैं. हमें अपनी किस्मत स्वयं ही लिखनी होती है. किस्मत के पन्नों की स्याही का रंग हमारा अपना मनचाहा होता है. किसी दूसरे व्यक्ति के द्वारा जिंदगी में भरे हुए रंगों की वह अहमियत कहां.

अपने प्रयासों द्वारा प्राप्त की गई छोटी से छोटी सफलता भी हमें असीम सुख एवं असीम आनंद की अनुभूति करा जाती है. संघर्ष के सफर में दूसरों का मार्गदर्शन प्राप्त करना एक अलग बात है परंतु पूरी तरह से उन पर निर्भर रहना हमें कभी भी सफलता के असली सुख का अनुभव नहीं करा सकता. उस स्थिति में मन सदैव उस अमुक व्यक्ति के प्रति नतमस्तक एवं स्वयं को झुका हुआ ही महसूस करते हैं जिसके बूते हमने जीवन के संघर्ष को जीता होता है.

सफलता छोटी हो अथवा बड़ी परंतु प्रयास सदैव बड़े होने चाहिए. इसलिए हमारे प्रयासों में कभी कमी नहीं होनी चाहिए. सफलता प्राप्त करने से पूर्व मानसिक संतुष्टि का अनुभव हमारे संघर्ष के सफर को काफी हद तक खुशनुमा और आसान बना देता है और यहीं से एक सच्चे और संघर्षशील मनुष्य की जीत का असली सफर शुरू होता है.

क्रोध विकराल परिस्थितियों का जन्मदाता

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी



आज के युग में हर व्यक्ति को जीवन के किसी न किसी पड़ाव में विपरीत परिस्थितियों का निर्माण होने के कारणों में कहीं ना कहीं एक कारण उसका गुस्सा या क्रोध भी होगा. अगर हम अत्यंत संवेदनशीलता और गहनता से उत्पन्न हुई उन परिस्थितियों की गहनता से जांच करेंगे तो हमें जरूर यह कारण महसूस होगा. गुस्से और क्रोध का वह छोटा-सा पल ऐसी अनेकों विकराल स्थितियों और परिस्थितियों को पैदा कर देता है जिसकी हमें उम्मीद भी नहीं रहती और फिर बड़े बुजुर्ग लोग कहते हैं ना कि जब चिड़िया चुग गई खेत अब पछतावे का होए.बस हमें उस गुस्से क्रोध के उस पल को काबू में रखने के मंत्र सीखने होंगे जो कि आसान है. सबसे पहले तो हमारी यह शत प्रतिशत कोशिश होनी चाहिए कि उस स्थिति को पैदा ही ना होने दें जिसके कारण क्रोध या गुस्सा या आक्रोश उत्पन्न हो.परंतु यह भी उचित बात है कि हम किसी भी परिस्थिति को कितना भी रोके परंतु स्थिति उत्पन्न हो ही जाती है या अन्य कोई यह स्थिति उत्पन्न कर ही देता है.तो ऐसी परिस्थिति में सबसे सरल मंत्र है उस परिस्थिति की हर बात,हर स्थिति को अत्यंत ही सहजता और सरलता से लें और गुस्से या क्रोध या आक्रोश को जगने से पहले ही तुरंत उसे समाप्त कर दें. उसके लिए सहजता व सरलता इन दो शब्दों या मंत्रों को गांठ बांध के रखना ही होगा.

साथियों, मेरा ऐसा निजी मानना है कि जितनी भी विपरीत, हानिकारक, कष्टदाई परिस्थितियां उत्पन्न होती है, उसका मूल कारण गुस्सा, आक्रोश, क्रोध में उठाया गया हिंसात्मक कदम होता है, जिसकी परिणीति में उन विपरीत परिस्थितियों का जन्म होता है.और अगर उन परिस्थितियों, स्थितियों को फलने फूलने के लिए, कथित प्रोत्साहन मिला तो फिर विकराल रूप बन इंसान को सबसे बड़ा और खतरनाक प्राणी बना देता है जिसे आज की स्थिति में अपराध के जगत का डॉन या कुख्यात अपराधी की संज्ञा दी जाती है.साथियों, हम अपने रूटीन जीवन के हर क्षण में काफी नजदीकी से

देखते होंगे कि कोई भी टॉपिक में, किसी भी क्षेत्र में, किसी भी विषय में, बात तभी बिगड़ जाती है जब वहां तावबाजी अर्थात् गुस्सा या क्रोध का जन्म होता है, और बात बढ़ कर कहासुनी, मारपीट, हत्या की कोशिश, हत्या, जख्मी, घायल इत्यादि से पुलिस, जेल और मामला अदालतों की दहलीज तक जा पहुंचती है और सामाजिक-आर्थिक-नैतिक हानि, मानहानि अलग होती है. साथियों, सोचिए इतनी भारी कीमत चुकानी होती है, मात्र एक छोटे से पल की जिस पर आसानी से नियंत्रण किया जा सकता था. जो भी व्यक्ति उपरोक्त विपरीत प्रक्रिया, गुस्से, क्रोध, से जेल तक में बंदी बनाया जाता है या सजा काटता है या अदालतों के चक्कर काटता है, विशेषज्ञों और अधिवक्ताओं के पीछे घूमता है, अगर हम उसकी प्रतिक्रिया जानना चाहेंगे तो हमें निर्णय करने में आसानी होगी कि मामला गुस्से और क्रोध की परिणीति का है और कहीं ना कहीं उस व्यक्ति के मन में गुस्से और क्रोध के प्रति पछतावे की बात सामने आती है. गुस्सा और क्रोध से बदले की भावना का उदय होता है और फिर बदले पर बदला के चक्रव्यूह में अनेक जीवों का जीवन कुचक्र में फंस कर खराब हो जाता है क्योंकि बदले का अंजाम बहुत दूर तक ले जाता है, जो गुटबाजी, गैंगवार सहित बात दूर तक चली जाती है अतः अगर हम अपने क्रोध, गुस्से को काबू में कर पाएंगे तो सहजता और सरलता रूपी मिठास का अपने आप उदय होगा हम स्वाभाविक रूप से मीठा बोलेंगे. हमारी वाणी में मिठास उत्पन्न होगी. चार लोग हमारे करीब आएंगे और हमारी सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी, मान सम्मान होगा. जिसका प्रभाव हमारी वर्तमान पीढ़ी, भावी पीढ़ी पर भी पड़ेगा क्योंकि बड़े बुजुर्ग कहते हैं कि 'बोया बीज बबूल का तो आम कहां से खाए' और बोया बीज मिठास का तो कुल पुरा मीठा होय. हम सामाजिक रूप में भी किसी व्यक्ति या परिवार को उसके कुल से ही कतारते हैं कि अच्छे कुनबे का परिवार है या अच्छे कुनबे का व्यक्ति है. अतः सभी कुभावनाओं, विपरीत विचारों, परिस्थितियों से ओतप्रोत इस गुस्से और क्रोध, आक्रोश को ही पूरी विपत्ति और कठिनाइयों की जड़ मानेंगे अतः उपरोक्त पूरे विवरण को अगर हम संकुचित और कुछ शब्दों या शब्दकोश में सीमित करें तो गुस्सा और क्रोध एक तेज तीखी मिर्ची के समान है, एक आग के समान है, जिसे फैलने या रोकने के लिए सहजता और सरलता रूपी गुड़ शक्कर या शहद की जरूरत होती है, जो मिर्ची रूपी धास को, आग रूपी तबाही को, सहजता सरलता और मीठी वाणी रूपी पानी से बुझाया जा सके. अतः इंसान को हर बात और हर स्थिति को अत्यंत ही सहजता और सरलता में ही लेना चाहिए ताकि क्रोध और गुस्से पर नियंत्रण हो सके यही मूल मंत्र है.

किलोल पत्रिका

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र



बच्चों की प्रिय 'किलोल' पत्रिका,
धरोहर है अनमोल पत्रिका.

सरस - सरल कविताएँ गाकर
मन में दे रस घोल पत्रिका.

देकर नवल ज्ञान लेखों से
पढ़ा रही भूगोल पत्रिका.

कहे कहानी दादी नानी जैसी
घर - आँगन रही डोल पत्रिका.

सजी - धजी मोहक चित्रों से
आँखें को देती खोल पत्रिका.

सारी रचनाएँ अप्रतिम हैं
पीट रही है ढोल पत्रिका.

ज्ञान - मनोरंजन पाओगे
कहती सबसे बोल पत्रिका.

मेरा कौन है पक्का साथी
देश को रही टटोल पत्रिका.

चित्र देख कर लिखो कहानी
कहती है उर - खोल पत्रिका.

अभी प्रकाशन नियमित मासिक
देती कभी न झोल पत्रिका.

संपादन की टीम, प्रेम को
लुटा रही बेतोल पत्रिका.

चमके नाम समस्त देश में
करती है किलोल पत्रिका.

तितली-भौरा-मधुमक्खी

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान



मोनू का एक छोटा सा फूलों का बगीचा था. उसमें गेंदा, चमेली, रातरानी, बेला, गुड़हल कनईल, हरसिंगार, बारहमासी गुलाब के पेड़ लगे हुए थे. फूलों के बगीचे में रोज तितलियां, भौरें, मधुमक्खियां फूलों का रस पीने आती थी. मगर इधर कई दिनों से मोनू बागिचे का सारा फूल तोड़ लेता था जिससे तितलियों, भौरों और मधुमक्खियों को फूलों का रस मिलना मुश्किल हो गया.

एक सुबह मोनू बागिचे में फूल तोड़ रहा था तभी रानी तितली उसके पास आ कर बोली मोनू भैया तुम बागिचे का सारा फूल मत तोड़ो इससे हमें भूखे रहना पड़ता है. मैं कई दिनों से भूखी हूँ. मेरी बात मान जाओ तुम. तितली की बात सुन कर मोनू बोल पड़ा “मुझे माफ कर दो तितली रानी हमसे बड़ी भूल हो गई. आज से मैं कुछ ही फूल तोड़ूंगा बाकी सारे फूल तुम्हारे लिए छोड़ दूंगा.” उसी समय वहां भौरा भी आ गया और मोनू से बोला मोनू भैया मेरा भी जीवन इन्हीं फूलों पर निर्भर है. मैं भी फूलों का रस पी कर जिन्दा हूँ इसलिए हमारे लिए भी फूल छोड़ दिया करो. तभी वहां मधुमक्खी भी आ गई और मोनू से बोली मोनू भैया हम मधुमक्खियों का जीवन भी इन्हीं फूलों पर निर्भर है. अगर हमें फूल मिलना बन्द हो जाएगा तो हम भी जिन्दा नहीं रह पाएंगी और न मधु बना पाएंगी. तुम्हें तो पता है हम फूलों के रसों से मधु बनाते हैं. इसलिए मैं भी चाहूंगी कि तुम हमारे लिए भी फूलों को रोज छोड़ जाया करो. ताकी मैं रोज तुम्हारे बागिचे में आ सकू. तभी मोनू बोल पड़ा मैं भी अपने बागिचे में तुम सब को न देख कर सोच में पड़ा रहता था आखिर हमारे बागिचे में

तितिलियां, भौरे और मधु मक्खियां क्यों नहीं आ रही है. आज हमें तितली रानी ने सब कुछ बता दिया मैं बहुत खुश हूं. मैं अब कभी सारे फूलों को नहीं तोड़ूंगा.

मोनू की बात सुनकर तितली रानी भौरा और मधुमक्खी सभी खुश हो गये और मोनू को बधाई देने लगे.

प्रेरणा

रचनाकार- अरविन्द कुमार कश्यप



जेठ की चिलचिलाती धूप, आग उगलती सूरज की तेज प्रकाश से मानों ऐसा प्रतीत हो रहा था कि धरती जल उठी हो. आज विमल निराश, उदास, हताश था. उसका आज ही हायर सेकेण्डरी का परीक्षा परिणाम घोषित हुआ था. वह परीक्षा में अनुत्तीर्ण हो गया था. जिससे उदास होकर रेलवे फाटक की ओर बढ़ रहा था. आज वह अपनी जीवन लीला समाप्त करने को सोच लिया था जब वह रेलवे ट्रैक पर पहुंचता है वैसे ही रेलवे फाटक बंद हो गया, जिसकी वजह से कार, बस रुकने लगा. एक ट्रक भी आकर रुका. उस ट्रक के पीछे में लिखा था "अलविदा ना कहना" "ऐ तुम असफल हो चुके हो क्या? सफलता की चाबी है मेरे पास - कड़ी मेहनत." विमल ट्रक में लिखा हुआ स्लोगन को पढ़ा उसी समय हसदेव एक्सप्रेस घड़-घड़ की आवाज करता हुआ चंद मिनटों में गुजर गया. रेलवे फाटक खुला कार, बस, मोटर साइकिल से लोगों की आवाजाही शुरू हुई. ट्रक भी धीरे-धीरे रेलवे फाटक को पार करता हुआ आगे बढ़ने लगा. विमल के अवचेतन मन पर ट्रक का स्लोगन गूंज रहा था. "अलविदा ना कहना" "ऐ तुम असफल हो चुके हो क्या? सफलता की चाबी है मेरे पास - कड़ी मेहनत." ट्रक थोड़ी देर में आँखों से ओझल हो गई. विमल का पैर ठिठक गया. उसका अवचेतन मन ने उसे सोचने पर मजबूर किया कि क्या वास्तव में तुमने कड़ी मेहनत की है? चेतन मन ने जवाब दिया नहीं? तो फिर क्या करने जा रहे हो? अवचेतन मन ने कहा. मन में उठा तूफान ठंडा पड़ गया. कदम आगे न बढ़ कर पीछे हुआ. घर की ओर लौट गया. घर पहुंचने पर पिता ने

तसल्ली दी. पिता की एक तसल्ली "कोई बात नहीं साल भर की ही बात है असफल हो गये तो क्या हुआ यही पर जिंदगी समाप्त नहीं हो जाता है. अपनी खुदी इतना कर बुलंद कि खुदा भी पूछे तेरी रजा क्या है?" ट्रक पर लिखा वाक्य और पिता की तसल्ली ने उस पर जादू कर दिया. मन लगाकर साल भर कड़ी मेहनत किया. प्रथम श्रेणी से बारहवीं उत्तीर्ण हुआ. बी.एस.सी,एम.एस.सी,बी.एड की पढ़ाई पूरी करके प्रतियोगी परीक्षा पास कर आज शासकीय स्कूल में व्याख्याता है. विद्यार्थियों को अपनी जीवन की सच्ची घटना बताकर प्रेरित करता है.

मन मेरे भाती गौरैया

रचनाकार- महेन्द्र साहू "खलारीवाला"



चूँ-चूँ करती आती गौरैया
बच्चों को है लुभाती गौरैया.
सुंदर, प्यारी, न्यारी गौरैया
मन मेरे भी भाती गौरैया.

इधर-उधर घर की बगिया में
उड़ती नखरे लगाती गौरैया.
कीट पतंगों को खाकर, अपनी
भूख को शांत कराती गौरैया.

घर-आँगन में इधर-उधर
फुदकती आती-जाती गौरैया.
किवाड़, खिड़कियों में अपनी
सुंदर घोंसला बनाती गौरैया.

बड़े प्यार से गौरैया अपने
बच्चों को दाना चुगाती है.
दादी भी मेरी, गौरैया की
खूब अच्छी कहानी सुनाती है.

गौरैया चूँ-चूँ करती आती है
घर में रौनकता छा जाती है.
कलरव सुन बिटिया रानी,
मन ही मन मुस्काती है.

मिलकर पेड़ लगाएँ हम

रचनाकार- महेन्द्र साहू "खलारीवाला"



पेड़ों को काटकर, दे रहा
है खुद को घाव तू.
बिन पेड़ों के बंदे, राह में
ढूँढ़ रहा है छाँव तू.

बिन पेड़ों के इस धरा पर,
तुम छाँव कहाँ से पाओगे.
पेड़ ही नहीं होंगे जमीं पर,
अपना जीवन कैसे बचाओगे?

वृक्ष है विहंगों का बसेरा,
होता है इनका डेरा.

वृक्ष से ही सम्पूर्ण जगत का
यहाँ होता नया सबेरा.

वृक्ष है अनमोल जगत में,
आओ करें इनकी सुरक्षा.
पेड़ व्यर्थ न काटे हम,
करें गहन मंथन,समीक्षा.

रिक्तस्थानों पर पेड़ लगाएँ,
हरियाली फैलाएँ हम.
धरती का श्रृंगार करें,
जीवन सुखमय बनाएँ हम.

धरती का श्रृंगार करें हम
मिलकर पेड़ लगाएँ.
पर्यावरण स्वच्छ बनाएँ,
हम हरियाली फैलाएँ.

एक नया भारत बनाएँ

रचनाकार- महेन्द्र साहू "खलारीवाला"



छोटी-छोटी बातों पर,
आपस में क्यों लड़ते-मरते हैं?
प्रेम से सभी मसौदों पर,
सुलह क्यों नहीं करते हैं?

जितनी ही तकरारें होंगी,
रार उतनी ही गहरी होगी.
फिर न सुलझ पायेगा कभी
दीवारें ही खड़ी होंगी.

धर्म, मजहब के नाम पर,
एक दूजे का रक्त बहाते हैं.
क्या तेरे-मेरे लहू का रंग,
जुदा-जुदा है, चलो मिलाते हैं.

तुझे भी दर्द होता है,
मुझे भी दर्द होता है.
जब हैवानियत के रूप में
भाई-भाई मारे जाते हैं.

नेक बनें हम एक बनें,
कौमी एकता का परिचय दें.
मिल-जुलकर सब एक साथ
भाईचारे का संदेश दें.

जाति, धर्म के तोड़ बंधन
समरसता फैलाता चल.
भेदभाव में क्या रखा है
प्रेम सद्भाव फैलाता चल.

आओ मिलकर हम सब
एक नया भारत बनायें.
जिसमें न कोई हिन्दू हो, न हो
कोई मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई.
यहाँ हम सब भारतीय हैं,
हैं आपस में भाई-भाई.

गलत के खिलाफ आवाज़ ज़रूर उठाएं

रचनाकार- पिकी सिंघल



एक कहावत जो अक्सर सुनी जाती है कि मुफ्त की सलाह नहीं देनी चाहिए, इससे मैं सहमत हूँ, किंतु प्रत्येक स्थिति में यह कहावत सही नहीं कही जा सकती. उदाहरणार्थ कोई बात जब केवल हम से ही न जुड़कर समाज के प्रत्येक व्यक्ति से जुड़ी हो तो हमें इस बात की प्रतीक्षा नहीं करनी चाहिए कि कोई हमसे मदद मांगेगा तभी हम मदद करने को अपना हाथ आगे बढ़ाएँगे .

खास सवाल यह है कि समाज में हो रही गलत घटनाओं के खिलाफ हमें अपनी आवाज़ बुलंद करनी चाहिए अथवा चुप्पी साध लेनी चाहिए? इसके जवाब में मैं सिर्फ इतना कहना चाहूँगी कि एक जिम्मेदार नागरिक और लेखक होने के नाते व्यक्तिगत तौर पर मैं यही समझती हूँ कि समाज को सही दिशा में ले जाने का दायित्व सभी नागरिकों और उससे भी अधिक लेखकों एवं साहित्यकारों का होता है क्योंकि हमारे लेखन को प्रतिदिन न जाने कितने ही लोग पढ़ते हैं और किसको पता कि उस लेखन से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में कितनों को प्रेरणा मिलती होगी और कितने लोग तो यह सोचकर हमारा अनुसरण करते होंगे कि यदि एक लेखक किसी विषय पर लिख रहा है तो यह समाज के लिए हितकारी ही होगा.

मेरे घर का मामला नहीं है, यह सोच हमारे भीतर कदापि विकसित नहीं होनी चाहिए, क्योंकि आज जो मामला किसी और के घर का है कौन जाने कल वह मामला हमारा व्यक्तिगत मामला बन जाए. क्या उस स्थिति में भी हम चुप्पी साधे रह सकते हैं, मूक बने रह सकते हैं? शायद नहीं.

चुपचाप बैठ कर तमाशा देखने वाली श्रेणी में हम लेखक नहीं आते क्योंकि हमारा तो कर्तव्य ही समाज को आइना दिखाना होता है. निष्पक्ष होकर समाज में चल रही गतिविधियों और घटनाओं को अपने लेखन के माध्यम से लोगों तक पहुँचाना न केवल हमारी साहित्यिक अपितु नैतिक एवं सामाजिक जिम्मेदारी भी है और अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन करने से हमें पीछे नहीं हटना चाहिए.

गलत दिशा में जा रही भीड़ का हिस्सा बनने से बेहतर है कि हम अपने लिए सही राह खुद चुनें, चाहे हमें उस राह पर अकेले ही क्यों न चलना पड़े. निस्संदेह उस राह पर हमें अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा, किंतु, चुनौतियों से घबराना और डर कर पीछे हट जाना हमारा धर्म नहीं होना चाहिए.

आओ वृक्ष लगाएँ हम

रचनाकार- सोनल सिंह "सोनू"



धूप में ढूँढे छाँव सब,
शहर हो या गाँव सब.
छाँव कहाँ से पाओगे,
जब वृक्ष नहीं लगाओगे.

देकर विकास का वास्ता,
काटे वन आहिस्ता-आहिस्ता.
पशु - पक्षी हुए सब बेघर,
बदलने लगे मौसम के तेवर.

वायु भी हुई प्रदूषित यहाँ
भूमिगत जल का हुआ क्षरण.

रोग व्याधियाँ बढ़ने लगी,
कष्टसाध्य हो रहा जीवन.

वसुधा का सर्वस्व हमारे हवाले
आओ हम सब इन्हें सम्भालें.
करें हम इनका सदुपयोग,
बनें हम सब इनके रखवाले.

वसुधा का श्रृंगार करें हम
इसे माँ सा प्यार करें हम.
हरी-भरी हो वसुधा हमारी,
वृक्ष लगाएँ बारी-बारी.

जीवन

रचनाकार- योगेश्वरी तंबोली



जीवन में कुछ पता नहीं तो भी जीना है,
जीवन में कोई मजा नहीं तो भी जीना है.

कल क्या होगा पता नहीं तो भी जीना है,
कभी हंसना है कभी रोना तो भी जीना है.

रंग - जीवन का उड़ गया तो भी जीना है,
आंखों से सपने बह गए तो भी जीना हैं.

लोगों का नजरिया बदला तो भी जीना है,
तकलीफों से भरा है मन तो भी जीना है.

कितने घोर तूफान आए तो भी जीना है,
चलते - चलते थक जाएं तो भी जीना हैं.

रिश्ते हो गए अपने पराए तो भी जीना हैं,
जिंदगी का यह सफर पल में बदल जाए.

बदलती दुनिया के साथ हमें बदलना है,
कभी पाना कभी खोना तो भी जीना है.

जिंदगी का यह सफर हमें हंसकर जीना है,
समझे सभी कि जीवन कितना मूल्यवान हैं.

साइकिल चलाएँ

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र



आओ! संकल्प लें, हम साइकिल चलाएँ
मित्रों संग पार्कों में, पिकनिक मनाएँ.

दो पहियों की होती है सस्ती सवारी,
साइकिल से हो गई दोस्ती हमारी,
कहीं पर खड़ी करें ताला लगाएँ.

सड़क पर रहता नहीं खतरे का डर,
आलस ही होता सौ रोगों का घर,
पर्यावरण स्वच्छ करें, ईंधन को बचाएँ.

साइकिल से हो जाता शारीरिक व्यायाम,
मांशपेशियाँ-फेफड़े स्वस्थ हों बिन दाम,
सरलता से पहुँचें कहीं क्यों समय गवाएँ.

दिल, गुर्दा, त्वचा, आँख एकदम रहते फिट,
रक्तसंचार-आक्सीजन बना दें तन-मन हिट,
थोड़ी दूर जाना हो साइकिल आजमाएँ.

हैंडिल को छोड़कर रेस न लगाएँ.
यातायात नियम मानें देख दाएँ-बाएँ,
आवश्यक हो टन्न-टन्न घंटी बजाएँ.

सर्वश्रेष्ठ साइकिलिंग, दिलाती है नाम,
राष्ट्रीय स्तर के मिल सकते ईनाम,
प्रतिदिन अभ्यास से, धन-यश कमाएँ,
आओ! संकल्प लें, हम साइकिल चलाएँ.

कच्चे आम

रचनाकार- नरेन्द्र सिंह नीहार



बाग-बगीचे फैली खुशबू,
लदे-फंदें हैं कच्चे आम.

कोयल कूके गीत सुनाये,
आंधी आये गिरे धड़ाम.

सुबह सवेरे सबसे पहले,
भाग दौड़कर जाते बच्चे.

जल्दी-जल्दी आम समेटें,
नमक लगाकर खाते कच्चे.

एक-दो अम्मा को ला देते,
चटपट चटनी खूब बनाती.

बाबू जी लेते चटकारे,
दादा-दादी के मन को भाती.

कैरी वाला पन्ना पीकर,
भैया साइकिल रोज चलाते,

गर्म हवा और लू से बचते,
गैस कब्ज को दूर भगाते.

खुशबूदार अचार बने तो,
अमरस के मँहगें हैं दाम.

भूख बढ़ाये और ललचाये,
गुच्छे वाले कच्चे आम.

आईना

रचनाकार- श्वेता तिवारी



एक छोटी सी लड़की थी. उसका नाम था नन्हीं. वो बात-बात पर गुस्सा होती थी. उसकी मां उसे हमेशा समझाती रहती कि 'नन्हीं बेटा, इतना गुस्सा करना अच्छी बात नहीं है. लेकिन फिर भी उसके स्वभाव में कोई बदलाव नहीं आया.

एक दिन परी अपना होमवर्क करने में व्यस्त थी. उसकी टेबल पर एक सुंदर-सा फूलों से सजा पॉट रखा था. तभी उसके छोटे भाई का हाथ उस पॉट से टकराया और गिरने पर उसके कई टुकड़े हो गए.

अब क्या, नन्हीं गुस्से से बौखला उठी. तभी वहां उसकी मां ने एक आईना लाकर उसके सामने रख दिया. अब गुस्से से भरी नन्हीं ने अपनी शक्ल आईने में देखी, जो कि गुस्से में बहुत ही बुरी लग रही थी. अपना ऐसा बिगड़ा चेहरा देखते ही परी का गुस्सा छू-मंतर हो गया. तब उसकी मां ने कहा, देखा नन्हीं! गुस्से में तुम्हारी शक्ल आईने में कितनी बुरी लगती है, क्योंकि आईना कभी झूठ नहीं बोलता. अब नन्हीं को पता चल गया था कि गुस्सा करना कितना बुरा होता है. तभी से उसने गुस्सा न करने का एक वादा अपने आप से किया.

सुबह की धूप

रचनाकार- श्वेता तिवारी



सूरज की धूप का रहता इंतजार
सूरज आए किरणों के साथ

सारी कलियाँ खिले हैं आज
धूप आ गई है आसपास

अंधियारा छिप जाता है
सारा जहां जग जाता है

चिड़िया चहकने लगी पेड़ों पर
दाना चुग रही धरा पर

ठंडी हवा बही सुखदाई
चहूं दिशा में मस्ती छाई

यह सुबह की बेला है
धरती का सुख अलबेला है

नई ऊर्जा एक नई कहानी
हम सब में आ जाती है रवानी

सुबह उठते हम करते योग
इनसे होते हम सभी निरोग

सुबह भली लगती है हमको
कसरत से कसते हैं तन को

सुबह की धूप का हमें रहता इंतजार
सूरज आए अपनी किरणों के साथ.

खुशियों को गले लगाना सीखो

रचनाकार- पिकी सिंघल



दोस्तों, इस बात से कोई इनकार नहीं कर सकता कि, हम सभी के जीवन में कुछ न कुछ समस्याएं, दिक्कतें, परेशानियां लगी ही रहती हैं. शायद ही दुनिया में ऐसा कोई शख्स होगा जिसे आज के समय में कोई समस्या या परेशानी ना हो. किसी को रोजगार की समस्या, किसी को संतान की परेशानी, किसी को आमदनी की समस्या, किसी को स्वास्थ्य संबंधी दिक्कत. कहने का मतलब है कि दुनिया में एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं होगा जिसे देखकर, जानकर हम यह कह सकें कि उस व्यक्ति को जीवन में कोई परेशानी ही नहीं है.

लेकिन दोस्तों, जीवन भी तो इसी का नाम है न. बिना दिक्कतों, परेशानियों, समस्याओं के व्यक्ति का जीवन नीरस बन जाएगा. इस बात से भी तो आप सब सहमत होंगे. संघर्ष करते हुए जीवन जीना ही जीवन का वास्तविक नाम है. यदि सब कुछ सहजता से प्राप्त हो जाए तो हमें जीवन में होने वाली कठिनाइयों का कभी अनुभव भी नहीं होगा और हमारी जिंदगी बिल्कुल नीरस हो जाएगी. इसलिए जीवन में कुछ ना कुछ बदलाव होना अति आवश्यक है.

यह तो बात हुई जीवन में आने वाली समस्याओं की, किंतु आप इस सब से भी तो सहमत होंगे ना कि जीवन में सुख की और खुशियों की भी कोई कमी नहीं होती है. कभी-कभी समस्याओं के चलते हम जीवन को इतना अधिक तनावग्रस्त बना लेते हैं कि खुशियां हमारे दरवाजे पर दस्तक दे रही होती हैं, किंतु हम अवसाद और तनाव की स्थिति में इस कदर डूबे होते हैं कि हम उन खुशियों को पहचान ही नहीं पाते और वे थक हार कर हमारे दरवाजे के बाहर से ही बाहर निकल जाती हैं. अपने जीवन में खुशियों का स्वागत करने का अवसर हमें कभी नहीं खोना चाहिए. छोटी से छोटी खुशी को पूरे दिल से मनाना चाहिए. अपनी खुशियों में हमें दूसरों को भी शामिल करना चाहिए और दूसरों की खुशियों को देख कर भी खुश होना चाहिए. सही मायनों में यही मानव जीवन है. एक दूसरे की परेशानियों और दिक्कतों में उनका साथ देने के साथ-साथ उनकी खुशियों में शरीक होना भी सच्ची मानवता की निशानी है. एक दूसरे के लिए अच्छा सोचना और उनके कल्याण के लिए कार्य करना हमें एक प्रकार से असीम संतोष देता है.

जैसा कि आलेख के शीर्षक से ही स्पष्ट हो रहा है कि हमें खुशियों को अपने गले से लगाना चाहिए. जिस प्रकार हम अपने किसी अति करीबी मित्र और स्नेही जन से काफी समय पश्चात मिलते हैं तो हम उसे झट से अपने गले से लगा लेते हैं और उस वक्त हमें असीम आनंद की प्राप्ति होती है. बिल्कुल उसी प्रकार खुशियों को भी ऐसे ही नहीं जाने देना चाहिए, उन्हें भी मित्र की भांति अपने गले से लगाना चाहिए.

कहने का तात्पर्य यह है कि खुशियों का स्वागत करें, खुले दिल से करें, नाचे गाएं, खुशियां मनाएं. समस्या तो वैसे भी जीवन में लगी ही रहती है किंतु उसका अर्थ यह नहीं कि उन समस्याओं में हम अपने आप को ही भूल जाए. अपनों की खुशियों के लिए भी हमें हमेशा तत्पर रहना चाहिए, क्योंकि यदि हम खुद ही खुश नहीं रहेंगे तो अपनों को क्या खुशियां दे पाएंगे. हमारे अपने भी हमें सदैव खुश देखना चाहते हैं. जीवन में होने वाली छोटी से छोटी तरक्की और सफलताओं को सेलिब्रेट करें, अपने और अपनों की खुशियों के मौकों पर छोटा-मोटा आयोजन करें. यदि यह भी संभव ना हो तो खुशियों को मनाने के और बहुत सारे तरीके होते हैं. जैसे आप कभी लंच या कभी डिनर के लिए अपनों के साथ बाहर जा सकते हैं, एक शाम अपनों के साथ घर के बाहर कहीं सुखद स्थान पर व्यतीत कर सकते हैं. अथवा अपने घर में ही अपने दोस्तों यारों को बुलाकर हंसी मजाक और एक भोज का आयोजन कर सकते हैं. कहने का तात्पर्य यह है कि यह हम सब जानते हैं कि हमें अपनी खुशियों को किस प्रकार मनाना है.

दोस्तों यह एक तथ्य है कि यदि हम दिल से खुशियों को नहीं मनाएंगे तो अगली बार खुशियां भी हम तक आने के लिए सौ बार सोचेंगी. जिस प्रकार हम दुख को अपने से अलग नहीं कर सकते उसी प्रकार खुशियों को भी हमें सहेज कर रखना चाहिए और अपनी खुशियों पर अपनी समस्याओं को कभी हावी नहीं होने देना चाहिए. सुख और दुख, खुशियां और परेशानियां हमारे जीवन का अभिन्न अंग हैं. इन्हीं को लेकर हमें जीवन में आगे बढ़ना होगा. एक के बिना दूसरा निरर्थक है. बिना खुशियों के समस्याओं का निराकरण और समाधान भी संभव नहीं है. उसी प्रकार जीवन में बिना समस्याओं के खुशियों का वास्तविक अर्थ हमें पता ही ना चले. इसलिए प्रत्येक स्थिति में समभाव रखकर चलें और अपने व्यक्तित्व को संतुलित बना कर अपनी और अपनों की खुशियों का विशेष ध्यान रखें. स्मरण रहे, मानव जीवन हमारे पिछले कई जन्मों के गुणों के परिणाम स्वरूप मिलता है इसलिए इसे यूं ही व्यर्थ ना जाने दें. इस जीवन को जितना अधिक सुंदर आप बना सकते हैं, बनाने का प्रयास करें. एक छोटी सी कोशिश एक छोटा सा प्रयास, करके देखो अच्छा लगता है.

पर्यावरण है, तो हम हैं

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र



एक बात को गाँठ बाँध लें,
पर्यावरण है, तो हम हैं.

धरती माता रही कराह,
क्यों मुझको कर रहे तबाह,
मिटी जा रही हरियाली,
हुआ प्रदूषण बलशाली.

हवा में घुली विषैली गैसें,
प्राणवायु की आँखें नम हैं.

किए आचरण प्रकृति विरुद्ध,
वायु - नीर भी रहे न शुद्ध,

बढ़ता जाता वैश्विक ताप,
उल्टे - पुल्टे क्रियाकलाप.

हरे - भरे सब पेड़ कट रहे,
नदियाँ जंगल कम हो रहे.

जीव - जन्तु भी रहे हैं घट,
कूप - सरोवर गए हैं पट,
पॉलीथिन महा दुखदायी,
कहीं न नियमित साफ-सफाई.

ऊर्जा - ईंधन के बचाव के,
हितकर सफल कार्यक्रम हैं.

बंद करें भूजल का दोहन,
त्यागें विलासिता सम्मोहन,
मिलजुल पौधे नए लगाएँ,
धरा पर हरियाली वापस लाएँ.

सच्चे पर्यावरण - मित्र हित,
पाठ प्रकृति के अनुपम हैं,
पर्यावरण है, तो हम हैं.

युवाओं में भारतीय संस्कृति के प्रति प्रोत्साहन

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी



युवाओं में भारतीय संस्कृति के प्रति प्रोत्साहन,
करवाएं हम अपनी जड़ों को भूल न जाएं,
भारत संस्कृति का खजाना है यह कम ना हो पाए,
घर-घर में भारतीय संस्कृति अपनाने मंत्र दिलाएं.

पारंपरिक कला शैलियों को कायम रखने,
हम ऐसा मिलकर रास्ता अपनाएं,
बेहतर जिंदगी की तलाश में,
हम अपनी जड़ों को भूल ना जाएं.

हम देख रहे हैं कैसे शहरीकरण स्वदेशी,
लोककला शैलियों को नुकसान पहुंचा रहे हैं,
बड़े बुजुर्गों की बातों को छोड़,
पाश्चात्य संस्कृति अपना रहे हैं.

आओ साथ मिलकर जन जागरण कराएं,
हमारी परम्पाओं कलाकृतियों में आस्था दर्शाएं,
लड़ना होगा हमें पाश्चात्य संस्कृति से,
हम अपनी जड़ों को भूल ना जाएं.

आओ हम सब पेड़ लगायें

रचनाकार- सुशीला साहू "विद्या"



आज धरातल की गोद में,
आओ हम सब पेड़ लगायें.
हरियाली अब चहुँ ओर दिखे,
धरती को हम मिलकर सजायें.

सतत करें पेड़ों की निगरानी,
संकल्प लें और पेड़ बचायें.
देखभाल करें संतान सम,
कोई नुकसान न पहुँचायें.

बेटा बेटा के नाम पर सभी,
आओ हम एक पेड़ लगायें.
हरी-भरी हो धरा हमारी,
ऐसा करके हम दिखलायें.

प्रकृति छटा हो अनुपम अवनी,
प्रदूषण हम जग से मिटायें.
पर्यावरण प्रदूषण की सफाई,
ऐसा प्रयास करके दिखायें.

वृक्षारोपण है पुण्य भारी,
इसे बचाकर धर्म कमायें.
भू हरितिमा फूल और पत्ती,
पृथा को हम इनसे सजायें.

प्रदूषण से धरा खत्म हो जायेगी,
जरा इस पर गौर फरमायें.
आज धरातल की गोद में,
आओ हम सब पेड़ लगायें.

असफलता से निराश न हो

रचनाकार- महेन्द्र साहू "खलारीवाला"



असफलता से निराश न हो
कुछ पाने की सिर्फ आस हो.
सफलता जरूर कदम चूमेगी
गर, जब्बा तेरे पास हो.

न थक, न रुक, हिम्मत जुटा
बस आगे ही बढ़ता चल.
कामयाबी जरूर मिलेगी
बस हौसला तू रखता चल.

शिकस्त हुई, कोई बात नहीं
जय होगी, एक दिन जरूर.
मंजिल तुम्हें अवश्य मिलेगी
बस धीरज तू रखता चल.

गर्दिश में है गर सितारें तेरे
कोई गम नहीं, कोई गम नहीं
तू लड़ सकता है चुनौतियों से
तू भी किसी से कम नहीं.

पिताजी

रचनाकार- श्वेता तिवारी



पिताजी की बात निराली,
मां तो होती है भोली भाली.
पिताजी से सारी उम्मीदें हैं,
परिवार की हिम्मत और विश्वास है.

उंगली पकड़कर चलना सिखाये,
जब पहला कदम भी नहीं रख पाये,
बचपन में खुश करने वाला खिलौना,
सबको बराबर का हक दिलाता महारथी है.

जीवन की डोर खींचने वाला एक सारथी है,
पिता हर फर्ज निभाता है.
जीवन भर कर्ज चुकाता है,
पिताजी वटवृक्ष समान है
जिनकी छाया में फल-फूल रहा परिवार है.

जीवन भर बोझ उठाकर हमें पढ़ाया है,
अपने पैरों पर खड़े हो जाएं.
ऐसा काबिल बनाया है,
समय बीत गया आगे बढ़ गए हम.

आज पिताजी के घर से हो चले पराए,
भीगे नैन से पिता ने अपने टुकड़े को सौंप दिया,
यह कैसा समय आया.
यह कैसा फर्ज निभाया.

सायकल

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"



सायकल चलाना, मजे उड़ाना, बचपन के दिन, याद करे.
दोस्तों संग जाना, रेस लगाना, ऊपर-नीचे, श्वास भरे.

हाथों को छोड़े, हैंडल मोड़े, मैदानों में, साथ बढ़े.
धरती भी बंजर, होता पंचर, पकड़ पहाड़े, सभी चढ़े.

वो घूमे बस्ती, करते मस्ती, सीट बैठ कर, राह चले.
ज्यादा इठलाते, हम गिर जाते, बैठ वहाँ पर, हाथ मले.

ये बात पुरानी, बनी कहानी, आओ मिलकर, याद करे.
बचपन भी बीते, जीवन जीते, कभी खुशी से, आँख भरे.

बादल

रचनाकार- श्वेता तिवारी



घने-घने काले बादल
आसमान पर छाए बादल

धरा की तपन मिटाने आए बादल
बारिश बनकर आए बादल

गरज-गरज और चमक चमककर
ढोल नगाड़े बजाए बादल

बिजली चमके चम चम चम
नाचे मोर छम छम छम

मधुर गीत सुनाए बादल
टपक रहे हैं हैं बूंदे टप-टप

बरखा की बौछारें छाई
चेहरे पर मुस्कान आ गई

झरने बह रहे हैं झर झर झर झर
घने घने हैं काले बादल
आसमान पर छाए बादल

बदली छाई

रचनाकार- टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला"



देखो कैसे बदली छाई.
हवा ने ली अंगड़ाई.

नीला अम्बर लगा गरजने,
दौड़ खूब बिजली लगाई.

बरसने लगा पानी जी भर,
हुई गीली धरती माई.

भीगती हुई चिड़िया रानी,
नीड़ लौट चली आई.

तैर रही कागज की,
नाव गली गली भाई.

गंगा उत्सव बना नदी उत्सव

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी



गंगा उत्सव मनाने को अब
राष्ट्रव्यापी नदी उत्सव बनाएंगे
मां गंगे की पीड़ा की कहानी
जन-जन तक हम पहुँचायेंगे.

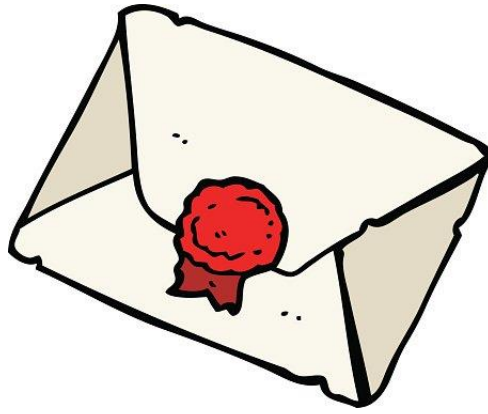
नदी उत्सव सम्मान की परंपरा को
पुनर्जीवित करने का बीज बोएगा
देश का हर नागरिक सचेत होकर
दूषित जल की पीड़ा सुलझाएगा.

गंगा की पीड़ा को हम सब तब समझ पाएंगे
जब कचरे का ढेर नदियों में पड़ा पाएंगे
नदियों को स्वस्थ रखने जनता जनजागृति लाएंगे
प्रेरणा के लिए हर साल गंगा उत्सव मनाएंगे.

मां गंगा को शुद्ध करने अनेक मिशन चलाएंगे
इन मिशनों को प्रेरणा दायक बनाएंगे
प्रकृति में संरक्षण का नियम अपनाएंगे
युवा शक्ति को इस शुभ काम में लगाएंगे.

चिट्ठी

रचनाकार- अशोक 'आनन'



दूर देश से आती चिट्ठी,
अपनों- सी बतियाती चिट्ठी.

गम में संग हमारे रोती,
खुशियां संग मनाती चिट्ठी.

पास नहीं जब होते अपने,
सचमुच खूब रुलाती चिट्ठी.

खूब झूमता बाप खुशी से,
बेटे की जब आती चिट्ठी.

भाव हृदय के, हृदय तक,
खुशी-खुशी पहुंचाती चिट्ठी.

हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई,
घर पर सबके जाती चिट्ठी.

भीड़ में आनन खो गए जो,
उनकी याद दिलाती चिट्ठी.

भौरै

रचनाकार- अशोक 'आनन'



गुनगुन- गुनगुन करते भौरै.
सबके मन को हरते भौरै.

डाल गले में मफलर पीला,
हीरो बनकर फिरते भौरै.

फूलों के घर होतीं दावत,
रस के व्यंजन करते भौरै.

घुंघट अपना खोलो रानी,
कलियों से ये कहते भौरै.

आनन में घंटों बातें होती,
तितली से जब मिलते भौरै.

डिम्मीजी

रचनाकार- अशोक 'आनन'



भोले-भाले डिम्मीजी,
रस के प्याले डिम्मीजी.

दस चपाती, चावल, सब्जी,
झट से खा लें डिम्मीजी.

धोती, कुर्ता, कांधे पर,
चादर डालें डिम्मीजी.

दिन भर ऊधम वे मचाते,
बैठे-ठाले डिम्मीजी.

झूमें यों, खेतों में ज्यों,
हंसतीं बालें डिम्मीजी.

कहो, उसे वे पल भर में ,
मीत बना लें डिम्मीजी.

नानी

रचनाकार- अशोक 'आनन'



मेरी प्यारी - प्यारी नानी,
रोज़ सुनाती नई कहानी.

बदन पे झुर्री, चश्मा आंख पे,
दांत एक भी शेष बचा ना.

हाथ में जिसके होती लाठी,
टेक जिसे वह आती-जाती.

मुझे खिलाकर खाती-पीती,
मानों, देख मुझे वह जीती.

उसकी है न कोई सानी,
अमृत जैसी उसकी वाणी.

जिए हजारों-लाखों साल,
मैं हूँ उसका प्यारा लाल.

बाल पहेलियाँ

रचनाकार- कमलेन्द्र कुमार श्रीवास्तव



1. अपना रास्ता कभी ना भूलूं,
शांति प्रेम मुझको अति भाए.
मैं पक्षी हूँ एक डाकिया,
झट से बोलो क्या कहलाये.
2. दुल्हन जब ससुराल मे आये,
बाबुल की याद में पेड़ लगाए.
थोड़ा बच्चों ध्यान लगाओ,
झटपट उसका नाम बताओ.
पहाड़ों की प्रथा निराली,
सुख सम्पदा देने वाली.

3. साथ-साथ मैं चलती जाऊँ,
पर कभी मैं मिल ना पाऊँ.
लेकिन सबको मैं पहुँचाऊँ,
बोलो बच्चों क्या कहलाऊँ.

4. बिजली से मैं चलता जाऊँ,
तेज हवा मैं देता जाऊँ.
दो अक्षर का मेरा नाम,
नाम बताओ भोलू राम.

उत्तर- 1. कबूतर, 2. मैती पेड़, 3. रेल की पटरियाँ, 4. पंखा

सुरम्य एवं सहज जीवन

रचनाकार- डॉ. माधवी बोरसे



गुरुर में रास्ते धुंधले पड़ जाएंगे,
खुद के अलावा किसी को कैसे देख पाएंगे,
प्रेम और जुनून के साथ आगे बढ़ते हैं,
जिंदगी को सफल और सरल बनाएंगे.

पूरी शिदत के साथ हिम्मत जुटाएंगे,
हर मंजिल पर खुलकर मुस्कुराएंगे,
चैन और सुकून के साथ आगे बढ़ते हैं,
जिंदगी को हसीन और खूबसूरत बनाएंगे.

स्वयं में भरपूर आत्मविश्वास जगायेंगे,
खुद को उच्च शिखर तक पहुंचाएंगे,
संपन्न और संपूर्ण होकर आगे बढ़ते हैं,
जिंदगी को बेहतरीन और श्रेष्ठ बनाएंगे.

गुरुर में रास्ते धुंधले पड़ जाएंगे,
खुद के अलावा किसी को कैसे देख पाएंगे,
प्रेम और जुनून के साथ आगे बढ़ते हैं,
जिंदगी को सफल और सरल बनाएंगे.

सृष्टि, कुदरत, प्रकृति

रचनाकार-डॉ. माधवी बोरसे



उड़ती चिड़िया खुला आसमान,
कितना प्यारा है यह जहान,

सुबह की रौनक, सुनहरी-सी धूप,
चमकाए यह हर एक स्वरूप,

कोयल की मीठी धुन,
पंछियों का चहचहाना सुन,

बारिश का टिप-टिप बरसना,
सभी का खिलखिलाते हुए हँसना,

खेत-खलियान, पेड़, पौधे और नदियाँ,
सागर, फूल, फल, पत्ते और यह वादियाँ,

प्यारी-सी महक इस प्रकृति से जो मिले,
सबको महसूस कर कर, हम और जी ले,

यूँ हवाओं का चलना,
सागर का बहना,

सुबह सवेरे उठकर, वातावरण से मिलना,
तितलियों को देखना, यूँ कलियों का खिलना,

सोते हुए चांद और सितारों को देखना,
बरसात में भुट्टों का सेखना,

बगीचे में टहलना, पहाड़ों पर चढ़ना,
चलते चलते, वातावरण की खूबसूरती को देखकर ठहरना,

बरसात में मिट्टी की खुशबू,
पंछियों से गुफ्तगू,

नीला आसमान, कड़कती बिजली, गरजते बादल,
ले आती है बचपन वापस, कर देती है कायल,

पेड़ के नीचे की छाया, और फल फूल की सुगंध,
यह प्रकृति से तो है, हमारा गहरा संबंध।
यह प्रकृति से तो है, हमारा गहरा संबंध।

मदर अर्थ, पृथ्वी

रचनाकार- डॉ. माधवी बोरसे



मैं हूँ सौरमंडल की सबसे सुंदर ग्रह,
जहां जीव जंतु का जीवन है संभव,
निवास करती है मुझ में अनगिनत प्रजातियां,
करती हूँ मैं सभी प्रकार की पोषण की उपलब्धियां.

29 प्रतिशत भाग है मेरा भूमि,
71 प्रतिशत भाग है मेरा पानी,
हरे भरे मैदान, जंगल और पर्वत मालाएँ,
नदियाँ, समुंदर, बर्फ की चट्टानें मुझ में समाए.

दिया तुमको जल, हवा और अन्न,
यह शुद्ध पवन और स्वच्छ वातावरण,
सौंदर्य से भरा हुआ अनुकूल पर्यावरण,
इसके बदले तुम क्यों फैला रहे मुझ में प्रदूषण?

मुझे कहते हो धरती मां और मदर अर्थ,
हर समय मुझ में असंतुलन बना कर, कर रहे हो अनर्थ,
मुझसे ही तो होता है तुम्हारा लालन पोषण,
तो फिर क्यों नहीं करते हो मेरा संरक्षण?

मुझ में है तुम सब का निवास,
स्वयं को और मुझे बचाने का करो प्रयास,
मुझे फिर से स्वच्छ और हरी भरी बनाओ,
जिम्मेदारी और जागरूकता को बढ़ाते जाओ.

अपने बच्चों पर अपनी मर्जी न थोपें

रचनाकार- पिकी सिंघल



कहा जाता है कि बच्चे ईश्वर का दूसरा रूप होते हैं और जिस घर में बच्चों की किलकारियां गुंजती हैं, उस घर में ईश्वर साक्षात् निवास करते हैं. कहने का तात्पर्य यह है कि बच्चों के बिना घर सूना सूना लगता है, बिना बच्चों के घर घर नहीं, केवल मकान लगता है. कुछ देर के लिए भी यदि हमारे बच्चे हमारी आंखों से ओझल होते हैं तो हमारी आंखें हर पल उन्हीं को ढूंढती रहती हैं. उनके वापिस घर आने का इंतजार करती रहती हैं क्योंकि बच्चों से ही घर में चहल-पहल होती है. बच्चों के बिना हमारे जीवन को पूर्णता प्राप्त नहीं हो सकती. यह सत्य है कि दुनिया में हर व्यक्ति का अपना एक अलग अस्तित्व होता है, किंतु भगवान द्वारा दिए गए इस अनमोल उपहार की तुलना किसी अन्य उपहार के साथ नहीं की जा सकती. बच्चे हमारे जीवन में खुशहाली लाते हैं और हमारा जीवन सार्थक बनाते हैं इस बात पर तनिक भी संदेह नहीं किया जा सकता.

यह बात हम सभी जानते हैं, परंतु इन सब बातों को जानने के पश्चात् भी हमारी हमेशा यही कोशिश होती है कि जैसा हम खुद हैं या जैसा अपने बच्चों को बनाना चाहते हैं हमारे बच्चे बिल्कुल वैसा ही बने, जैसा हम चाहते हैं कि वे सोचें, वे बिल्कुल वैसा ही सोचें. कभी कभी तो हम उन्हें मजबूर भी करते हैं कि उन्हें उसी दिशा में सोचना चाहिए जिस दिशा में हम उनसे सोचने के लिए कह रहे हैं यहां तक कि अधिकतर माता पिता और अभिभावक अपने बच्चों से यह भी उम्मीद करते हैं कि

रहन सहन, सोने जागने, उठने बैठने और यहां तक कि खानपान में भी उनके बच्चे उनकी ही आदतों को अपनाएं और पहनने ओढ़ने के मामले में भी उन्हीं का अनुसरण करें.

पर, क्या आपको लगता है कि यह सही है ? यह सत्य है कि कोई भी माता-पिता नहीं चाहेगा कि उनका बच्चा किसी दूसरे बच्चे से किसी भी सूरत किसी भी मामले में कम हो. हर माता-पिता यही चाहता है कि उनका बच्चा बाकी बच्चों से एक कदम आगे चले और जीवन में उन्नति और प्रगति हासिल करें. किंतु बच्चों को आगे बढ़ावा देने का तात्पर्य यह बिल्कुल नहीं होना चाहिए न कि बच्चे केवल और केवल उन्हीं का अनुसरण करें और अपने मन की ना सुनकर अपनी इच्छाओं का त्याग करते रहे.

पढ़ाई के मामलों में भी अभिभावक अक्सर बच्चों को वही विषय अपनाने के लिए कहते हैं जो वे चाहते हैं कि उनके बच्चे पढ़ें. कभी-कभी बच्चों की रुचि किसी अमुक विषय को पढ़ने में होती है, परंतु उस विषय के सकारात्मक और नकारात्मक पहलुओं को जानने और समझने के पश्चात माता पिता यही चाहते हैं कि उनके बच्चे उस विषय में जाएं या ना जाएं. जब इसका निर्णय बच्चे नहीं उनके माता-पिता करते हैं, तो बच्चों को दबाव के चलते वही विषय पढ़ने पड़ते हैं.

यह ठीक है कि एक उम्र तक बच्चों को इन चीजों की इतनी समझ नहीं होती कि वे अपने लिए कोई निर्णय ले सके, किंतु यदि हम बच्चों को निर्णय लेने की आदत नहीं डालेंगे तो वह दिन कभी नहीं आएगा जब हमारे बच्चे आगे बढ़ कर स्वयं अपने निर्णय लेंगे और जिम्मेदारी का अनुभव करेंगे.

कभी-कभी यह भी देखा जाता है कि हम जिस माहौल में पले बढ़े और पढ़ाई कर नौकरी करने लगे हम अपने आगे आने वाली पीढ़ी से भी यही उम्मीद करते हैं कि वह भी हमें देखकर हमारा अनुसरण करें और उसी राह पर चले जिस राह पर कभी हम चले थे. किंतु यहां यह बात बता देने वाली है कि हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि समाज में परिवर्तन आते रहते हैं. पीढ़ी दर पीढ़ी अंतर जिसे अंग्रेजी भाषा में जेनरेशन गैप का नाम भी दिया जाता है, स्वभाविक है. लगभग हर 5 साल में समाज में बहुत बड़े - बड़े बदलाव आते हैं जिसके अनुसार जीवन को दिशा देनी होती है. माना कि समाज हम लोगों से ही बनता है किंतु आधुनिक युग में हर क्षेत्र में प्रतियोगिता अधिक बढ़ गई है कि हम चाहते हुए भी बच्चों को बाध्य नहीं कर सकते कि वह हमारे हिसाब से ही आगे चलें. यह बात तो आप सभी मानते हैं ना कि आज का बच्चा बहुत सी बातों में अपनी उम्र से ज्यादा समझदार है. हम सभी अपने-अपने परिवारों में ऐसा कोई ना कोई उदाहरण हर रोज देखते ही रहते हैं जहां बच्चे

हमारी बड़ी से बड़ी समस्या का हल चुटकियों में निकाल देते हैं फिर चाहे वह तकनीकी का प्रयोग हो अथवा कोई अन्य कार्य, बच्चे कुछ ही पल में हमारी मुश्किलों का समाधान हमारे सामने लाकर रख देते हैं और हम दांतो तले उंगली दबा कर रह जाते हैं .तो क्यों ना अपने बच्चों को खुलकर जीने दें, उन्हें उनके निर्णय खुद लेने दें, और उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें. क्यों ना हम उनको यह भरोसा दिलाया कि हम उनके हर अच्छे बुरे समय में उनके साथ खड़े हैं.

हर वक्त अपनी मर्जी उन पर लाद देना किसी भी सूरत में सही नहीं है. हां ,यह अवश्य है कि हम उनका मार्गदर्शन करें और उन्हें सही गलत का साथ साथ ज्ञान भी देते रहें. हमारा फर्ज बनता है कि हम उन्हें समझाएं कि हर चीज के दो पहलू होते हैं और उन दो पहलुओं को ध्यान में रखते हुए ही हमें अपने जीवन के महत्वपूर्ण निर्णय लेने चाहिए और हर चुनौती का सामना बहादुरी से मजबूती के साथ करने के लिए सदैव तैयार रहना चाहिए .जीवन में सदैव सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हुए ही हमें आगे बढ़ना चाहिए और वसुधैव कुटुंबकम की भावना को मन से अपनाकर अपने साथ-साथ अपने परिवार समाज और राष्ट्र के विकास में अपना योगदान देने के लिए तैयार रहना चाहिए.

शिकायतें ना करें

रचनाकार- डॉ. माधवी बोरसे

शिकायत

क्यों करें किसी से शिकायत,
क्या स्वयं हैं हम इसके लायक,
खुद को आईने में झांके तो,
हम स्वयं तो नहीं, अपनी जिंदगी के खलनायक?

किसी ने एक बार दर्द दिया,
उसे एहसास करके, उस दर्द को बार-बार लिया,
नफरत की आग में जल-जल कर,
स्वयं के जख्म को ठीक क्यों नहीं किया?

शिकायतें शांति भंग कर देती है,
इंसान का सुख चैन छीन लेती है,
इसके साथ तो आत्मा,
तकलीफ में हरदम रहती है!

शिकवा, गिला बंद करो करना,
एक दिन तो सभी को है मरना,
चलो प्रेम से आगे बढ़ते हैं,
क्यों हर बात पर किसी से लड़ते रहना.

स्वयं को सुधारें, स्वयं को पहचाने,
स्वयं की अच्छाई और बुराइयों को जाने,
हमारे अलावा सब की गलतियों को नजरअंदाज करके,
स्वयं की गलतियों को भी माने.

किसी से कोई उम्मीद ना रखिए,
सिर्फ स्वयं की काबिलियत को परखिए,
शांति और नम्रता से जीवन को बिताएं,
जीवन में स्वयं को और सब को भी समझिए.

नकारात्मकता को दूर करें,
सकारात्मकता के साथ आगे बढ़े,
आज से गिला, शिकवा मिटाकर,
इंसानियत और जुनून के साथ हो जाते हैं.

संपूर्ण निष्ठा

रचनाकार- डॉ. माधवी बोरसे



बुरा वक्त दर्द दे जाता है,
अच्छे वक्त की उम्मीद भी लाता है,
दोनों का एहसास भी जरूरी है दोस्तों,
यही हमें जीवन में मजबूत बनाता है.

डर ना जाना कांटों को देखकर राहों में,
सिमट ना जाना कमजोरी के बाहों में,
खूबसूरत फूलों में कांटे तो होते ही हैं,
हम सब हैं परम शक्ति की पनाहों में.

जीवन का हर पल सपने की तरह बहा जा रहा,
देखें हमारा हर वक्त कहाँ जा रहा,
मुस्कुराइए या टूट जाए यह दो रास्ते हैं,
जीवन से हाथ मिला कर इसके साथ चले यह जहाँ जा रहा.

इस प्रकृति के हर चीज का एहसास करें,
हो जाते हैं बंदिशों से परे,
आजादी और खुशियों के साथ जिंदगी को जीते हैं,
पर साथ में इंसानियत के कार्य जरूर करें.

माँ का असीम प्रेम

रचनाकार- डॉ. माधवी बोरसे



सबसे भोली, प्यारी है माँ,
है यह तो प्रेम की प्रतिमा,
इसकी गोदी में बसा है सारा जहाँ,
इससे प्यारा एहसास है कहाँ,

मिश्री है इसकी वाणी में,
दर्द है इसकी कहानी में,
अनगिनत इसकी कुर्बानी है,
इसके होने से ही, हम बच्चों की जिंदगी सुहानी है.

प्रार्थना में ले सबसे पहले बच्चों का नाम,
दिन रात करती है हमारे लिए काम,
इसके प्यार से उतरे हम बच्चों थकान,
बच्चे ही है इसकी जान और शान.

मां जब तक हे हमारे पास,
हमारा हर दिन है खास,
चलो पूरी करें इनकी भी आस,
अब नहीं और वनवास.

सबसे भोली सी, प्यारी सी माँ,
है यह तो प्रेम की प्रतिमा,
इसकी गोदी में बसा है सारा जहाँ,
इससे प्यारा एहसास है कहाँ

आओ तारीफ़ और प्रशंसा करें

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी



कुदरत द्वारा रचित इस खूबसूरत सृष्टि में बेहद शक्तिशाली बुद्धिमान मानवीय प्राणी की रचना कर उसमें ऐसे अद्भुत गुणों की खान को मन, हृदय, मस्तिष्क रूपी शरीर के हिस्सों में इस तरह समायोजित किया है कि अपने एक एक गुण शक्ति को पहचान कर उसे निखारा जाए तो श्रेष्ठ मानव की मिसाल कायम करने में देर नहीं लगेगी परंतु हम मानवीय जीव एसी उलझन में फंस कर रह गए हैं कि आज एक मानव ही दूसरे मानव का दुश्मन हो कर उसके हर काम की ऐसी आलोचना करता है कि सकारात्मक भाव, कार्य, गुण, मेहनत को नकारात्मक, निरउपयोगी और बेकार बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ता और अहंकार रूपी मैं - मैं का बोध धारण कर उस विकार को अपनी शक्ति समझकर पालते है जबकि हम अपने दोस्तों की तो क्या, दुश्मनों के अच्छे कार्य की अगर थोड़ी सी तारीख प्रशंसा कर दें तो उसके लिए यह औषधि का काम करेगी क्योंकि तारीफ़, प्रशंसा एक फूल की सुगंध रूपी व सार्थक शक्ति है जो मनुष्य की सोई हुई उर्जा को जगा कर मंजिल तक पहुंचाने का काम करती है!! जब कोई हमारी तारीफ़ करता है तो हमारे व्यक्तित्व में मिठास घुलने लगती है. प्रशंसा की यह मिठास न केवल कानों में प्रवेश करती है बल्कि मन के द्वारा हृदय में घुल जाती है और हमारे मंजिल तक पहुंचने का कारण बनती है आज के आर्टिकल में हम इसी औषधि तारीफ़ और प्रशंसा रूपी सुगंध का विश्लेषण करेंगे.

साथियों बात अगर हम तारीफ़ और प्रशंसा दोनों शब्दों की करें तो दोनों में बहुत सामान्य अंतर हैं, इनमें मुख्य अंतर यह है कि एक तारीफ़ कृतज्ञता, बधाई, प्रोत्साहन या सम्मान की अभिव्यक्ति है, जबकि प्रशंसा एक उचित मूल्यांकन या योग्यता, मूल्य या उत्कृष्टता की मान्यता का अनुमान हैं। इसका उपयोग उस व्यक्ति को धन्यवाद देने के लिए किया जाता है जिसने आपके लिए कुछ अच्छा किया है या कुछ ऐसा किया है जो आपको लगता है कि उसे प्रशंसा या विचार दिया जाना चाहिए। तारीफ़ का एक अच्छा उदाहरण है - आप वाकई साहसी हैं। प्रशंसा किसी ऐसी चीज़ की मान्यता या चिंता है जो आकर्षक है। किसी वस्तु को अत्यधिक ध्यान में रखना, जैसे मूर्ति का काम, उसकी सराहना करने का एक उदाहरण है। प्रशंसा को कृतज्ञता की भावनाओं के रूप में परिभाषित किया गया है। प्रशंसा का एक उदाहरण है - मैं आपके भारी काम और समर्पण के लिए सार्वजनिक रूप से आपको धन्यवाद देना चाहता हूँ।

साथियों बात अगर हम तारीफ़ और प्रशंसा के सामर्थ्य व्यक्तित्व के गुणों की करें तो, एक श्लोक आया है

अष्टौ गुणाः पुरुषं दीपयन्ति, प्रज्ञा च कौल्यं च दमः श्रतुं च।

पराक्रमश्चबहुभाषिता च दानं यथाशक्ति कृतज्ञता च॥

अर्थ-सर्वश्रेष्ठ आठ गुणों से मनुष्य की बहुत प्रशंसा होती है-1 बुद्धि, 2 कुलीनता, 3.मन का संयम, 4. ज्ञान,5.बहादुरी,6.कम बोलना, 7.दान देना और 8.दूसरे के उपकार को याद रखना। इनका सामूहिक अर्थ, व्यक्ति अपनी बुद्धि का सही तरीके से उपयोग करना जानता है, वह अपनी जीवन में बहुत सफल होता है। जो व्यक्ति बिना सोच-समझे कोई काम करता है, उसे अक्सर असफलता का मुंह देखना पड़ता है। जिस व्यक्ति का व्यवहार सरल और सहज होता है, वह भी अपने इस व्यवहार कारण प्रसिद्धि पा सकता है। जबकि इसके विपरीत व्यवहार करने वाला व्यक्ति कभी किसी का प्रिय नहीं होता। जो व्यक्ति अपने मन या इंद्रियों को नियंत्रण में रखता है, वह साधु के समान होता है। ऐसा व्यक्ति महान गुरु बनकर भटके हुए मनुष्यों को रास्ता दिखाता है। यही काम करते हुए वह प्रशंसा और प्रसिद्धि पा सकता है।

साथियों ज्ञान यानी नॉलेज। जिस व्यक्ति के पास ज्ञान होता है, वह हर समस्या का सामना कर लेता है। साथ ही वह लोगों को सही सलाह देकर उनकी परेशानियां भी कम करता है। ऐसे लोग अपने ज्ञान के दम पर अलग जगह बनाते हैं और प्रशंसा पाते हैं। जो व्यक्ति पराक्रमी यानी बहादुर होता है

वह अपने दम पर प्रसिद्धि पाता है. विषम परिस्थिति में भी ऐसे लोग घबराते नहीं है और दूसरों की भी मदद करते हैं. इनका यही काम इन्हें लोकप्रिय बनाता है. जो व्यक्ति हमेशा सोच-समझकर बोलता है, कब क्या बोलना है यह जानता है, वह अपने जीवन में काफी प्रसिद्ध होता है. जो ज्यादा बोलते हैं, कब क्या बोलना है यह नहीं जानते, उनका कोई सम्मान नहीं करता. धर्मों में दान करना अनिवार्य माना गया है. जो व्यक्ति अपनी क्षमता के अनुसार दान करता है वह अपनी जीवन में सफलता भी पाता है और प्रसिद्धि भी पाता है. जीवन में कभी न कभी सभी को मदद की जरूर पड़ती है. जो लोग मदद करने वाले को भूल जाते हैं, उन्हें अपने जीवन में हमेशा परेशानियों का सामना करना पड़ता है. इसके विपरीत जो लोग मदद करने वाले को हमेशा याद रखते हैं और उनके सुख-दुख में साथ देते हैं, वे भी प्रसिद्धि पाते हैं.

साथियों बात अगर हम तारीफ प्रशंसा की जरूरत की करें तो, प्रोत्साहन की जरूरत बच्चों ही नहीं, बड़ों को भी होती है. घर से लेकर स्कूल-कॉलेज, सार्वजनिक स्थलों और कार्यस्थल तक इसकी आवश्यकता पड़ती है. शिक्षक की जरा सी तारीफ से बच्चे का आत्मविश्वास बढ सकता है तो पेरेंट्स का प्रोत्साहन उसे बेहतर भविष्य की ओर बढने को प्रेरित करता है. अरे वाह! तुमने तो इतना मुश्किल सवाल हल कर दिखाया, शाबाश! यह छोटा सा वाक्य नन्हे मस्तिष्क पर बड़ा प्रभाव पैदा करता है. सराहना के चंद लफ्ज रिश्तों को खुशगवार बना सकते हैं. मां, तुम्हारे हाथों में तो कमाल है! बच्चे की छोटी सी तारीफ मां की डिक्शनरी का सबसे खूबसूरत वाक्य बन सकती है.

साथियों बात अगर हम धार्मिक साहित्य पुराणों में तारीफ प्रशंसा की करें तो, महाकवि कालिदास लिखते हैं- स्तोत्रं कस्य ना तुष्टये. स्तुति अर्थात् प्रशंसा किसे प्रसन्न नहीं करती है वेदों, पुराणों में देवी-देवताओं की स्तुति के लिए विविध स्तोत्रों की रचना की गई है. रामचरितमानस के किष्किंधा काण्ड में जब हनुमान को सीता की खोज में समुद्र के पार जाना था, वह उदास और गुमसुम से बैठे थे. उस समय रीछराज जामवंत की प्रशंसा प्रोत्साहित करने वाली थी और उन्हें सागर पार जाने का हौसला देने वाली थी.

प्रशंसा हमें अच्छे कर्म के लिए प्रेरित कर सकती है या अहंकार पैदा कर गिरा भी सकती है. प्रशंसा को धीर-गंभीर लोग तुरंत भूल कर किसी अच्छे काम के लिए प्रेरित होते हैं. प्रशंसा प्रेरणा बन जाती है. परंतु मूर्ख प्रशंसा सुनकर अहंकार पाल लेते हैं. उनका 'मैं' और प्रबल हो जाता है. 'मैं' लगभग

दूसरी मौत का नाम है. हमें इससे बचना चाहिए, क्योंकि कुछ लोग हमारी प्रशंसा अहंकार बढ़ाकर हमें बर्बाद करने के लिए कर सकते हैं. यही प्रशंसा का जहर है.

साथियों चापलूसी और तारीफ दोनों का इस्तेमाल किसी की तारीफ करने के लिए किया जाता है. हालाँकि, चापलूसी और तारीफ में बड़ा अंतर है. चापलूसी और तारीफ के बीच मुख्य अंतर ईमानदारी में है. चापलूसी अत्यधिक या निष्ठाहीन प्रशंसा है जबकि तारीफ किसी चीज या किसी की वास्तविक प्रशंसा है. जैसा कि कहानियों में देखा गया है, एक व्यक्ति आमतौर पर अपने हितों को आगे बढ़ाने के लिए दूसरे की चापलूसी करता है. उसका मकसद उस व्यक्ति से कुछ उधार लेना, किसी चीज के लिए मदद लेना, अपने बारे में सकारात्मक धारणा बनाना या यहां तक कि नुकसान पहुंचाना भी हो सकता है. हालाँकि बहुत से लोग उनकी चापलूसी करते हैं, चापलूसी कभी भी किसी को प्रभावित करने का एक अच्छा तरीका नहीं है. यह व्यक्ति की जिद और बेईमानी को दर्शाता है.

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि आओ तारीफ़ प्रशंसा करें. तारीफ़ प्रशंसा रूपी फूल की सुगंध रूपी सार्थक शक्ति मनुष्य की सोई हुई ऊर्जा को जगा कर मंजिल तक पहुंचाया जा सकता है. तारीफ़ प्रशंसा औषधि का काम करते हैं जो हमारे व्यक्तित्व में मिठास कानों से होते हुए मन के द्वारा हृदय में घुल जाती है.

चालाक लोमड़ी

रचनाकार- डॉ. माधवी बोरसे



भरी दोपहर में एक दिन लोमड़ी भटके,
कर रही थी भोजन की तलाश,
दिखे उसे बेल में अंगूर लटके,
किया उसे तोड़ने का प्रयास.

लालची लोमड़ी कहने लगी स्वयं से,
इन स्वादिष्ट अंगूर को मुझे है खाना,
लगाई उसने छलांग जम-जम के,
थक हार के बैठी और किया बहाना.

उसने अपने मन को समझाया,
बहुत ऊँचाई पर है, इसमें मेरा क्या कसूर,
अपनी कमजोरी को छुपाया,
और कहा, यह तो अंगूर खट्टे होंगे जरूर.

अगर हम कुछ प्राप्त ना कर पाए,
कीमती वस्तु को तुच्छ साबित ना करें,
जीवन में परिश्रम करते जाए,
रहे आखरी तक अपने लक्ष्य पर अड़े.

बेबाक हो जाए

रचनाकार- डॉ. माधवी बोरसे



चुनौतियों का सामना करते हैं,
सच्चाई के लिए लड़ते हैं,
इंसानियत पर डट कर चलते हैं
चलो निडर बनते हैं.

आँसुओं को मुस्कान में बदलते हैं,
अच्छाइयों में ढलते हैं,
हिम्मत कभी नहीं हारते हैं,
चलो साहसी बनते हैं.

भ्रष्टाचार का बहिष्कार करते हैं,

गलत आदतों से लड़ते हैं,
असफलताओं से नहीं घबराते हैं,
चलो बहादुर बनते हैं.

आत्मविश्वास स्वयं में रखते हैं,
अवसरों को नहीं गवाते हैं,
रुके बिना, झुके बिना आगे की ओर बढ़ते हैं,
चलो वीरता लाते हैं.

डर का सामना करते हैं,
संघर्ष करने से नहीं डरते हैं,
शिक्षा प्राप्त कर, अपने अधिकार के बारे में जानते हैं,
चलो निर्भय बन जाते हैं.

विश्व रक्तदाता दिवस

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी



14 जून

विश्व रक्तदाता दिवस

वैश्विक स्तर पर प्रौद्योगिकी के विकास और आधुनिक सुविधाओं के बढ़ते ट्रेंड में अगर मानवीय जीवन को उम्मीद से अधिक सुख सुविधाएं उपलब्ध हुई है तो उतनी ही कठिनाइयां भी बढ़ी हुई है!! मसलन सुविधाओं के चलते शारीरिक हलचल प्रक्रिया में भारी कमी के कारण अनेक शारीरिक रोगों से मानवीय शरीर ग्रस्त हो गए हैं दूसरी ओर बढ़ते परिवहन संसाधनों से दुर्घटनाओं की मात्रा में स्वाभाविक रूप से वृद्धि होना लाजमी है!! अब इन दोनों परिस्थितियों में शारीरिक हानि होने से बढ़ती चिकित्सीय सुविधाओं में, झट से ऑपरेशन का ऑप्शन आ जाता है जिसमें सबसे पहले रक्त की ज़रूरत महसूस की जाती है बस!! यही से रक्तदाता का काम शुरू होता है क्योंकि बिना रक्त आपूर्ति के मरीज की मृत्यु होने की संभावना बढ़ जाती है जिसके कारण रक्तदान महादान का प्रोत्साहन देना अत्यंत जरूरी है जिसके कारण प्रतिवर्ष विश्व रक्तदाता दिवस भी 14 जून को मनाया जाता है ताकि स्वैच्छिक रक्तदान के लिए मानवीय जीव को जागरूक किया जा सके हम आज के आर्टिकल में रक्तदाता द्वारा रक्तदान करने के मुद्दे पर विस्तृत चर्चा करेंगे.

साथियों बात अगर हम भारत में रक्त की आवश्यकता की करें तो लेकर इलेक्ट्रानिक मीडिया के अनुसार, भारत में हर दो सेकेंड में एक मरीज को ब्लड ट्रांसफ्यूजन की जरूरत पड़ती है. देश में हर साल 5 करोड़ युनिट ब्लड की जरूरत होती है, पर इससे आधा खून ही मिल पाता है. इससे देश को रक्त की गम्भीर कमी का सामना करना पड़ता है. इसी के मद्देनजर, लोगों में जागरूकता बढ़ाने

के लिए हर साल 14 जून को विश्व रक्तदान दिवस मनाया जाता है। खून बाजार में नहीं मिलता, ना ही कृत्रिम ढंग से तैयार किया जा सकता है। इसे केवल दान से ही प्राप्त किया जाता है।

साथियों बात अगर हम, नेशनल ब्लड ट्रांसफ्यूजन काउंसिल की करे तो उसने रक्तदाताओं के लिए कुछ जरूरी सिफारिशों की हैं। जिसके अनुसार 18-60 वर्ष का कोई भी व्यक्ति, जो स्वस्थ और फिट है, जिसका वजन कम से कम 50 किलोग्राम या उससे अधिक है, पल्स रेट 60-100 के मध्य हो और हीमोग्लोबिन का स्तर कम से कम 12.5 ग्राम/डेसिलीटर हो, रक्तदान कर सकता है। साथ ही, उसे कोई संक्रामक रोग नहीं होना चाहिए। उन्होंने यह भी बताया कि रक्तदान के पहले पर्याप्त पानी और तरल पदार्थ का सेवन करें। नींद पूरी करें। रक्तदान दो तरह से किया जाता है। पहला, कोई व्यक्ति स्वेच्छा से रक्तदान कर सकता है, ताकि किसी की मदद हो सके। दूसरा, जरूरतमंद व्यक्ति के करीबी सीधे-तौर पर उसके लिए रक्तदान करें। रक्तदान की प्रक्रिया योग्य और प्रशिक्षित डॉक्टर पूरी करते हैं। इसलिए रक्तदान पूरी तरह सुरक्षित है। रक्तदाता के शरीर से एक बार में रक्त की इतनी ही मात्रा ली जाती है कि वह उसके लिए घातक न हो। भार के आधार पर 350 मिलीलीटर से 450 मिलीलीटर रक्त ही लिया जाता है।

साथियों बात अगर हम रक्तदान से पहले सावधानियों की करें तो, रक्तदान के तीन घंटे पहले आयरन से भरपूर भोजन, जैसे साबुत अनाज, अंडे, पालक, हरी पत्तेदार सब्जियां और खट्टे-मीठे फल खाएं, अधिक वसा न लें। रक्तदान के एक दिन पहले और रक्तदान के तीन घंटे बाद तक धूम्रपान न करें, अल्कोहल का सेवन न करें। रक्तदान के तुरंत बाद ज्यादा मेहनत वाला काम न करें। तुरंत बाद वाहन न चलाएं। प्रोटीन से भरपूर भोजन करें।

साथियों बात अगर हम अंतरराष्ट्रीय स्तर पर रक्तदान दिवस 2022 की थीम और उद्देश्यों की करें तो, विश्व रक्त दाता दिवस का नारा है रक्तदान एकजुटता का कार्य है। प्रयास में शामिल हों और जीवन बचाएं उन भूमिकाओं की ओर ध्यान आकर्षित करना जो स्वैच्छिक रक्तदान जीवन बचाने और समुदायों के भीतर एकजुटता बढ़ाने में निभाते हैं। सभी देशों को यह सुनिश्चित करने के लिए नियमित, अवैतनिक रक्त दाताओं की आवश्यकता होती है कि जिन लोगों को आधान की आवश्यकता होती है, उनके पास सुरक्षित रक्त तक पहुंच हो। जब रक्त की मांग में वृद्धि होती है या जब रक्त सेवाओं का सामान्य संचालन बाधित होता है, तो शांतिकाल के साथ-साथ आपात स्थितियों के दौरान रक्त आधान की आवश्यकता को पूरा करने के लिए जनसंख्या की व्यापक और

सक्रिय भागीदारी के साथ एक प्रभावी रक्त दाता कार्यक्रम महत्वपूर्ण होता है या आपदाएँ. जबकि एक उपयुक्त सामाजिक और सांस्कृतिक वातावरण मजबूत एकजुटता के साथ एक कुशल रक्त दाता कार्यक्रम के निर्माण का समर्थन करता है, यह आमतौर पर स्वीकार किया जाता है कि रक्तदान सामाजिक संबंधों के निर्माण और एक एकीकृत समुदाय के निर्माण में योगदान देता है.

साथियों बात अगर हम रक्तदान दिवस के महत्व फायदे और जागरूकता की करें तो, रक्तदान हर साल लाखों लोगों की जान बचाता है और प्रसव के दौरान बीमारियों, दुर्घटनाओं, कठिन प्रक्रियाओं या जटिलताओं से पीड़ित व्यक्तियों के पुनर्वास और कल्याण में सहायता करता है. प्राकृतिक और मानव निर्मित आपदाओं के लिए रक्त भंडार के उपयोग की आवश्यकता होती है. क्योंकि कुछ रक्त प्रकार असामान्य हैं, यह घटना असामान्य दाता प्रकारों की आवश्यकता को भी बढ़ावा देगी. रक्तदाताओं की आवश्यकता को बढ़ावा देने और बार-बार रक्तदान करने में विश्व रक्तदाता दिवस के महत्व को कम करके नहीं आंका जा सकता है. कई देशों में अभी भी दाता की कमी है, जिससे विश्व रक्तदाता दिवस रक्तदान के बारे में जागरूकता बढ़ाने और अधिक से अधिक लोगों की जान बचाने के लिए आपूर्ति बढ़ाने में महत्वपूर्ण है. रक्तदान करने के लिए जिन विशेष आवश्यकताओं को पूरा करना चाहिए, उनके बारे में सभी को जानकारी नहीं है. विश्व रक्तदाता दिवस मनाते हुए, संगठन इन मुद्दों पर बहस शुरू करने की कोशिश कर रहे हैं. सबसे खास बात यह है कि डब्ल्यूएचओ इस दिन लोगों को रक्तदान के लिए प्रोत्साहित करने के लिए एक अभियान का आयोजन करता है.

साथियों बात अगर हम यह दिवस मनाने के इतहास की करें तो, बता दें कि 14 जून को नोबल प्राइस विजेता कार्ल लैंडस्टेनर का जन्मदिवस है. ये एक साइंटिस्ट थे, जिन्होंने एबीओ ब्लड ग्रुप सिस्टम को खोजा था, ऐसे में इनके जन्म दिवस पर विश्व रक्तदान दिवस मनाया जाता है, इनकी खोज से पहले यह ब्लड ट्रांसफ्यूजन बिना ग्रुप की जानकारी के किया जाता था. जब कार्ल लैंडस्टेनर ने इसकी खोज की तो उन्हें सन 1930 में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया मई 2005 में, 58वीं विश्व स्वास्थ्य सभा के दौरान, दुनिया भर के स्वास्थ्य मंत्रियों ने सर्वसम्मति से स्वैच्छिक रक्तदान के प्रति अपनी प्रतिबद्धता और समर्थन की घोषणा की और डब्ल्यूएचए 5.13 के संकल्प के साथ, उन्होंने विश्व रक्तदाता दिवस को एक वार्षिक कार्यक्रम के रूप में नामित किया. 6 दिसंबर 2013 को, सबसे बड़ा रक्तदान अभियान आयोजित किया गया, जिसमें 61,902 प्रतिभागियों ने पूरे भारत में रक्तदान किया.

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि विश्व रक्तदाता दिवस 14 जून 2022 को मनाया जा रहा है. आओ स्वैच्छिक रक्तदान के लिए जागरूकता बढ़ाए. प्राकृतिक और मानव निर्मित आपदाओं में रक्तदान हर साल लाखों लोगों की जान बचाता है.

रक्तदान महादान

रचनाकार- पिकी सिंघल



कहते हैं कि दान इस प्रकार करना चाहिए कि एक हाथ से करें और दूसरे हाथ को पता ही ना चले, फिर चाहे वह दान किसी भी चीज का हो. क्योंकि दान करने का सबसे अधिक पुण्य तभी मिलता है जब वह गुप्त रूप से किया जाता है ना कि अपना कोई एहसान जताकर या उसका ढिंढोरा पीट कर. दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि जिस चीज का आप दान कर रहे हैं दान पाने वाले को उसका पूर्ण फायदा मिल सके, इसका भी हमें दान करते वक्त ख्याल रखना चाहिए.

सबसे बड़ा दान वह दान कहलाता है जिस दिन से हम किसी दूसरे की जान बचा सकें और उसे एक नया जीवन प्रदान करने में अपना सहयोग दे सकें. जी हां यहां हम बात कर रहे हैं रक्तदान की रक्त अर्थात् खून दान करना दान से अभिप्राय जब हम अपने शरीर का रक्त किसी और की जान बचाने के लिए प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से उसको देते हैं तो वह महादान बन जाता है क्योंकि रक्तदान से बड़ा कोई दान हो ही नहीं सकता.

सुरक्षित रक्त उत्पादों की आवश्यकता के बारे में जागरूकता बढ़ाने और अधिक से अधिक लोगों को रक्तदान करने हेतु प्रोत्साहित करने हेतु विश्व रक्तदान दिवस हर वर्ष 14 जून को विश्व भर में मनाया जाता है. इसीलिए विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा 14 जून को रक्तदान दिवस के रूप में घोषित भी किया गया है. इस कार्यक्रम का उद्देश्य रक्त दाताओं का आभार प्रकट करना भी है क्योंकि उन्होंने अपने शरीर के रक्त द्वारा किसी दूसरे की जान बचाने का जो पुण्य कार्य किया है उसके प्रति उनका धन्यवाद ज्ञापन करना भी उनमें एक नई स्फूर्ति और उमंग पैदा करता है.

यहां यह बात ध्यान देने योग्य है कि रक्तदान तभी दान माना जाता है जब एक स्वस्थ व्यक्ति अपनी इच्छा से अपना रक्त किसी दूसरे की सहायता के लिए देता है. जबरदस्ती लिया गया रक्त, दान नहीं कहलाता, अपितु किसी व्यक्ति की मर्जी के खिलाफ उसके शरीर से रक्त की एक बूंद भी निकालना गैरकानूनी है और इसे जुर्म की संज्ञा भी दी जाती है. कुछ लोग समाजसेवी होने के नाते सामुदायिक आपूर्ति के लिए रक्तदान करते हैं तो वहीं कुछ अन्य लोग आमतौर पर अपने परिवार या मित्रों की जरूरतों को पूरा करने के लिए अथवा उनकी जान बचाने के लिए जरूरत होने पर ही रक्तदान करते हैं. किंतु इस सबसे उनका मूल्य कम नहीं हो जाता रक्तदान तो रक्तदान ही है चाहे वह अपनों के लिए किया जाए अथवा गैरों के लिए. रक्तदान से बड़ा कोई दान हो ही नहीं सकता. समाज का एक वर्ग ऐसा भी है जो आर्थिक रूप से अक्षम होने के कारण और अपनी दैनिक जरूरतों को पूरा करने के लिए अपने शरीर का रक्त बेचता भी है जोकि अत्यंत दयनीय है.

रक्तदान करने से पहले रक्तदाता की छोटी सी शारीरिक जांच की जाती है क्योंकि अगर उसके रक्त में किसी प्रकार का कोई संक्रमण होता है तो वह संक्रमण उसके रक्त के माध्यम से उस व्यक्ति के शरीर में प्रवेश कर सकता है जिसको उसने अपना रक्त दिया है.

प्रत्येक व्यक्ति को अपनी शारीरिक क्षमता और डॉक्टरी परामर्श के अनुसार रक्तदान अवश्य करना चाहिए. पुरुष को अमूमन 3 महीने में एक बार और महिलाओं को 4 महीने में एक बार रक्तदान करने से कोई नुकसान नहीं होता, अपितु रक्तदान करने से हमारे शरीर को अनेक फायदे ही मिलते हैं. जैसे रक्तदान करने से हमारा खून पतला हो जाता है और रक्त संबंधी बीमारियां हमें नहीं होती, कैंसर से भी बचाव होता है और हमारे शरीर में से पुराना खून निकल जाने के बाद नया खून बनना आरंभ हो जाता है जिससे हमें एक नई स्फूर्ति और ताजगी का अनुभव होता है. परंतु फिर भी हमें बिना डॉक्टर की सलाह के रक्त दान नहीं करना चाहिए.

कुछ लोगों को भ्रम है कि रक्तदान करने से हमारे शरीर में कमजोरी आ जाती है जो कि निराधार है. कुछ एक स्थितियों को छोड़कर, रक्तदान करने से कोई कमजोरी नहीं आती. डॉक्टर से परामर्श करने के बाद यदि हम रक्तदान करते हैं तो रक्तदान करने से हमें नुकसान की जगह फायदा ही होता है, कमजोरी की जगह हमारा शरीर एक नई ऊर्जा से भर जाता है.

वहीं दूसरी ओर यह भी सत्य है कि यदि आप सचमुच रक्तदान करना चाहते हैं तो आपको स्वयं को कुछ व्यसनों से दूर रखना होगा, जैसे यदि सिगरेट और तंबाकू और इन जैसे अनेक अन्य मादक पदार्थों के सेवन से खुद को दूर रखकर हम रक्तदान करें तो ही हमारे रक्त का फायदा किसी दूसरे को

मिल पाएगा. यहां यह बात बार बार ध्यान देने योग्य है कि हमें रक्तदान करने से पहले हर बार डॉक्टर से परामर्श अवश्य करना चाहिए और अपने शरीर की छोटी सी जांच कराने के बाद ही हमें रक्तदान करना चाहिए.

अपने इस आलेख और आगे दी गई अपनी कविता के माध्यम से मैं आप सभी से यह गुजारिश करना चाहूंगी कि अपनी शारीरिक क्षमताओं के अनुसार हमें रक्तदान अवश्य करना चाहिए और एक स्वस्थ समाज के निर्माण में अपना थोड़ा सा योगदान अवश्य करना चाहिए क्योंकि रक्तदान ही वास्तव में मानवता का सबसे बड़ा सम्मान है.

रक्त दान है महादान
ना समझो इसको केवल इक ज्ञान
फूँके जब ये मुँदे में प्राण
बढ़ जाए हम सबकी शान
रक्त दान है जीवन दान
करता वही ये जो है गुणों की खान
जग में हो फिर उसका गुणगान
करकर पा लो अमिट पहचान
रक्त दान से बड़ा ना कोई दान
होता मानवता का यह सम्मान
करते हम जब ये कार्य महान
होता तब तब नव रक्त निर्माण
रक्तदान है सबसे महान
है करना प्रतिवर्ष लो ये ठान
खुशियां लौटाता बचाकर जान
ना समझो कभी इस को एहसान
मिलता जब जिसको यह मधुर पान
ज्यों पर गया पानी तब सूखी धान
ना हो स्वार्थ सा कभी जब कोई अभिमान
तभी कहलाएं हम सच्चे इंसान

यथार्थ मार्ग

रचनाकार- डॉ. माधवी बोरसे



कुरीतियाँ और बुरी आदतों को बदलें,
इस जिंदगी की राह में थोड़ा और संभले,
जितनी हो गई गलतियां उसे सुधारे,
अब तो अच्छाई की सीढ़ियों पर चढ़ ले

अपने सपनों को मरने ना दे,
बुराइयाँ हमारे हृदय में भरने ना दे,
मजबूत बना ले खुद को ऐसा,
कोई गलत संग का रंग चढ़ने ना दे.

दुनिया में स्वार्थ का है भरमार,
बात-बात पर अभिमान और अहंकार,
देवता नहीं तो इंसान बन के दिखाएं मानव,
कर दे घृणा और क्रोध का संहार.

अपनी अंतरात्मा को सुनें,
सही, गलत को चिंतन से चुने,
दीन, दया, नम्रता को जिंदगी में लाकर,
इंसानियत की राह पर सही सपने बुने.

कुरीतियाँ और बुरी आदतों को बदलें,
इस जिंदगी की राह में थोड़ा और संभले,
जितनी हो गई गलतियां उसे सुधारे,
अब तो अच्छाई की सीढ़ियों पर चढ़ ले.

परम शक्ति

रचनाकार- डॉ. माधवी बोरसे



किस बात का गुरुर है तुझे इंसान,
तू इतना भी है नहीं महान,
करने वाला वह, कराने वाला वह,
वही चला रहा है पूरा जहान.

कौन-सी जिम्मेदारी और क्या तेरा कामकाज है,
जो तेरे पास कल नहीं था, तो वह आज है,
जिम्मेदारी देने वाला वह, तो उस जिम्मेदारी को उठाने वाला भी वह,
उसकी बदौलत से ही, तेरे घर में अनाज है.

देखते जा, सुनते जा, बस यही तो है तेरे हाथ में,
जब वह चाहे तो तू अकेला, वरना जग है तेरे साथ में,
हर घटना घटाने वाला वह, सब कुछ बनाने वाला वह,
तो क्यों घमंड और अहंकार हे किसी बात में

किस समझदारी पर, तुझे नाज है,
किन-किन बातों से, तुझे ऐतराज है,
समझने वाला वह, समझाने वाला वह,
वही सब की जिंदगी का महाराज है!

तो फिर किस बात का गुरूर है तुझे इंसान,
तू इतना भी ना समझ, स्वयं को महान,
करने वाला वह, कराने वाला वह,
वही चला रहा है पूरा जहान.

महतारी

रचनाकार- अनिता चन्द्राकर



धरती के भगवान बरोबर, मया के कोठी हे महतारी.
कोरा मा सरग के सुख हे, दया के मूरत हे महतारी.
बड़े बिहिनिया अउ संझा ओहर दिनभर करथे काम
घाम-पियास ओहर जाने नहीं, करथे कब आराम.

लाँघन भूखन रहिके वोहर , सब झन ला राँध खवाथे.
पूजा -अरचन, सरधा ले करथे, गीत भजन ओ गाधे.
घाम मा छैहा बन जाथे, जाड़ मा बन जाथे घाम.
ओकर अँचरा के असीस मा, लइका मन कमथे नाम.

घर महकथे फुलवारी कस, अडबड़ ओ करथे तियाग.
जेकर संग महतारी के आशीष, ओकर जागथे भाग.

चलो स्कूल चलें

रचनाकार- सोनल सिंह "सोनू"



बीत गई गर्मी की छुट्टी,
अब स्कूल खुलने वाली है.
बच्चों कर लो तैयारी,
अब पढ़ने की बारी है.

नया गणवेश, नई पुस्तकें,
कर रहे हैं इंतज़ार
तुम्हारे लिए ही तो,
मध्यान्ह भोजन है तैयार.

नई कक्षा में नई-नई बातें,
सीखोगे हर दिन.
शिक्षक का कहना मानोगे,
रहो सहपाठियों से हिलमिल.

खेल-खेल में मिलेगी शिक्षा
गीत, कविता गाओगे.
सांस्कृतिक कार्यक्रम व खेलों में,
तुम नाम कमाओगे.
नवाचार से झटपट तुम सीख जाओगे.

न किसी का भय, न होगा डर,
सभी विषयों में तुम हो जाओगे बेहतर.
कब? जब आओगे तुम स्कूल रोज
भविष्य में करोगे मौज ही मौज.

बंटी के खिलौने

रचनाकार- संगीता पाठक



बंटी- "मम्मी, मुझे आपका मोबाइल चाहिये."

मम्मी- "बेटा ज़िद नहीं करो. छोटे बच्चे मोबाइल से नहीं खेलते."

बंटी- "मैं टाम एंड जेरी डाउनलोड करूंगा. प्लीज मम्मी दे दो ना मोबाइल."

बंटी के ज्यादा ज़िद करने पर मम्मी ने एक चाँटा जड़ दिया.

बंटी रोने लगा ऊं ऊं ऊं ऊं मम्मी गंदी है. मुझे मारती है.

दादी- "बच्चे पर हाथ उठाती हो बहू. हमारे सामने मत मारा करो वरना हम गाँव चले जायेंगे."

बहू- "क्या करूँ अम्माजी. आजकल ये मोबाइल से कार्टून खेलने लगा है."

दादी बंटी को पुचकारने लगी.

दादा जी- "क्या हो गया बंटी. क्यों रो रहे हो. दादा जी बाहर से घूम कर घर में प्रविष्ट हुये."

बंटी- "मुझे मम्मी मोबाइल नहीं दे रही है."

दादा जी-"बेटा तुम अभी छोटे बच्चे हो.बड़े हो जाओ फिर मोबाइल से खेलना.तुम अपने खिलौनों से खेलो.

दादाजी ने बंटी को गोद में बैठा लिया."

बंटी-"मेरे खिलौने पुराने हो गये हैं, दादाजी!"

दादाजी-"तुमको पता है तुम्हारे खिलौने रात में बातें कर रहे थे."

बंटी-"क्या बात कर रहे थे? दादाजी."

दादाजी-"वो तुम्हारा गुड्डे गुड़िया,डपली बजाने वाला बंदर भालू सब उदास होकर कह रहे थे.अब बंटी हमारे साथ बिल्कुल नहीं खेलता है.अब हमें यहाँ से कहीं और चले जाना चाहिये."

बंटी-"फिर क्या हुआ?दादाजी !"

दादा जी-"सारे खिलौने बहुत उदास हो गये थे.वे घर से बाहर जाने लगे तो बाहर में टॉमी बैठा हुआ था.खिलौनों ने टामी से कहा-क्या तुम्हें हमारे साथ नहीं जाना है ?"

तो टामी ने कहा "-मैं तो स्वामी भक्त हूँ चाहे बंटी मुझसे खेले या ना खेले. मैं तो यही रहूंगा वह हमारा मालिक है.मैं उसे छोड़कर कहीं नहीं जा सकता."

बंटी-"फिर क्या हुआ?दादाजी!"

दादाजी-"टामी की बातें सुनकर सारे खिलौने वापस तुम्हारी आलमारी में जाकर बैठ गये."

बंटी- "दादाजी, मैं अपने खिलौनों से खेलूंगा दादाजी.फिर तो वो कहीं नहीं जायेंगे ना?"

मम्मी बंटी के खिलौने लाकर उसके सामने रख दी.बंटी खिलौनों से खेलने लगा.उदास खिलौने फिर से मुस्कुराने लगे.दादा दादी भी बंटी को हँसते देख प्रसन्न हो गये.

2026 तक कचरा मुक्त शहर का प्रण लिए हैं

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी



कचरे को बाहर का रास्ता दिखाने संकल्प लिए,
जन जागृति अभियान को शुरू किए,
सूखा गीला कचरा अलग-अलग करने कार्य किये,
सबने 2026 तक कचरा मुक्त शहर प्रण याद किए.

संबोधनों में हर वर्ष स्वच्छता सर्वेक्षण
पुरस्कारों को अति विशेष महत्व दिए,
हम आजादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं,
स्वच्छ भारत मिशन आंदोलन चला रहे हैं.

सफाई के बारे में महात्मा गांधी ने भी कहा है,
सफाई ईश्वर की भक्ति के समान है,
कोविड में सफाई मित्रों ने गज़ब का साथ दिए,
सफाई मित्र सुरक्षा चैलेंज को अपनाए.

स्वच्छ भारत मिशन शहरी-2.0 शुरू है,
घर गलियाँ इलाके कचरा मुक्त हो रहे हैं,
वेस्ट टू वेल्थ विचार सुजन हुए,
पर्यावरण संरक्षण पर ध्यान केंद्रित किए.

मौसम

रचनाकार- उषाकिरण निर्मलकर



बारिश आई
खुशियाँ छाई.
गर्मी आया,
खूब तपाया.

ठंडी आई
ओढ़ो रजाई.
पतझड़ आया
पत्ते गिरवाया.

बसंत सुहाना,
गाओ गाना.
धिन-धिन नाना
धिन-धिन नाना.

अब तुम कविता लिखो

रचनाकार- उषाकिरण निर्मलकर



हम है छोटे बच्चे,
मन के हैं सच्चे.
सूरत के हैं भोले,
मीठे बोल बोलें.

कहना बड़ों का मानें,
अच्छी बातें जानें.
मिलजुल कर रहना,
सबसे यही है कहना.

हम बच्चों से सीखो,
अब तुम कविता लिखो.

बेहतर, प्रबल और नेक बने

रचनाकार- डॉ. माधवी बोरसे



एक जिंदगी है, दूसरे जन्म का हमें कोई पता नहीं.

इतना तो पता है कि हमें इस जिंदगी को प्रसन्नता पूर्वक, सकारात्मक सोच के साथ, अच्छे व्यवहार के साथ और प्रेम से व्यतीत करनी चाहिए. जिंदगी में उतार-चढ़ाव, मुश्किल परेशानी तो आती ही रहेगी. अगर दुख नहीं होगा फिर हमें सुख में आनंद कैसे आएगा, अगर रोना नहीं आएगा तो फिर हंसने में खुशी कैसे होगी, जिंदगी बहुत ही सरल सी नहीं हो जाएगी?

चलिए जिंदगी में कोई भी बाधा आए, परेशानियां आए, तकलीफ आए, उस पर अपनी सारी ऊर्जा अपनी परेशानियों पर लगाने की जगह हमें यह याद रखना चाहिए की अब हमने क्या सीखा और अपनी ऊर्जा हम अपने आप को बेहतर बनाने में लगाएं. जी कहना बहुत ही आसान है, लिखना भी, पर जिंदगी में रोना, हार मान जाना यह उससे भी ज्यादा आसान है, मुश्किल है, तो बाद में यह सोचना कि हमने अपने समय को, रोने में, किसी पर इल्जाम लगाने में, और जिंदगी को पहचानने में कितना वक्त जाया कर दिया है!

अगर इसी तरह जिंदगी जीनी है तो क्यों ना मुश्किल का सामना पहले ही कर लिया जाए.

जब भी हम बहुत ही खुशी में हो, बहुत गुस्से में हो, कोई निर्णय ना ले पर उस ऊर्जा को कोई ना कोई कार्य करने में व्यतीत करें, हमारा कार्य जरूर सफल होगा.

इस जिंदगी में, अगर हम देखें, तो हम पाएंगे कि हमने यह जीवन, अनुभव पाने, कुछ नया सीखने और अपने आप को बेहतर बनाने के लिए ही लिया है. बेहतर बनने का मतलब यह नहीं कि लोग हमारी सराहना करें, इसका मतलब यह है कि हम अंदर से अपने आप को प्रसन्नता से भरा हुआ महसूस करें, संतुष्ट महसूस करें, ऊर्जावान महसूस करें और बहुत ज्यादा आत्मबल स्वयं में हो.

उम्मीद कभी ना छोड़िए, अपने आप को हर क्षेत्र में बेहतर बनाइए जिसमें आप प्रसन्न महसूस करते हैं.

खेलकूद, संगीत, नृत्य, शिक्षा या कोई अविष्कार करके. स्वयं को पसंद करें, स्वयं से प्रेम करें, सबसे पहले स्वयं का सम्मान करें, अपना काम समय पर करें, लोगों को खुश करने की जगह, पहले स्वयं की खुशी का भी ध्यान रखें. बस जरूरी यह है कि हमारी वजह से किसी को शारीरिक या मानसिक तकलीफ ना हो पर इसकी वजह अगर यह है कि आप उनके पसंद का कार्य नहीं करते, विषय नहीं लेते या वस्त्र नहीं पहनते, विवाह नहीं करते, तो उन्हें नजरअंदाज करते हुए आगे बढ़ें. आपकी जिंदगी में किसी भी तरह की दखलअंदाजी करने का, किसी को भी अधिकार नहीं है, इसलिए मत करने दीजिए!

खुद को बेहतर बनाने के लिए खुद को कंफर्टेबल और स्वतंत्र रखना बहुत जरूरी है.

खुद को बेहतर बनाने के लिए जरूरत है कि हम स्वयं पर ध्यान दें क्योंकि कोई भी हमें बेहतर बनने से रोक नहीं रहा है. दूसरों से तुलना करना, कंपटीशन करना, जलना, लड़ना, उनके बारे में बुराइयां करना, छोड़ दीजिए. इस तरह की सोच आपको आगे बढ़ाने की जगह पीछे की ओर ढकेलती है, कमजोर बनाती है और बेहतर व्यक्ति बनने से रोकती है.

स्वयं को बेहतर बनाने के लिए यह भी जरूरी है कि हम यह पूरा ध्यान रखें कि हमारी संगति कैसी है? संगति ज्यादातर अच्छी या बुरी नहीं होती है पर हम जिस भी तरह का इंसान बनना चाहते हैं, हमारे जो भी लक्ष्य है वह हमारे दोस्तों से मिलते हो ना कि जुदा हो. फिर भी हमें बहुत से रिश्ते बचपन से ही मिले हैं, हमारे साथ है तो उनमें अच्छाइयों को परखने की कोशिश करें, उनकी

अच्छाइयों को अपने अंदर उतारें उनकी अच्छाइयों का कारण पूछें और जिंदगी को सही नजरिए से देख कर और बेहतर बनाएं.

ना बैठे अपनी परेशानियों को लेकर,
बेहतर बनना ही तो हमारा लक्ष्य है,
चलो बनाते हैं हर दिन को बेहतर,
इसी में हमारा बेहतर भविष्य है.

मेरी मम्मी

रचनाकार- उषाकिरण निर्मलकर



मेरी मम्मी सबसे प्यारी,
मुझको बहुत ही भाती है.

जब भी मैं रो देता हूँ तो,
खूब प्यार जताती है.

जब मैं शैतानी करता हूँ,
खूब डांट लगाती है.

रात-रात भर जागे वो और
मुझको वो सुलाती है.

मीठे-मीठे सपनें देकर,
मीठा गीत सुनाती है.

मेरी मम्मी सबसे प्यारी,
मुझको बहुत ही भाती है.

मेरी माँ के चरणों में चारो धाम बसता है

रचनाकार- उषाकिरण निर्मलकर



जिसका प्रेम पानें को, हर देवता तरसता है,
गोद में जिनके बचपन बैठ मेरा हँसता है.
वात्सल्य में जिसके कान्हा, वाणी में राम बसता है,
मेरी माँ के चरणों में चारो धाम बसता है.

नौ माह धारी गर्भ में, और धार लिया जीवन को,
सुखद स्वप्न देखी पर मार दिया यौवन को.
नवजीवन देने को ही, खुदा उसको रचता है,
मेरी माँ के चरणों में चारो धाम बसता है.

चरण धूलि लेके जिसकी सिर माथे धार लूं,
चरण धोऊँ अश्रुओं से सौ गंगा वार दूँ.

ईश्वर भी नाम जिनका, सुबह शाम जपता है,
मेरी माँ के चरणों में चारो धाम बसता है.

यही मेरा रामेश्वर, देखूं यहीं द्वारिका,
जगन्नाथ रहते यहीं, यहीं नाथ बद्रिका.
स्वर्ग यही है मेरा, यही मोक्षधाम रस्ता है,
मेरी माँ के चरणों में चारो धाम बसता है.

हानिकारक तंबाकू

रचनाकार- तुषार शर्मा "नादान"



इतनी हानि न कर पाएंगे,
चोर लुटेरे उचक्के डाकू.
जितना हानिकारक है यह,
जर्दा, खैनी, बीड़ी, तंबाकू.

करे खोखला ये भीतर से,
न मिलती शक्ति न ऊर्जा.
क्यों खाकर बर्बाद हो करते,
अपने शरीर का पुर्जा-पुर्जा.

थोड़े से आनंद के लिए,
जीवन अनदेखा करते हो.
नशा नाश की जड़ है सुन लो,
ज़हर नसों में भरते हो.

उद्योगों में जाकर तुम देखो,
बनाते कैसे गुड़ाखू-गुटखा?
गंदगी वहाँ की देखोगे तो,
खा जाओगे ज़ोर का झटका.

मिलता मेहनत से जो पैसा,
व्यर्थ ही इसे गँवाते हो.
क्या यही ज़हर अपनाने को,
तुम अपना स्वेद बहाते हो?

कर्क रोग जब हो जाएगा,
सारे सपने फिर उड़ जाएंगे.
काटोगे चक्कर अस्पताल के,
यमदूत भी पीछे पड़ जाएंगे.

सोचोगे, जब शल्य चिकित्सक,
उपचार करेंगे लेकर चाकू.
कितना हानिकारक है यह,
जर्दा खैनी बीड़ी तंबाकू.

वर्षा ऋतु

रचनाकार- विभा सोनी



बरखा रानी! बरखा रानी!
जल्दी से तुम आ जाओ.
धरती पर नये फूल खिलेंगे,
कोयल भी गाना गाएगी.
मोर मटक कर नाचेंगे,
खेतों में फसलें लहराएंगे.
बरखा रानी! बरखा रानी!
जल्दी से तुम आ जाओ.
कागज की हम नाव बनाकर,
पानी में घुमाएंगे.
अंबर के काले बादल को,
देख सभी मुस्कुराएंगे.

बरखा रानी! बरखा रानी!
जल्दी से तुम आ जाओ.
चारों ओर हरियाली देख,
बच्चे खूब मुस्कुराएंगे.
धरती पर नहीं फूल खिलेंगे,
सबके मन हर्षाएंगे.
बरखा रानी! बरखा रानी!
जल्दी से तुम आ जाओ,
जल्दी से तुम आ जाओ.

धीरज रखना सीखें

रचनाकार- डॉ. माधवी बोरसे



आज के समय में सभी के अंदर धैर्य की बहुत कमी है. बहुत बार कर्मचारियों से गलती हो जाती है पर उसे समझाने की जगह मालिक उस पर चिल्लाने लगते हैं, उन्हें डांटने लगते हैं. अगली बार जब भी वह गलती करेगा उसे मालिक की डांट याद आएगी. अगर यही बात हम उन्हें समझदारी से समझाई होती तो जब भी वह यह गलती करता तो जानता की इसके पीछे क्या नुकसान होगा.

बचपन में हम सभी को भी इस तरह की स्थिति का सामना कभी न कभी अवश्य ही हुआ होगा. कभी-कभी माता-पिता और टीचर्स में धैर्य की कमी से बच्चों को डांट पड़ती है यहां तक की मार भी पड़ती है. अब वह छोटा-सा बच्चा जब-जब गलती करेगा तो उसे उनकी डांट और मार ही याद आएगी. कितना अच्छा होता अगर उसके बड़े उसे प्यार से समझा दें और क्या सही है, क्या गलत है, इसमें फर्क बताते. पर नहीं कभी-कभी बड़ों को यह लगता है कि शॉर्टकट रास्ता अपना लिया जाए. इस डांट फटकार से उस बच्चे पर क्या असर पड़ता है उसका उन्हें अंदाजा भी नहीं होता. अब बड़े होते-होते जब/जब कोई और भी वह गलती करेगा तो वह बच्चा यही समझेगा की डांटना और फटकारना इसका उपाय है क्योंकि उसने भी यही देखा, समझा, और सीखा. कुछ बच्चे बड़े हो कर खुद को सजा देते हैं और कोई गलती करेगा तो खुद को सजा देगा इसीलिए आजकल बहुत से लोग कभी खुद को मारते हैं, चिल्लाते हैं, यहां तक की आत्महत्या तक कर लेते हैं क्योंकि उन्हें लगता है वह सजा के पात्र हैं. अगर हम इंसान हैं तो हमें हर बात में इंसानियत रखनी चाहिए. हम अपने बच्चों पर किसी तरह का दबाव तो नहीं डाल रहे हैं. क्या हम उन्हें छोटी-छोटी बात पर हाथ तो नहीं उठा रहे हैं? सबके सामने उनके बेज्जती तो नहीं कर रहे हैं?

माता-पिता और शिक्षक भगवान का रूप माने जाते हैं पर यह भी इंसानी व्यवहार नहीं है की हम अपनों से छोटों पर या किसी पर भी हाथ उठाए और क्रोध करें या मजाक उड़ाए.

किसी की गरिमा को ठेस पहुंचाना चाहे वह छोटा-सा बच्चा ही क्यों ना हो सरासर गलत है. गिड़गिड़ा कर, रोकर अपनी बात को मनवाना भी अधीरता है.

अक्सर एक वाक्य पूछा जाता है कि “अकल बड़ी या भैंस.” क्योंकि अगर इंसान दिमाग से और शांति से बड़ी से बड़ी लड़ाई लड़े तो वह लड़ाई बहुत आसानी से लड़ सकता है. अपने दिमाग के बल पर ना कि हाथ पैरों से और यही तो फर्क है इंसान और जानवर में.

जानवर अपने बच्चों को बोलकर और समझदारी से अपनी बातों को समझा नहीं सकते हैं पर इंसान कर सकता है. क्यों ना

हमें ऊपर वाले ने माता पिता, टीचर, मालिक बनाया हो पर इन सभी रिश्तों को हम प्यार, अच्छे व्यवहार, शिष्टाचार और धैर्य के साथ निभा सकते हैं.

छोटी-सी जिंदगी है तो क्यों ना हम सभी से प्यार, खुशी, शिष्टाचार, धैर्य, सम्मान, सत्कार, अच्छाई और समझदारी से पेश आए. समझे कि अगर हम उनकी जगह होते तो कैसा व्यवहार चाहते. ठीक वैसा ही व्यवहार हमें किसी की गलती पर करना चाहिए. विशेष रूप से छोटे बच्चे, अच्छे व्यक्ति के साथ.

हां! अगर कोई अपराध करे तो, उन अपराधियों के खिलाफ़ कानूनी कार्यवाही अवश्य की जाए. यदि हमें जीवन में शांति चाहिए, प्रसन्न मन चाहिए तो हमें खुद को और दूसरों को हर बात समझदारी और धैर्य के साथ समझानी होगी.

पहले तो हम अपने आप को यह बात समझाएं की हर एक समस्या का समाधान हो सकता है. किसी पर भी अपने फैसले को ना थोपें. बहुत से माता-पिता अपने बच्चों की शादी जल्दबाजी में करा देते हैं क्योंकि उनके दादा-दादी या नाना-नानी की यह इच्छा होती है कि वे अपने नाती पोते की शादी देख पाएं. पर उन बच्चों के भविष्य का क्या? तो आप उन्हें प्यार और स्नेह देते हुए समझाएं!

बहुत से बच्चे शादी होते ही कुछ महीनों में अपने मां-बाप से अलग हो जाते हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि वह कभी नहीं समझेंगे की उनकी बहू-बेटी उनसे क्या चाहते हैं. पर वो यह भूल जाते हैं की जब

से वह मां-बाप बने है तो उनकी चाहत के लिए ही तो जी रहे हैं.क्यों ना हम भी उन्हें ठीक वैसे ही समझाएं जैसे वह हमें बचपन में समझाते थे.जब उन्होंने हमें बचपन में नहीं छोड़ा तो हम उनको उनके बुढ़ापे में अलग कैसे कर दें.

धैर्य से काम लें,हर बात पर जल्दबाजी, दुर्व्यवहार करना, अपशब्द का उपयोग करना बंद करें.

अगर किसी की गलती करने पर आप उस पर चिल्लाते हैं और अपशब्द बोलते हैं तो वह तो गुनाहगार है पर आप भी मानसिक रूप से बीमार है.खुद को पहचाने कि हम उस शक्ति से बने हैं, हम में बहुत सारा, धैर्य, स्नेह, शिष्टाचार और इंसानियत है.

शाला प्रवेश उत्सव गीत

रचनाकार- श्वेता तिवारी



चलो,चलो माँ! चलो,चलो पिताजी!
चलो,चलो माँ!चलो,चलो पिताजी!
सरकारी स्कूल में दाखिला कराओ जी,
सरकारी स्कूल में नाम लिखा दो जी,
मुझे पढ़ने जाना है कुछ कर दिखाना है.

वहाँ मिलती पुस्तक,
मिलते हैं गणवेश.
भोजन गरमा गरम,
खेल खिलौना सारे,
छात्रवृत्ति, निशुल्क साइकिल मिलती,
सरकारी सुविधा है मिलती.

सब का लाभ उठाएंगे.
गीत संगीत में हम अपना नाम कमाएंगे,

गणित विज्ञान की दुनिया में परचम लहराएंगे.
पढ़ लिख कर अब सपने पूरे करेंगे.

चलो चलो माँ! चलो चलो पिताजी!
चलो चलो माँ! चलो चलो पिताजी
सरकारी स्कूल में दाखिला कराओ जी,
सरकारी स्कूल में नाम लिखा दो जी.

सेना देश की शान है

रचनाकार- ऋषि प्रधान



सेना देश की शान है,
हम सबका अभिमान है.

देश में बसते हैं हम सब और,
देश में बसती उनकी जान है.

तपती गर्मी कड़क ठंडी हो,
चाहे आंधी हो या तूफान.

मेरे देश के वीर जवान रहते सीमा पर सीना तान.
सीमा पर रहते हैं डटके देश का अभिमान है,

हमको देश के हर वीर जवान का करना सम्मान है.
जल में भी हैं वो जीवन जीते,

हवा में करते विचरण हरदम.
थल में चलते रहते हरदम,

क्या पर्वत,क्या पहाड़,क्या
बर्फ,क्या मैदान,

हम घरों में रहते निश्चिंत होकर
क्योंकि वो करते हमारी रक्षा लगाकर अपनी जी जान.

हमें अपने सेना पर खूब अभिमान है,
हर सैनिक का हमको अब करना सम्मान है.

संज्ञा

रचनाकार- सुषमा बग्गा



किसी व्यक्ति का नाम
किसी वस्तु का नाम
किसी स्थान का नाम
संज्ञा कहलाता है,
संज्ञा कहलाता है,

राम भी है संज्ञा
सुषमा भी है संज्ञा
बस्ता भी है संज्ञा
छाता भी है संज्ञा
स्कूल भी है संज्ञा
रायपुर भी है संज्ञा

इस दुनिया में हो कोई भी नाम
संज्ञा कहलाता है, संज्ञा कहलाता है

मेला

रचनाकार- अनिता चन्द्राकर



चारो कोती मनखे मनखे, अब्बड़ सजे हवय जी मेला.
ढेलवा अउ रहचुली नंदागे, चाट गुपचुप के सजे हे ठेला.

नदिया मा कर के असनान, साधु संत मन करत हे धियान.
बेचावत हे मंदिर के सीढ़िया मा, नरियर, धतूरा, बेल के पान.

भारी भीड़ हे मंदिर मा, दरसन करे बर भोले भगवान के.
सुमरत हे सब महादेव ला, भरत हावय जी पेटी दान के.

आनी बानी के जिनिस दिखत हे, सजे खेलउना के बजार.
मिठई लेवत हे कतको, कतको मन लेवत हे खुसियार.

फुग्गा उड़ावत अकास मा, बाजत हे बाँसरी, डमडम बाजा.
देख झुनझुना, नोनी रोवत हे, राजू समझत हे खुद ला राजा.

कोनो ला भजिया बरा सुहाथे, पेठा जलेबी हा जी ललचाथे.
चुरी फुंदरी टिकली मुंदरी, मनहारी हर महतारी मन ला भाथे.

होगे बेरा अब घर लहुटे के, मुड़-मुड़ के देखत हे लइका मन.
थकय नइ दिन भर घूम के वोमन, सब ले सुग्घर होथे बचपन.

मोर छत्तीसगढ़

रचनाकार- धारणी सोनवानी, बारहवीं, शा. उ. मा. वि. पहंडोर पाटन दुर्ग



मोर छत्तीसगढ़ के अद्भुत लीला,
ईहा हावै बत्तीस जिला

प्यार अउ बिसवास हे.
मन मा अब्बड़ आस हे .

इहाँ होथे अड़बड़ धान
रेंगथन हमन छाती तान.

एक - दूसर ल करथन प्यार,
सौगधर हावै छोटे परिवार.

करथन बड़े के सम्मान
लइका मन हम पाथन मान.

छोटकुन हे हमर प्रदेश
नइ हे इहाँ थोरको कलेश.

प्रकृति

रचनाकार- प्रमेशदीप मानिकपुरी



लगाये नहीं पेड़ तो फिर छाँव कहाँ से पाये,
काटी-काटी जंगल घटे हरियाली कहाँ से आये.

करले जतन प्रकृति का यह जीवनदायिनी है,
सकल जन कल्याण की यही तो प्रदायिनी है.

स्वार्थ के वशीभूत हो पेड़ काटे हजार,
जंगल काट के किया वहाँ व्यापार.

ऐसे ही चलता रहा तो जीना और दूभर होगा,
प्रकृति जब ताँडव करेगी केवल मरना होगा.

आओ करें एक प्रयास प्रकृति संग जुड़ने का,
स्वार्थ छोड़कर प्रकृति की ओर रुख करने का.

तभी धरा पर फिर से हरियाली आ पायेगी,
फिर बादल नियत समय पर बारिश लायेगी.

शुरुआत करें हम सब वृक्षारोपण अपनाकर,
हर उत्सव मे कम से कम दस वृक्ष लगाकर.

प्रकृति संतुलन का महत्व हम समझ जाएंगे,
जीवन को सौम्या और सहज हम बना पायेंगे.

जल थल और नभ को संरक्षित करना होगा,
इनके संरक्षण के लिए अब आगे बढ़ना होगा.

प्रकृति संतुलन करने का हम सब विकल्प ले,
पर्यावरण दिवस पर हम आज यह संकल्प लें.

हम गीत गाएंगे

रचनाकार- प्रमेशदीप मानिकपुरी



गम को भूलकर, हम गीत गाएंगे
आज फिर से नया गीत बनाएंगे

एक नई फ़िज़ा निखर रही है आज,
सुगंध, चमन में बिखर रही है आज,
दिल के साज पर नया सुर सजायेंगे,
गम को भूलकर, हम गीत गाएंगे.

सुरभित हो जीवन चमक रही है आज,
सूरज देता है नित नव-नव आगाज,
महक जाये गुलशन ऐसा गुल खिलाएंगे.
गम को भूलकर, हम गीत गाएंगे.

दिल की कलम से लिखता रहू सदा,
देश हित में चलता रहे कलम सदा,
अर्पण हो माँ को वो गीत बनायेंगे
गम को भूलकर, हम गीत गाएंगे.

अरमानों की बस्ती रोज सजती रहे,
तारों की बारात रोज दमकती रहे,
प्रफुल्लित हो जग ऐसा कल बनाएंगे,
गम को भूलकर, हम गीत गाएंगे.

मित्र

रचनाकार- प्रमेशदीप मानिकपुरी



मित्र वही जो समझें मन के भावों को,
मित्र वही जो समझें मन के आहों को.

साथ दे जब सफर हो दुर्गम राहों में।
कृष्ण जैसा रखे अपनी पनाहों में.

मित्रता हो कृष्ण और सुदामा जैसे,
सुख-दुख में रहे सदैव एक जैसे.

मित्रता करो राधा कृष्ण जैसा,
सदैव एक दूजे में ही हो बसा.

तो मित्र बनाने की कला जिसने पाई हो,
उसके जैसे ताकतवर ना कोई भाई हो.

आओ जीवन मे एक सच्चा मित्र बना ले,
जीवन सुवासित हो ऐसा एक इत्र बना ले.

जब टूट गई गुल्लक

रचनाकार- महेश कुमार केशरी



कानू चाचा ठेले पर इमली की लाल चटनी बेचा करते थे. उनके ठेले पर कच्चे आम के टुकड़े भी बिकते थे. जिसमें लाल मिर्च डालकर कानू चाचा हमें देते थे. उस समय आज की तरह चीजें मँहगी नहीं हुआ करती थी. चवन्नी या अठनी ही हमे रोज घर से मिला करती थी. कानू चाचा पुराने पीपल के पेंड के नीचे अपना ठेला लगाते थे. छुट्टी और टिफिन के समय भी बच्चे उन्हें घेर लेते थे. उनकी दूकान पर छुट्टी और टिफिन के समय इतनी भीड़ बढ़ जाती थी की कभी-कभी कानू चाचा हमे दिखाई ही नहीं देते थे. लेकिन वे वहीं ठेले पर आम के कच्चे टुकड़ों के बीच नमक और मिर्च डालकर बच्चों को बेचते मिलते. लाल ईमली की चटनी हमारी फेवरेट थी. इसके अलावे वे पाचक और जीरा बट्टी भी बेचते थे. एक मर्तबान में काले बेर पड़े रहते थे. जो आठ आने के दस मिलते थे. उस बेर मे हमारे प्राण बसते थे. चटनी, कच्चे आम स्कूल और दोस्त ही हमारा जीवन था. इतनी भागदौड़ भरी जिंदगी ना थी. शाम तक कानू चाचा के पास सौ- डेढ़ सौ रुपये तक की बिक्री हो जाती थी. कानू चाचा काने थे. लेकिन बहुत ही हँसोड़ प्रवृत्ति के थे. बात- बात पर हम बच्चों को हँसाते रहते. कानू चाचा के पास चुटकुलों- लतीफों की बहुत लंबी फेहरिस्त थी. हम बच्चों का आकर्षण कच्चे आम और जीराबट्टी के अलावे कानू चाचा ही हुआ करते थे. कारण उनके पास चुटकुले, कहानियाँ और लतीफे हुआ करते थे. उनके पास कहानियों का एक जखीरा था. अभिशप्त चुड़ैलों का परियों में रूपांतरण होने से लेकर. बूढ़े किसान के मेहनती और ईमानदार होने तक के कई किस्से होते थे उनके पास. उनकी कहानियों में रोमांच, डर, चौंकना सब एक ही साथ होता था. हम लोग उनकी बातें साँसें रोककर सुनते. उनकी भूतों वाली कहानियाँ सुनकर हम कभी- कभी डर

जाते थे. बावजूद इसके हम उनसे कहानियाँ सुनने के लोभ को रोक न पाते थे. आज के दौर में सैकड़ों टी. वी. चैनल हैं. जहाँ बच्चों की एक से एक बढ़कर कहानियाँ दिखाई देती हैं. लेकिन जो मजा कानू चाचा की कहानियों में थी. वो अब किसी टी. वी. के बाल कहानियों में नहीं दिखाई देती है.

मुझे अच्छी तरह याद है. उस समय हम सातवीं क्लास में पढ़ते थे. कुछ दिनों से कानू चाचा अपनी दूकान नहीं लगा रहे थे. हम बच्चों का मन उदास रहने लगा था. करीब सप्ताह भर बाद हम लोगों को पता चला कि कानू चाचा बहुत बीमार हैं. तब हम बच्चे अपनी-अपनी साईकिल लेकर कानू चाचा से मिलने उनके घर पहाड़पुर चले गये थे. पहाड़पुर सचमुच में पहाड़ पर ही बसा हुआ था. घने जंगलों, नदियों, और चारों तरफ पेड़ ही पेड़ थे. हमारी थकान इन जंगलों और पेड़ों को देखकर जाती रही थी. गर्मी बहुत पड़ने के कारण हमें प्यास भी लग आई थी. हमने झरने का खूब पानी पीया. साईकिल चलाने के बाद इतनी चढ़ाई पर हमें पेड़ों और पहाड़ों के बीच बहुत अच्छा लग रहा था.

कानू चाचा सचमुच में बीमार थे. उनकी बूढ़ी पत्नी और लड़की रूपा उनके सेवा में दिन रात लगे रहते थे. हमारे पड़ोस में हमारे जान- पहचान के एक डॉक्टर चाचा रहते थे. उनका नाम बंसल चाचा था. हम दोस्तों की टोली थी. जिनके नाम क्रमशः रिपु, दमन, अहमद, कुरैशी, सोनू, डब्लू, पिंटू और रेशमा, अनीता और डुगू थे. हम लोग पक्के दोस्त थे. एक साथ खाना, एक साथ सोना. एक साथ खेलने के लिये जाना. एक साथ स्कूल जाना. एक साथ होमवर्क करना. सब कुछ साथ ही साथ होता था.

कानू चाचा का हाल जानकर हम वहाँ से चल पड़े. रास्ते में हमने योजना बनाई की गरीब, बीमार और असहाय कानू चाचा की मदद हमें हर हाल में करनी चाहिये. और हमने अपनी समस्या बंसल चाचा को बताई. अगले दिन एक ऑटो से हम बच्चे बंसल चाचा को लेकर कानू चाचा के घर पहुँचे. डॉक्टर बंसल चाचा ने कानू चाचा की नब्ज टटोली. फिर जीभ का रंग अपनी टॉर्च से देखा. टॉर्च से ही आँखों का मुआयना किया. फिर, उन्होंने कुछ टेस्ट किये. टेस्ट की रिपोर्ट पहले शहर जाकर चेक होकर आती थी. करीब सप्ताह भर बाद टेस्ट की रिपोर्ट आई. इन सात दिनों तक हमारी नींद और चैन खो गया था. हमारा ध्यान पढ़ाई में बिल्कुल नहीं लग रहा था. हम दोस्तों के बीच कानू चाचा और उनकी बीमारी को लेकर ही चर्चा चलती रहती. कानू चाचा की बूढ़ी पत्नी से ही

हमें पता चला था कि इधर ठेला नहीं लगने के कारण उनका परिवार भूखमरी के कागार आ गया है. इलाज और डॉक्टर की फीस भरने तक के पैसे उनके पास नहीं थे. हम सभी साथियों ने मिलकर ये फैसला किया था. कि हमारी पॉकेट मनी जो उस समय गुल्लक में जमा रहती थी, को तोड़कर कानू चाचा की दवाई, टेस्ट और फीस के लिये दे देंगे. सात दिनों के बाद शहर से कानू चाचा की रिपोर्ट आ गई थी. कानू चाचा को मलेरिया हो गया था. डॉक्टर चाचा ने कागज पर कुछ दवाईयाँ लिख कर दीं थीं हमें. तब हमने अपनी-अपनी गुल्लक से साझा के टेस्ट और डॉक्टर चाचा की फीस के पैसे दिये थे. डॉक्टर चाचा ने हम बच्चों की किसी असहाय गरीब की मदद करने वाली भावना से बहुत प्रभावित हुए थे. लेकिन उन्होंने अपनी फीस हमसे लेने से साफ मना कर दिया. हम लोगों को शाबाशी भी दी थी. पर्ची लेकर हम बच्चे गाँव के ही मेडिकल स्टोर से कानू चाचा के लिये दवाई खरीद कर ले आये थे. कानू चाचा और उनकी बूढ़ी पत्नी ने हम बच्चों को बहुत आशीर्वाद दिया था. करीब महीने भर बाद कानू चाचा ने अपना ठेला लगाया. और हम फिर से कच्चे आम, बेर और ईमली की चटनी का आनंद लेने लगे थे.

छुट्टी छुट्टी छुट्टी

रचनाकार- वीरेंद्र कुमार साहू



छुट्टी छुट्टी छुट्टी
खत्म हुई अब छुट्टी
भरी दोपहरी,
मार के पत्थर
तोड़ी अमिया कच्ची
खत्म हुई अब छुट्टी
खेत खलिहान, ताल तलैया
नानी के घर
मौज मस्ती हुई पक्की
खत्म हुई अब छुट्टी
लुकाछिपी, गिल्ली डंडा
चोर सिपाही हर खेल में
मजा मिला खूब सच्ची
खत्म हुई अब छुट्टी

पढ़ने के दिन फिर आए
फिर खुलेगा स्कूल प्यारा
मिलेंगे सारे सखी सहेली
सब मित्रों संग फिर होगी
हंसी ठिठोली
खत्म हुई अब छुट्टी.

आओ स्कूल चलें हम

रचनाकार- सुशीला साहू "विद्या"



आओ स्कूल चलें हम, छुट्टियां हो गई खतम.
गोलू-मोलू सीता गीता, साथ चलें हरदम.

नई नई किताबें होंगी, नये नये परिवेश.
उम्मीदों की राह पर, खुशहाल अपना देश.
जूता मोजा हम पहने, और पहनेंगे टाई बेल्ट.
नया-नया अब हम खेलेंगे खेला।

आओ शिक्षा की मिलकर ओर, बढ़ायें अपना कदम.
स्कूल चलें हम, छुट्टियां हो गई खतम.
गोलू-मोलू सीता गीता, साथ चलें हरदम.

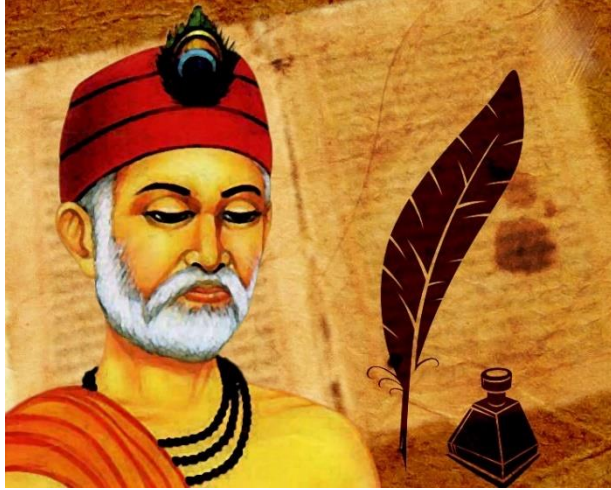
अ आ इ ई पढ़ लिखकर, हम करें मस्ती धमाल.
कदम से कदम मिलाकर हम, खूब करें कमाल.

धमा चौकड़ी खेलें कूदें, और करें दोस्ती-यारी.
जब बन जाए साहब हम, देखें दुनिया सारी.
चलो सबको पढ़ायें, और पढ़ते जाए हम.
आओ स्कूल चलें हम, छुट्टियां हो गई खतम.
गोलू-मोलू सीता गीता, साथ चलें हरदम.

आते जाते मोटर गाड़ी पर, खूब करेंगे सैर.
लड़ाई झगड़ा नहीं करेंगे, न करेंगे किसी से बैर.
पशु पक्षी को जानें, और जानेंगे उनके नाम.
अपने परिवेश जानें , और जाने सबका काम.
आओ देखें पानी से कैसे आ रही है सरगम .
आओ स्कूल चलें हम, छुट्टियां हो गई खतम.
गोलू-मोलू सीता गीता, साथ चलें हरदम.

सन्त कबीर

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु"



कबीर दास जी एक सन्त होते हुए भी समाज सुधारक थे. एक सन्त के रूप में इन्होंने ईश्वर, ब्रम्ह, जीव जगत, धर्म आस्था, कर्म कांड पर निर्गुण निराकार उपासक के रूप में अपनी दमदार लेखनी चलायी है. ठीक इसी तरह एक समाज सुधारक के रूप में कबीर दास जी नीति न्याय, आडम्बर, अंधविश्वास, पाखंड पर अपनी कलम चलाते हुए करारा प्रहार भी किया है.

"पाहन पूजै हरि मिलय
तो मैं पूजूँ पहार,
या ये तो चाकी भली
पीस खाये संसार."

कबीर दास जी पढ़े लिखे नहीं थे, पर उनको अंतर्दृष्टि का गम्भीर ज्ञान था. उनको आत्म ज्ञान की प्राप्ति हो गई थी.

तभी तो वो कहते हैं-

"मसी कागद छुयो नही,
कलम गही नही हाथ."

कबीर दास जी ने ढोंगी, साधुओं के आडंबर पर भी चोट किया है-

"पोथी पढ़-पढ़ जग मुआ
पंडित भया न कोय.
ढाई आखर प्रेम का
पढ़े सो पंडित होय."

इसी प्रकार दूसरे दोहे में कहते हैं-

"माला फेरत जुग गया
मिटा न मन का फेर.
करका मनका डारी के
मनका-मनका फेर."

ऐसे महान संत और समाज सुधारक कबीर दास जी के जन्म के संबंध में यह उल्लेख है-

चौदह सौ पचपन साल गए,
चन्द्रवार एक ठाठ ठए.
जेठ सुदी बरसायत को
पूरनमासी तिथि प्रगट भए.
घन गरजें दामिनि दमके
बूँदे बरषें झर लाग गए.
लहर तलाब में कमल खिले
तहँ कबीर भानु प्रगट भए."

कबीर दास जी का दर्शन समभाव, समदृष्टि और समाज सुधार पर आधारित था. इन्होंने अपनी रचनाओं को बीजक में संकलित किया है और बीजक को तीन भागों में बांटा गया जिसमें साखी, सबद और रमैनी प्रमुख रूप से मानी जाती है. इन सभी रचनाओं में निर्गुण निराकार ब्रम्ह का उल्लेख किया गया है. जिसमें विशेष बात थी, वह है जीवन दर्शन. जिसमें जीवन की नश्वरता और क्षण भंगुरता पर बात कही गई है और ईश्वर भजन को सार बताया-

"भक्ति भजन सब सार है,
दूजा दुख अपार."

यह संसार सेमल फूल की तरह है. जो मात्र और मात्र सुंदर दिखता है. यह सुंदरता क्षण भंगुर है. जो कुछ समय पश्चात झड़ जाता है. सार कुछ भी नहीं है. सेमल फूल की सुंदरता, अज्ञानता में डालने वाला है. इसके झूठ-मूठ के आकर्षण में पढ़कर व्यक्ति को अपने आप को नहीं भूलना चाहिए. व्यक्ति को ईश्वर भजन, धर्म, कर्म, न्याय, नीति में चलकर सद्कर्म करते रहना चाहिए. तभी भलाई है. इस सम्बंध में कबीर दास जी ने बहुत सुंदर बात कही-

"कबीर ऐसा यह संसार है,
जैसा सेमल फूल.
दिन दस के व्यौहार में,
झूठे रंगि न भूल."

इस संसार की क्षण भंगुरता पर कबीर दास जी ने सुख-दुख, जीवन-मरण, का दृष्टांत देते हुए व्यक्ति की दशा का बहुत मार्मिक और कारुणिक उद्गार व्यक्त किया है और कहा कि इस संसार में कुछ भी सार नहीं है. कभी सुख तो कभी दुख है. जिस व्यक्ति को कल मंडप की वेदी पर देखा गया. उसी व्यक्ति को आज श्मशान में देखा जा रहा है. अर्थात् व्यक्ति

की क्या औकात है. कितना अस्तित्व है इस बात को कितनी सहजता से कबीर जी ने
कह दिया-

"कबीरा यह जग कुछ नहीं,
खीन खारा खीन मीठ.
काल्हि जो देखा मण्डपय,
आज मसानय दीठ."

इस संसार में व्यक्ति का एक धूल के बराबर भी अस्तित्व नहीं है. वह धूल से भी नगण्य है. इसके बाद भी वह इतना घमंड और अहंकार करता है जैसे वह अमर हो गया है. जबकि उसे यह पता नहीं है कि उसके पीछे-पीछे यमराज काल बन के घूम रहा है. कौन क्या जानता है कब किसकी बारी आ जाए. काल को कोई कभी नहीं जानता कि वह कब, कहाँ, और कैसे व्यक्ति को पकड़ के ले जाए. इसलिए कहा गया है-

जन्म, मरण, विवाह, कब किसकी कहाँ आ जाय कोई नहीं जान सकता. कबीर ने भी इस सम्बंध में कितनी अकाट्य बात कही-

"कबीरा गरब न कीजिए
काल गहे कर केस.
ना जाने कित मरिहैं,
क्या घर क्या परदेश."

किसी ने जीवन की नश्वरता पर सुंदर और गम्भीर बात कही. वो कहते हैं-

यह जीवन
"चार दिन की चांदनी
फिर अंधेरी रात."

इस संसार में बड़े-बड़े प्रतापी, योद्धा, शूरवीर, धुरंधर राजा महाराजा आए जैसे- महान सम्राट अकबर, प्रतापी विक्रमादित्य, महान सम्राट अशोक, महात प्रतापी सिकन्दर, महान प्रतापी रावण, हिरण्य कश्यप, आदि-आदि.

लेकिन सभी को इस दुनिया से देह त्याग करके जाना पड़ा है. यहाँ किसी का अपना कुछ नहीं चला. खाली हाथ आये थे, खाली हाथ चले गए. इसीलिए कबीर ने दोहे में कहा-

"पानी केरा बुदबुदा
अस मानस की जात,
देखत ही बुझ जाएगा
ज्यों तारा परभात."

कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि भगवान ने इस संसार में व्यक्ति को जन्म देकर कुछ अच्छे धर्म कर्म पुण्य और सत्कार्य करने के लिए भेजा है. ताकि वह अंत समय में अपने जीवन को धन्य कर मोक्ष को प्राप्त कर सके.

हरियर बनाबो ग चल धरती ल

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु"



हरियर बनाबो ग चल धरती ल
सुग्घर बनाबो ग चल धरती ल
नान्हे-नान्हे बिरवा लगाबो
जुर-मिल के सब एला सजाबो
सरग बनाबो ग चल धरती ल
हरियर बनाबो ग चल धरती ल

डाहर के आजू-बाजू म
घर-घर के आघू-आघू म
परिया घलो झन छूटय
फुलवारी सही सुघर लागय
सिंगार करबो ग चल धरती ल
हरियर बनाबो ग चल धरती ल

नदिया-नरवा के पारे-पार
धनहा-भर्ती खारे-खार
तरिया के पारे-पारे
रुख-राई ले होही सिंगार
छइहा बनाबो ग चल धरती ल
हरियर बनाबो ग चल धरती ल

गाँव गली खोरे-खोर
आरा-पारा छोरे-छोर
गाँव के चउक-चौपाल म
पेड़ लगाबो हर हाल म
मधुबन बनाबो ग चल धरती ल
हरियर बनाबो ग चल धरती ल

मेरे देश की मिट्टी

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु"



यह मिट्टी है, मेरे देश की पहचान है
मिट्टी मेरा धर्म, मिट्टी मेरा ईमान है.

मिट्टी मेरा धरोहर मिट्टी मेरा मान है
मिट्टी मेरी माँ हम इसकी संतान हैं.

इस मिट्टी से हम सब का सम्मान है
यही हमारी गरिमा व गौरव गान है.

मेरी मिट्टी मेरे देश का अभिमान है
मिट्टी मेरी प्रेरणा मेरा स्वाभिमान है.

अखिल विश्व मे मेरी मिट्टी महान है
देश की मिट्टी का मैं करूँ गुणगान है.

यह मिट्टी मेरे लिए जीवन आधार है
इसका मुझ पर सदा बड़ा उपकार है.

संघर्षों से मिलता है मंजिल

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु"



संघर्षों का कोई तोल-मोल ही नहीं
इससे बढ़कर कोई अनमोल नहीं.

संघर्षों से मिलती है जरूर मंजिल
काम कोई भी हैं मुश्किल नहीं.

अगर होंगे तुम्हारे इरादे मजबूत
लक्ष्य पर लगेगा निशाना अचूक.

करें बुलंद हौसलों की उड़ानों को
और दिखादे तू हौसला जमाने को.

बाजुओं में ताकत, इरादा हो अटल,
मन में हो विश्वास, मन जाए मचल.

पानी में भीगोगे तो लिबास बदलोगे
पसीने से भीगोगे इतिहास बदलोगे.

मन में हो विश्वास करलो दृढ़ संकल्प
बिना संघर्ष के नहीं रचता कोई इतिहास.

जो मन में है सपने करो उसे साकार
पीछे न हटना, हो जाए आर या पार.

प्रकृति हम सब की माता है

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु"



प्रकृति हम सबकी माता है
तुझसे ही अटूट-नाता है.
तू ही सब की प्राण-दाता है
तू ही तो भाग्य-विधाता है.

मानव के लिए तू वरदान है
तेरी महिमा बड़ी महान है.
तू धन सम्पदा की खान है
तुझसे ही सारा-जहान है.

तेरी गोद बड़ी निराली है
जहाँ छाई बड़ी हरियाली है.
जिसमे फुल-फलों की डाली है
तू ही वसुंधरा तू ही माली है.

तुझसे ही धूप-हवा-पानी है
तुझसे मिट्टी-अगन-हरियाली है.
तुझसे ही बादल काली-काली है
तेरी महिमा बड़ी निराली है.

तुझसे ही तो बरखा-बहार है
तू ही जड़-चेतन का आधार है.
तुझसे ही सजा सारा-संसार है
तुझसे ही धरती का श्रृंगार है.

आओ प्रकृति का सम्मान करें
हम सब इसका गुणगान करें.
हम सब इसकी देखभाल करें
हम इसकी सुरक्षा का ध्यान करें.

चित्रोतपल्ला महानदी

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु"



चित्रोतपल्ला महानदी
इही हर गङ्गा धार हे.

जनजन के जीवन रेखा
महिमा जेकर अपार हे.

जीव जगत के तारणहारी
सिहाव जेकर दुवार हे.

ऋषि- मुनि के इही ह डेरा
तिरिथ के इही ह सार हे.

राम लखन के हैं ममियारो
इहेंच कौशल्या धाम हे.

तुरतुरिया लव कुश मंदिर
बाल्मीकि के बड़का कामहे.

सत्य धरम के रद्दा चलईया
सीता के जगत मा नाम हे.

छत्तीसगढ़ के पावन माटी ल
शत-शत हमर परनाम हे.

गर्मी की छुट्टी

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु"



देखो गर्मी की छुट्टी आई है
बच्चों में खुशियाँ छाई है.

नानी के घर में सब जाएँगे
छुट्टियाँ सब खूब बिताएँगे.

सैर सपाटा मौज मस्ती है
उछल कूद धमा चौकड़ी है.

मॉल मार्केट में भीड़ लगी है
डॉल टॉयज में नजर गड़ी है.

फेवरेट को सब देख रहे हैं.
खुशियों में सब झूम रहे हैं.
चौपाटी में सब दिख रहे हैं
चाट कचौड़ियाँ खींच रहे हैं.

आम बगीचे गुलजार हुए हैं
बच्चों भी उसमें सवार हुए हैं.

स्कूल ट्यूशन सब बंद हुए हैं
होम वर्क से अब स्वतंत्र हुए हैं.

बायोटेक स्टार्टअप एक्सपो 2022

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी



वैश्विक स्तर पर भारत आज जिस तेजी के साथ प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में आगे बढ़ रहा है तो अब लगने लगा है सोच बदल रही है, देश बदल रहा है. पूरे विश्व की नजरें भारत की ओर लगी हुई है कि ऐसी क्या खासियत है? कि भारत हर क्षेत्र में दिन दूनी रात चौगुनी रफ्तार के साथ अपने लक्ष्यों को हासिल कर बुलंद हौसलों के साथ आगे बढ़ रहा है, जिसे देखकर पूर्ण विकसित देश भी हैरान हैं!! आज वैश्विक मंचों पर जिस प्रकार का रुतबा और प्रतिष्ठा भारत को मिल रही है उसे देखकर विशेषकर पड़ोसी और विस्तार वादी देश सकते में हैं!! और सोचने पर मजबूर हो गए हैं कि ऐसा कैसे हो सकता है?

साथियों शायद उन्हें यह मालूम नहीं कि हौसला-ए-विकास जिसके जज्बे में भरा हो तो आंधी तूफान तो क्या पहाड़ भी उसके रास्ते नहीं रोक सकते यही परिभाषा हमारे कुछ और सटीक नेतृत्व की है जिसके बल पर भारत आज वैश्विक प्रशंसा के झंडे गाड़ रहे है!! हर सेक्टर में स्टार्टअप इतिहास रच रहा है. रोजगार पाने से आगे बढ़कर अब फोकस रोजगार देने पर है!! भारत की बड़ी युवा आबादी नई सोच विचार के साथ जोखिम लेने में पीछे नहीं हट रही है.

साथियों बात अगर हम दिनांक 9 जून 2022 को शुरू हुए बायोटेक स्टार्टअप एक्सपो 2022 की करें तो यह दो दिवसीय एक्सपो 9 और 10 जून 2022 तक बहुत सफलता और प्रतिष्ठा के साथ चला. इस एक्सपो का आयोजन जैव प्रौद्योगिकी उद्योग अनुसंधान सहायता परिषद द्वारा किया गया

था. इस परिषद की स्थापना के 10 साल पूरे होने के मौके पर यह आयोजन किया गया है. इस एक्सपो में लगभग 300 स्टॉल लगाई गई थी. इनमें हेल्थकेयर, बायोफार्मा, क्लीन एनर्जी, कृषि, जिनोमिक्स, औद्योगिक जैव प्रौद्योगिकी आदि सेक्टर्स में जैव प्रौद्योगिकी के उपयोग को दर्शाया गया है. इस बायोटेक स्टार्टअप एक्सपो की थीम बायोटेक स्टार्टअप इनोवेशन-आत्मनिर्भर भारत की ओर' थी. इस एक्सपो से निवेशकों, वैज्ञानिकों, निर्माताओं, शोधकर्ताओं, सरकारी अधिकारियों और नेताओं को एक मंच पर आने का मौका मिला.

साथियों बात अगर हम बायोटेक को समझने की करें तो बायोटेक्नोलॉजी को आमतौर पर बायोटेक के नाम से जाना जाता है, या फिर इसे जैवविज्ञान और तकनीकी विकास कहा जाता है. बायोटेक्नोलॉजी का प्रयोग विभिन्न वैक्सीनों, मेडिसिन और डायग्नॉस्टिक, एनर्जी प्रोडक्शन को बढ़ावा देना होता है. भारत में बायोटेक्नोलॉजी ने काफी महत्वपूर्ण जगह बना ली है, इस फील्ड के तहत सभी संभावित फ़िल्ड्स जैसे कि फार्मास्यूटिकलस, फूड निर्माण, हेल्थ केयर, एग्रीकल्चर, एजुकेशन और रिसर्च से संबद्ध कार्य शामिल हो गये हैं. बायोटेक्नोलॉजी से ही जैविक हथियारों का उत्पादन भी किया जाता है. भारत अब बायोटेक के ग्लोबल इकोसिस्टम में टॉप-10 देशों की लीग में पहुंचने से भी ज्यादा दूर नहीं हैं.

साथियों बात अगर हम देश में स्टार्टअप की शुरुआत की करें तो, देश में स्टार्टअप इंडिया की शुरुआत 2016 में हुई. इस स्कीम के तहत भारत ना केवल स्टार्ट-अप युग की ओर बढ़ रहा है, बल्कि स्टार्ट-अप सेक्टर में दुनिया का नेतृत्व कर रहा है. भारत इस समय दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा स्टार्टअप इकोसिस्टम है. देश में 73.2 अरब अमेरिकी डॉलर के 70 से ज्यादा यूनिकॉर्न हैं. भारत के 70 से ज्यादा स्टार्टअप का यूनिकॉर्न की श्रेणी में आना बहुत अच्छी खबर है, ऐसे में ये जानना भी जरूरी है कि ये स्टार्टअप का युग भारत में कैसे आया और कैसे 70 से ज्यादा स्टार्ट-अप एक अरब डॉलर से अधिक के मूल्यांकन को पार कर गए हैं. सरकार की स्कीम ने भी इसमें बड़ी हिस्सेदारी निभाई है, स्टार्टअप इंडिया योजना के तहत देश में 59 हजार से ज्यादा लोग अपना स्टार्टअप खोल चुके हैं.

साथियों बात अगर हम बायोटेक क्षेत्र की सफलता की करें तो पीएम ने इसके 5 कारण गिनाए भारत पहला- विविध जनसंख्या और विविध जलवायु क्षेत्र; दूसरा भारत का प्रतिभाशाली मानव पूंजी पूल, तीसरा - भारत में व्यापार करने में आसानी के लिए बढ़ते प्रयास; चौथा - भारत में बायो-

प्रोडक्ट्स की मांग लगातार बढ़ रही है, और पांचवां- भारत का बायोटेक सेक्टर जो इसकी सफलताओं का ट्रैक रिकॉर्ड है.

साथियों बात अगर हम बायोटेक स्टार्टअप एक्सपो 2022 की थीम की करें तो, इस एक्सपो की थीम 'बायोटेक स्टार्टअप नवोन्मेष: आत्मनिर्भर भारत की ओर' रखी गई है. यह दो दिवसीय आयोजन 10 जून को समाप्त हुआ. यह एक्सपो उद्यमियों, निवेशकों, वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं, निर्माताओं और सरकारी अधिकारियों को जोड़ने के लिए एक मंच के रूप में काम करेगा. पीएम ने इस दौरान मौजूदा लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि, स्टार्टअप से आत्मनिर्भर भारत बनेगा साथ ही भारत की शक्ति का दुनिया को पता चलेगा. राज्यों के लिहाज से देखा जाए तो सबसे ज्यादा इस स्कीम का फायदा महाराष्ट्र के लोगों ने उठाया है. जहां करीब 30790 लोगों ने अपना स्टार्टअप खोला है. उन्होंने कहा कि हाल में ही हमने पेट्रोल में इथेनॉल की 10 प्रतिशत ब्लेंडिंग का टारगेट हासिल किया है. भारत ने पेट्रोल में 20 प्रतिशत इथेनॉल ब्लेंडिंग का टारगेट भी 2030 से 5 साल कम करके 2025 कर लिया है. ये सारे प्रयास, बायोटेक के क्षेत्र में रोजगार के भी नए अवसर बनाएंगे.

कंधे का भार

रचनाकार- टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला"



"सब दिखाई दे रहा है पापाजी मुझे. बड़ा मजा आ रहा है सच में. थोड़ा और उठाओ न पापाजी. क्या एक से एक बढ़कर झूले हैं. वाह! खिलौने वाले! रंगबिरंगे गुब्बारे! मिठाई की दुकानें! तरह-तरह के लोग! नाचते हुए राऊतों की टोली!" अपने पापा के कंधे पर बैठा नन्हा आशुतोष मँडई-मेले का खूब मजा ले रहा था. सब कुछ देख लेने का उसका मन कर रहा था. नाचते हुए बंदर को उसने अचानक देख लिया. हँस-हँसकर लोटपोट हो गया. आज तो ऐसा लग रहा था कि मेले का सारा दृश्य सिर्फ आशुतोष का हो गया हो. अपने पापा के ऊँचे-मजबूत कंधे का भार बना आशुतोष मँडई-मेले के सुंदर दृश्य का लाभ ले रहा था. उसके पापा महेश की भी पूरी कोशिश थी कि उसका बेटा मेले को खूब इज्जाय करे.

बीस साल बाद आज ऐसा लग रहा है कि मानो महेश सोच रहा है- "अरे! मँडई-मेले के दृश्य से कम, पर बहुत से लोग हैं भाई. दोस्त-यार, रिश्तेदार व पहचान वाले दिख रहे हैं. क्या बात है!" अचानक उसने आँख खोली तो ऊपर सिर्फ नीला आकाश! देह पर नजर डाली तो नये-नये कपड़े! फूलों की गंध सो अलग! उन्हें आशुतोष को छोड़कर सब दिखाई दे रहे हैं. फिर भी वे बिल्कुल आश्चर्य हैं कि आशुतोष उनके पास ही है.

आज आशुतोष की भीगी आँखों के सामने वो मँड़ई-मेले का सारा दृश्य है. उसके कंधे पर भी एक भार है. अंतर इतना है कि कंधे पर जो भार है; वह भार पापा महेश का है.

अपना फर्ज निभाओ

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"



काट रहे हैं जंगल झाड़ी, नहीं पवन का झोंका है.
मिलकर सारे पेड़ लगाओ, तुम को किसने रोका है.

बदल लिया करवट मौसम ने, सूर्य चन्द्र की बारी है.
हाहाकार मचा है देखो, महमारी भी जारी है.

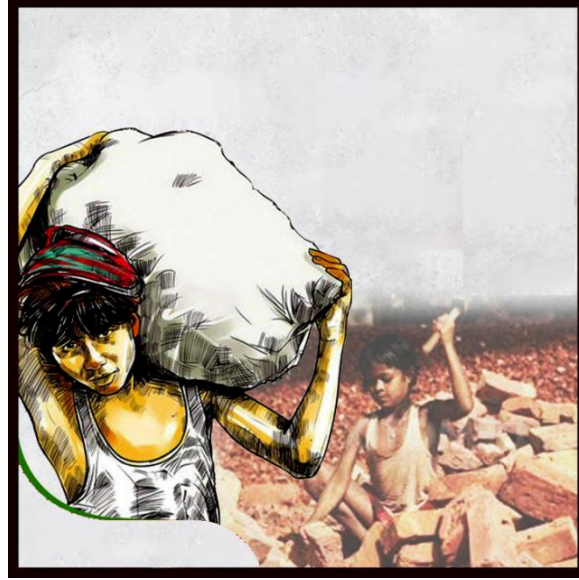
जल्द समस्या हल कर डालो, फिर हरियाली आयेगी.
सुंदर सुंदर फूल खिलेंगे, चिड़िया गीत सुनायेगी.

रूठ गईं गर धरती मैया, कैसे प्यास बुझाओगे.
देख रहे सूरज गुस्से से, कैसे उसे मनाओगे.

विश्व धरा पर खड़ी समस्या, जल्दी से सुलझाओ जी.
कलयुग के मानव होने का, अपना फर्ज निभाओ जी.

विश्व बालश्रम निषेध दिवस

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी



वैश्विक स्तरपर बच्चों का नाम आते ही संवेदनशीलता, सहिष्णुता, भावों का कोमल होना, दया लाड प्यार इत्यादि अनेक भावनाएं मन में जागृत हो जाती है, यह और कुछ नहीं मानवी जीवन में बच्चों के प्रति एक खिंचाव, लगाव और प्यार है या हम यूं कहें कि उनके चार कदम आगे सृष्टि में उपस्थित 84 लाख योनियों में भी अपने बच्चों के प्रति अपने अपने स्तर पर गहरा लगाव है.

बात अगर हम भारत की करें तो, भारतवर्ष में प्रारंभ से ही बच्चों को ईश्वर अल्लाह का रूप माना जाता है. ईश्वर के बाल रूप यथा बाल गणेश, बाल गोपाल, बाल कृष्णा, बाल हनुमान आदि इसके प्रत्यक्ष उदाहरण हैं. भारत की धरती ध्रुव, प्रह्लाद, लव-कुश एवं अभिमन्यु जैसे बाल चरित्रों से पटी हुई है. भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू कहते थे कि बच्चे देश का भविष्य है इसलिए ये जरूरी है कि उन्हें प्यार दिया जाए और उनकी देखभाल की जाए, जिससे वे अपने पैरों पर खड़े हो सकें. वे बच्चों को राष्ट्र का निर्माता कहते थे. जबकि छोटे बच्चों से श्रमिकों के रूप में काम करवाया जाता है, बाल श्रमिकों की समस्या बहुत पुरानी है. इसके पीछे गरीबी के साथ ही माँ बाप का लोभ और पारिवारिक परिस्थिति कारण होती है. इस समस्या से निपटने के लिए सामाजिक और शासन के स्तर पर प्रयास आवश्यक हैं.

साथियों आधुनिक युग में अपेक्षाकृत अधिक बच्चे खासकर कोविड महामारी और उसके बाद की स्थिति में श्रम करने को मजबूर हो गए हैं जिसे रेखांकित करना जरूरी है आज के आर्टिकल में विश्व बाल श्रम निषेध दिवस के रूप में बाल श्रम निषेध पर विस्तृत चर्चा करेंगे.

बात अगर हम बाल श्रम में के व्यापकता की करें तो, दुनिया भर में बच्चे नियमित रूप से भुगतान और अवैतनिक कार्यों में लगे हुए हैं जो उनके लिए हानिकारक नहीं हैं. हालाँकि, उन्हें बाल श्रमिकों के रूप में वर्गीकृत किया जाता है जब वे काम करने के लिए बहुत छोटे होते हैं, या खतरनाक गतिविधियों में शामिल होते हैं जो उनके शारीरिक, मानसिक, सामाजिक या शैक्षिक विकास से समझौता कर सकते हैं. सबसे कम विकसित देशों में, चार में से एक बच्चे (5 से 17 वर्ष की आयु) से थोड़ा अधिक श्रम में लगे हुए हैं जो उनके स्वास्थ्य और विकास के लिए हानिकारक माना जाता है.

बात अगर हम बाल श्रम की विभिन्न दृष्टिकोण से परिभाषा की करें तो, सयुक्त राष्ट्र संघ के मुताबिक 18 साल से कम उम्र के बच्चों से श्रम कराना कानूनी अपराध है.

अंतरराष्ट्रीय श्रम संघ ने बाल श्रम उम्र 15 साल तय की है भारतीय संविधान के अनुसार किसी उद्योग ,कारखाने में शारीरिक एवं मानसिक रूप से काम करने की उम्र 5-14 वर्ष की होने पर बालश्रम कहा जाता है. अमेरिका में उम्र 12 साल रखी गयी है. बालश्रम पर लगाम लगाने के लिए कई संवैधानिक प्रावधान बनाये है. अनुच्छेद 15(3)- बाल श्रम एक ऐसा विषय है, जिस पर संघीय व राज्य सरकारें, दोनों कानून बना सकती हैं. अनुच्छेद 21, 6-14 साल के बच्चों को निःशुल्क शिक्षा प्रदान की जाएगी (धारा 45)अनुच्छेद 23- बच्चों को खरीद फरोक पर रोक लगाते है. अनुच्छेद-24 किसी फैक्ट्री, खान, अन्य संकटमय गतिविधियों यथा-निर्माण कार्य या रेलवे में 14 वर्ष से कम आयु के बच्चों के नियोजन का निषेध करता है.

बात अगर हम श्रम के खिलाफ कानूनों और वर्तमान स्थिति की करें तो, भारत के संविधान, 1950 का अनुच्छेद 24 स्पष्ट करता है कि 14 वर्ष से कम उम्र के किसी भी बच्चे को ऐसे कार्य या कारखाने इत्यादि में न रखा जाये जो खतरनाक हो. कारखाना अधिनियम, बाल अधिनियम, बाल श्रम निरोधक अधिनियम आदि भी बच्चों के अधिकार को सुरक्षा देते हैं किन्तु इसके विपरीत आज की स्थिति बिलकुल भिन्न है. पिछले कुछ वर्षों से भारत सरकार एवं राज्य सरकारों की पहल इस दिशा में सराहनीय है. उनके द्वारा बच्चों के उत्थान के लिए अनेक योजनाओं को प्रारंभ किया गया है,

जिससे बच्चों के जीवन व शिक्षा पर सकारात्मक प्रभाव दिखे. शिक्षा का अधिकार भी इस दिशा में एक सराहनीय कार्य है. इसके बावजूद बाल-श्रम की समस्या अभी भी एक विकट समस्या के रूप में विराजमान है. इसमें कोई शक नहीं कि बाल-श्रम की समस्या किसी भी देश व समाज के लिए घातक है. बाल-श्रम पर पूर्णतया रोक लगनी चाहिए. बाल-श्रम की समस्या जड़ से समाप्त होना अति आवश्यक है.

केवल घर का काम नहीं इन बालश्रमिकों को पटाखे बनाना, कालीन बुनना, वेल्लिंग करना, ताले बनाना, पीतल उद्योग में काम करना, कांच उद्योग, हीरा उद्योग, माचिस, बीड़ी बनाना, खेतों में काम करना (बैल की तरह), कोयले की खानों में, पत्थर खदानों में, सीमेंट उद्योग, दवा उद्योग में तथा होटलों व ढाबों में झूठे बर्तन धोना आदि सभी काम मालिक की मर्जी के अनुसार करने होते हैं. इन समस्त कार्यों के अतिरिक्त कूड़ा बीनना, पोलीथिन की गंदी थैलियाँ चुनना, आदि अनेक कार्य हैं जहाँ ये बच्चे अपने बचपन को नहीं जीते, नरक भुगतते हैं परिवार का पेट पालते हैं. इनके बचपन के लिए न माँ की लोरियाँ हैं न पिता का दुलार, न खिलौने हैं, न स्कूल न बालदिवस. इनकी दुनिया सीमित है तो बस काम काम और काम, धीरे धीरे बीड़ी के अधजले टुकड़े उठाकर धुआं उड़ाना, यौन शोषण को खेल मानना इनकी नियति बन जाती है.

बात अगर हम हर साल बाल श्रम निषेध दिवस मनाने की करें तो, दुनियाभर में हर साल 12 जून को विश्व बाल श्रम निषेध दिवस के रूप में मनाया जाता है. इसको मनाए जाने का उद्देश्य 14 वर्ष से कम उम्र के बच्चों से श्रम ना कराकर उन्हें शिक्षा दिलाने और आगे बढ़ने के लिए जागरूक करना है. भारत में बालश्रम की समस्या दशकों से प्रचलित है. भारत सरकार ने बालश्रम की समस्या को समाप्त करने क़दम उठाए हैं. भारतीय संविधान के अनुच्छेद 23 खतरनाक उद्योगों में बच्चों के रोजगार पर प्रतिबंध लगाता है. भारत की केंद्र सरकार ने 1986 में बालश्रम निषेध और नियमन अधिनियम पारित कर दिया. इस अधिनियम के अनुसार बालश्रम तकनीकी सलाहकार समिति नियुक्त की गई. इस समिति की सिफारिश के अनुसार, खतरनाक उद्योगों में बच्चों की नियुक्ति निषिद्ध है. 1987 में, राष्ट्रीय बालश्रम नीति बनाई गई थी.

बात अगर हम बाल श्रम निषेध दिवस के इतिहास की करें तो, विश्व बालश्रम निषेध दिवस इतिहास विश्व बालश्रम निषेध दिवस की शुरुआत 2002 में अंतरराष्ट्रीय श्रम संघ ने की इसका मुख्यालय जेनेवा में है, यह संयुक्त राष्ट्र संघ की एक शाखा है। यह सिद्धांत बनाती है और उसे सख्ती से पालन

किया जा रहा है उसका ब्योरा रखती है ,ये कई अंतराष्ट्रीय पुरस्कार जीत चुकी है आम सहमति से 2002 से कानून पारित किया गया जिसमे 14 से कम उम्र के बच्चों से श्रम कराने को अपराध माना गया. इसी साल पहली बार बाल श्रम निषेध दिवस 12 जून को मनाया गया

बात अगर हम वर्ष 2022 की थीम की करें तो, इस वर्ष विश्व बाल-श्रम निषेध दिवस की थीम- बाल श्रम को समाप्त करने के लिए सार्वभौमिक सामाजिक संरक्षण, बालश्रम के खिलाफ सभी लोगों को बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेना चाहिए. देश में बालश्रम के खिलाफ आवाज उठानी है. जिसे देश में बालश्रम को कम किया जा सके.

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे के विश्व बाल श्रम निषेध दिवस 12 जून 2022 को मनाया जा रहा है बाल श्रम उन्मूलन के लिए समाज के हर वर्ग को सहयोगात्मक प्रयास करने की आवश्यकता है भारत वर्ष में आदि काल से ही बच्चों को ईश्वर अल्लाह का रूप माना जाता है भारत की धरती ध्रुव, प्रह्लाद, लव-कुश अभिमन्यु जैसे बाल चरित्रों से पूर्ण है.

हम सबको स्कूल जाना है

रचनाकार- समीक्षा गायकवाड़



लो आया जुलाई का महीना
ना कोई गर्मी ना कोई पसीना
नई पुस्तक में कवर चढ़ाना है
हम सब को स्कूल जाना है.

मोज़े जूते की करें धुलाई
बस्ते की कर ली साफ़ सफाई
शाला गणवेश चमकाना है
हम सब को स्कूल जाना है.

पंक्ति बना रोज करेंगे प्रार्थना
माँ शारदे की निर्मल वंदना
अनुशासन का पाठ अपनाना है
हम सब को स्कूल जाना है.

हर विषय की कापी बनायेंगे
सब कापी पर जिल्द चढ़ायेंगे
नयी कक्षा का ज्ञान पाना है
हम सब को स्कूल जाना है.

मिड डे मील का पौष्टिक पकवान
खाकर होंगे हष्ट पुष्ट और बलवान
शिक्षकों की सीख अपनाना है
हम सब को स्कूल जाना है.

मन लगाकर करेंगे खूब पढ़ाई
दोस्तों से न करेंगे कोई लड़ाई
हर विषय में अव्वल आना है
हम सब को स्कूल जाना है.

साथ दे दो चलो जीत हम जाएंगे

रचनाकार- विजय कनौजिया



वक्त की आंधियां आओ सह लें चलो
लड़खड़ाते कदम फिर संभल जाएंगे
आओ हम ही चलो आज झुक जाएंगे
टूटते रिश्ते फिर से संभल जाएंगे.

रिश्तों के खेत में हो उपज प्रेम की
खुशियों के उर्वरक से ही हरियाली हो
काट लें आओ मिलकर फसल प्रेम की
मन के खलिहान फिर से संवर जाएंगे.

जो कभी थे हमारे वो अब क्यों नहीं
प्रीति सच्ची थी पहले तो अब क्यों नहीं
आओ छोड़ो शिकायत खतम करते हैं
आज फिर पहले जैसे निखर जाएंगे.

अपनों से खेद ज्यादा उचित भी नहीं
रख लो मत भेद मन भेद फिर भी नहीं
अपनों से जीत जाना भी इक हार है
हार मानो चलो एक हो जाएंगे.

सच्ची निष्ठा प्रतिष्ठा सदा प्रेम से
जीवन में बस प्रगति अपनों के साथ से
एक जुटता से ही मिलता संबल सदा
साथ दे दो चलो जीत हम जाएंगे.
साथ दे दो चलो जीत हम जाएंगे.

स्वर गीत

रचनाकार- श्वेता तिवारी



अ से अनार दानेदार
आ से आम बड़ा रसदार

इ से इमली खट्टी लगती
ई से ईख खाओ मीठा मीठा

उ से उल्लू रात जगता
ऊं से ऊंट रेगिस्तान में चलता

ए से एड़ी चलते जाएं
ऐ से ऐनक दादाजी लगाएं

ओ से ओखली कुटे में चटनी
औ से औरत मां के जैसी

अं सै अंगूर को खाते हम
अःहंसते हम रहते हः हः हः

लोग क्या कहेंगे

रचनाकार- डॉ. माधवी बोरसे



बहुत समय पहले मैंने कहानी सुनी थी, जिसमें एक आदमी अपने गधे के साथ जाता है, जब वह गधे को चलाते हुए जाता है, तो लोग कहते हैं, अरे कितना बेवकूफ है, गधे के होते हुए भी, स्वयं ही सामान उठाकर जा रहा है, यह नहीं कि गधे पर रख दे, थोड़ी देर बाद वह कुछ लोगों की सुनकर, अपना सामान गधे पर रख देता है. लोग जब देखते कि उसने सामान गधे पर रख रखा है, तो कहने लगते हैं, की कितना बेरहम है बिचारे गधे पर इतना भारी सामान रख रखा है.

कहने का तात्पर्य है और कहानी का मतलब यह है की चाहे आप कितना ही अच्छा कर लो, जो भी करो, कुछ तो लोग कहेंगे, लोगों का काम है कहना. सोचने दीजिए लोगों को जो वह सोचते हैं क्योंकि अगर हम भी यही सोचेंगे की लोग क्या सोचेंगे, तो फिर लोग क्या सोचेंगे.

जिंदगी में हमेशा एक बात याद रखना दोस्तों,
यह जिंदगी एक ही है, इसे खुल कर जियो,
मस्ती से जियो, और जो आपकी आत्मा गवाही देती है, वही काम करो.

लोग क्या सोचेंगे, लोग क्या कहेंगे, यह सब सोच कर बहुत सी लोगों की जिंदगी बर्बाद हो गई है और याद रखिए जिनके पास कोई कार्य नहीं होता, वही यह सोचता रहता है और दूसरों की बात कर समाज में निंदा करता रहता है. अगर आपको नहीं पता की दूसरों की जिंदगी में क्या चल रहा है, तो आप कौन होते हो सोचने वाले? अगर आपको कुछ सोचना है, खुद के बारे में सोचिए, स्वयं

को पहचानिए, स्वयं को बेहतर बनाइए, दूसरों के बारे में सोच सोच कर, अपना जीवन खराब मत कीजिए और दूसरों के भी जिंदगी में अड़चन मत बनिए.

हमने अक्सर देखा है, कोई बच्चा अपने हिसाब से विषय लेना चाहता है, तो लोग उसे गाइड करने लगते हैं, बहुत से लोग गलत रिश्ते में बंध जाते हैं या विवाहित हो जाते हैं और अलग होना चाहते हैं, तो लोग उन पर टिप्पणी करने लगते हैं, देखिए आज नहीं तो कल जिन पर आप टिप्पणी कर रहे हैं, खुदा ना करे कि आपको कोई ऐसा वक्त देखना पड़े या आपके बच्चों को.

अगर किसी रिश्ते में, अत्याचार, दर्द, परेशानियां ही परेशानियां हे, तो उस रिश्ते को उसी वक्त खत्म करें, अत्याचार सहने वाला और करने वाला दोनों ही पापी होता है.

21वीं सदी में सभी के पास, मानव अधिकार है, और जो अधिकार कानून ने दिया है उस पर लोग टिप्पणी करें, या अपने खाली समय में बैठकर निंदा करके चटकारे ले, कोई बात नहीं दोस्तों, आप शिक्षित इसलिए नहीं हुए हैं, कि आप कानून को ना मानकर, अपने मानव अधिकार को छोड़कर, ऐसे लोगों की बातों के बारे में सोचें, जिनकी छोटी, दकियानूसी सोच है. जो एक मनुष्य को अपने जीवन जीने का अधिकार भी नहीं देना चाहते.

आजकल के वक्त में ऐसे बहुत से केस सामने आ रहे हैं, जिसमें अगर कोई इंसान, क्रोधित होता है, या धमकियां देता है तो उसी परिवार के लोग, सामने वाले को कहते हैं मान जाओ. ऐसे मनुष्य की बात मानने की जगह उसको कोई अच्छे साइकाइट्रिक को दिखाइए या पुलिस स्टेशन में कंप्लेंट कीजिए. किसी से डरिए नहीं, निडर होकर जिए, किसी की गलत बात मत मानिए, जब आपको जिंदगी भर, तड़पना पड़े, सहना पड़े.

बहुत सी लड़कियां, ऐसे लड़कों की कोई कंप्लेन नहीं करती, जो उन्हें कहीं ना कहीं छेड़ रहे होते हैं, नाही स्टेप उठाती है, यह सोच कर कि लोग क्या कहेंगे, आप लोगों को छोड़िए और यह सोचिए कि आपकी आत्मा क्या कहेगी, आपकी शिक्षा क्या कहेगी, और जिस ईश्वर ने आपको यह शरीर, दिमाग, सोचने, समझने की बराबर शक्ति दी है, तो वह क्या सोचेगा.

बहुत से लोग, आज भी अपने मनपसंद के वस्त्र धारण नहीं करते, भोजन नहीं खाते, जिंदगी नहीं जीते, और बस यही सोचते रहते हैं लोग क्या सोचेंगे, अगली बार से, अगर आपको कुछ सोचना है तो सोचिए, वही लोग सोचेंगे जिनके पास कोई कार्य नहीं है, और अपने लिए नहीं सोच सकते

तो ऐसे लोगों के बारे में, सोचकर यह क्यों सोचना की लोग क्या सोचेंगे, लोग क्या कहेंगे, सिर्फ यह सोचिए, कि अगर हमने कोई सही कदम, सही समय पर, नहीं उठाया तो हमारी आत्मा क्या सोचेगी, हमारी शिक्षा क्या सोचेगी और हमारी जिंदगी कैसी हो जाएगी.

लोग सोच रहे हैं, सोचने दीजिए,
जो आपका दिल कहे, वही कीजिए,
किसी की जिंदगी में मुश्किल ना बनिए,
खुद भी जिए और दूसरों को भी जीने दीजिए.

शाला में प्रवेश

रचनाकार- चेतना चन्द्राकर



शाला ग्राम के हर पालक को,
चलो दे दे हम सन्देश.
जितने बच्चें पात्र हुए हैं,
कर दे शाला में प्रवेश.
जाते ही सुनने को मिलेगा,
चुटकुले कहानी गाना.
मध्यांतर फिर खाएंगे, सब
मिलकर पौष्टिक खाना.
मुफ्त मिलेगी उन्हें किताबे,
और दो जोड़ी गणवेश.

शाला ग्राम के हर पालक को,
शाला के दीवारों से भी,
सीखेंगे अक्षर और गिनती.
जरूर भेजना बच्चों को नित,
करते हैं हम विनती.

अधिगम लायक बना हुआ है,
पूरे शाला का परिवेश.
शाला ग्राम के हर पालक को ,
चलो दे दे हम सन्देश.

भालू-कालू

रचनाकार- जीवन चन्द्राकर "लाल"



एक बड़ा सा भालू,
नाम है उसका कालू.

काले काले उसके बाल,
सिर झुकाकर चलता चाल.

दीमक को भी खाता है,
आलू उसको खूब भाता है.

एक बड़ा सा भालू,
नाम है उसका कालू.

तितली की सैर

रचनाकार- जीवन चन्द्राकर "लाल"



रंग बिरंगी प्यारी तितली,
फिर बगिया के सैर को निकली,

लाल गुलाब फूल उसको भाया,
जाकर कान में गीत सुनाया.

मन भर कर डाला रसपान.
बगिया से फिर किया प्रस्थान.

रखें शरीर का ख्याल

रचनाकार- पिकी सिंघल



दोस्तों आज के मेरे इस आलेख का शीर्षक पढ़ने के बाद आप समझ ही गए होंगे कि आज का यह आलेख किस विषय से संबंधित है .हम सभी मानते हैं ना कि हम खुद से ज्यादा अपने बच्चों और अपने परिवार पर ध्यान देते हैं,उनकी देखभाल करते हैं, उनकी चिंता करते हैं, उनके स्वास्थ्य का ध्यान रखते हैं, उनके लिए कुछ भी कर गुजरने के लिए हमें सोचना नहीं पड़ता है. बच्चों के लिए,अपने परिवार जनों के लिए कुछ भी करने की इच्छा हमारे भीतर से ही पैदा होती है. उनकी देखभाल और उनके स्वास्थ्य का ख्याल रखने में हमें एक अजीब सा सुकून मिलता है. उन्हें स्वास्थ्य संबंधी कोई परेशानी ना हो, उन्हें किसी प्रकार का कोई तनाव ना हो और वे हमेशा प्रसन्न रहें, इस बात का विशेष ध्यान हम अक्सर रखा करते हैं .उनके अस्वस्थ होने पर उनसे अधिक चिंता हमें उनकी होने लगती है और हम हर संभव प्रयास करते हैं कि किसी ना किसी तरीके से वे जल्द से जल्द ठीक हो जाएं. हम उन्हें डॉक्टर के पास लेकर जाते हैं, दवाइयां दिलाते हैं, उनके खानपान का विशेष ध्यान रखते हैं, उनकी देखभाल करते हैं आदि आदि.

बस कुछ इसी तर्ज पर आज का मेरा यह आलेख मैं आप सभी के साझा करना चाह रही हूं.हमें अपने बच्चों और अपने परिवार से जितना प्रेम और लगाव होता है उतना ही प्यार हमें अपने स्वास्थ्य से भी करना चाहिए,अपने शरीर को स्वस्थ रखना चाहिए, अपने शरीर को होने वाली परेशानियों को पैदा होने से पहले ही दूर करने की कोशिश करनी चाहिए. जिस प्रकार हम हर समय

अपने बच्चों को प्यार, स्नेह, दुलार देते हैं, उनकी देखभाल करते हैं, उनके खान-पान का ध्यान रखते हैं, बस उसी प्रकार हमें अपने शरीर को भी उचित देखभाल के साथ स्वस्थ रखना चाहिए, क्योंकि उसके स्वास्थ्य का पूरा पूरा ध्यान रखना भी हमारी ही जिम्मेदारी है .

अक्सर देखा जाता है कि हम अपने परिवार के सभी सदस्यों का बहुत अच्छे से ध्यान रखते हैं, उनके खान-पान में कोई कमी नहीं छोड़ते, परंतु, जब बात हमारी अपनी आती है तो हम कोताही बरतने लगते हैं और अपने स्वास्थ्य के प्रति थोड़ा लापरवाह होने लगते हैं. सभी को समय पर खाना देना, दूध, चाय, नाश्ता, लंच, डिनर इत्यादि देने की जद्दोजहद में कभी कभी हम अपने ऊपर ध्यान देना ही भूल जाते हैं . यह अच्छी बात है कि हम अपने अपनों का ध्यान रखते हैं, उनसे प्रेम करते हैं, उनकी देखभाल करते हैं, परंतु हम यह क्यों भूल जाते हैं कि जैसा हम उनके लिए सोचते हैं, जितना प्यार हम उन्हें देते हैं, उतना ही प्यार हमारे परिवार के सदस्य, हमारे अपने, हमारे बच्चे भी तो हमसे करते हैं और वे भी बस यही चाहते हैं कि हम हमेशा स्वस्थ रहें, खुश रहें, सुखी रहें. तो दोस्तों, अपने परिवार जनों की इस छोटी सी ख्वाहिश को क्या हम पूरा नहीं कर सकते, क्या उनकी खुशी के लिए हम अपने आप का ध्यान नहीं रख सकते . अपने आप का ख्याल रखने के पश्चात कि हम इतना समर्थ हो पाते हैं कि हम अपनों का ध्यान रख सकें .

उदाहरण के लिए, यदि आप हर समय अपने परिवार और बच्चों की देखभाल में ही लगे रहेंगे और अपने खान-पान का बिलकुल भी ध्यान नहीं रखेंगे तो एक समय ऐसा आएगा कि आप कमजोरी महसूस करेंगे और जल्द ही बिस्तर भी पकड़ सकते हैं. जरा सोचिए, उस स्थिति में आप अपने परिवार का ध्यान कैसे रख पाएंगे. क्या आप की उस दशा को देखकर आपके परिवार जन आपके अपने खुश रह पाएंगे. कहने का तात्पर्य है कि अपनों का ध्यान रखने के साथ-साथ हमें अपना भी उतना ही ध्यान रखना चाहिए . यदि हम अपना ध्यान नहीं रखेंगे तो वह दिन दूर नहीं जब हम दूसरों का ध्यान रखने में भी स्वयं को सक्षम महसूस नहीं करेंगे. दूसरों का ध्यान रखने से पहले हमें अपना ध्यान रखना होगा, हमें अपने आपको इतना समर्थ और शक्तिशाली बनाना होगा कि हम अपनों की परेशानियों और कठिनाइयों को चुटकियों में हल कर सकें, उनके स्वास्थ्य का ध्यान रख सकें, उनकी सेहत का ध्यान रख सकें.

अपने स्वास्थ्य के प्रति हमारी जागरूकता हमारे परिवार जनों के लिए सबसे बड़ा उपहार भी साबित हो सकता है. स्मरण रहे, रिश्ते कभी एकतरफा नहीं होते. प्यार प्यार को अपनी ओर खींचता है.

जितना प्यार आप अपनों से करते हैं, उससे कहीं अधिक आपके अपने आप से भी करते हैं .वे भी यही चाहते हैं कि आप सदा स्वस्थ रहें. एक दूसरे की परवाह करते हुए जीवन जीना ही खुशहाल जीवन का सच्चा अर्थ माना जाता है. हम अपने बच्चों को स्वस्थ रखने के टिप्स देते हैं, उन्हें कुछ ऐसी क्लासेज भी ज्वाइन कराते हैं जिनसे उनका स्वास्थ्य ठीक रहे और उनमें स्फूर्ति का संचार होता रहे तो क्यों ना दोस्तों उन सभी तरीकों को हम भी अपने जीवन में अपनाना सीखें. अपने स्वास्थ्य का पूरा पूरा ध्यान रखने के लिए हमें बस कुछ छोटी-छोटी बातों का भी ध्यान रखना होगा ; जैसे समय पर सोना, समय पर जागना, सही समय पर खाना पीना, साथ ही साथ प्रतिदिन व्यायाम और हल्की फुल्की कसरत करना, ऐसे लोगों से मेल जोल बढ़ाना जो सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं, दिन भर में अपनी पसंद का कोई भी एक कार्य करना, अपनों के साथ हंसी मजाक करना, कोई भी एक गेम खेलना, बागवानी करना और अपनों के साथ छोटी-छोटी आउटिंग और शॉपिंग पर जाना.

आज के मेरे इस आलेख का निचोड़ केवल यही है कि हमें अपनों के साथ-साथ अपने स्वास्थ्य पर भी ध्यान देना चाहिए जो चीजें हमारे स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं, उनसे दूरी बनानी चाहिए और स्वास्थ्य वर्धक चीजों का ही सेवन करना चाहिए .इस प्रकार हम अपने बच्चों को वह सब चीजें नहीं देते जो उनके स्वास्थ्य के लिए खतरनाक साबित होती हैं, बस वही जज्बा, वही रवैया हमें अपने स्वास्थ्य के साथ ही अपनाना होगा, रखना होगा और अपने स्वास्थ्य को अच्छा रखकर हमें अपने परिवार जनों को एक बेहतर तोहफा देना होगा.

खुद को जाने

रचनाकार- डॉ. माधवी बोरसे



चलो आज स्वयं को पहचाने,
अपनी कमजोरियों को जाने,
जग की आलोचना बहुत की,
अब खुद को भी दे, थोड़े ताने.

कितने फिसले, कितने संभले,
स्वार्थ में कितने किए हमले,
नजर डाल के खुद पर,
देखे हमारे सूखे गमले.

दूसरों की आलोचना में,
कितना हमने सुख लिया,
अब हमको सोचना है,
स्वयं को कितना दुख दिया.

चलो स्वयं पर डाले प्रकाश,
खुद से मिलने का करे प्रयास,
स्वयं में झांके, स्वयं को पहचाने,
स्वयं को सुधारे, स्वयं को जाने.

स्वयं की सकारात्मकता,
स्वयं को परखती,
स्वयं में जागरूकता,
स्वयं की शक्ति,
अपने जीवन में खुशियों की बहार लाए,
स्वयं को बेहतरीन से बेहतरीन इंसान बनाएं.

कर्म से लिखे आत्मकथा

रचनाकार- डॉ. माधवी बोरसे

कर्म

लिखें हमारे जीवन की कहानी,
साहस, दृढ़ता हो इसकी निशानी,
कलम से नहीं कर्म से लिखें,
हमारा जीवन भी प्रेरणादाई दिखे.

इस जीवन के खेल में बने हम खिलाड़ी,
चढ़े हर बड़ी से बड़ी मुश्किलों की पहाड़ी,
इंसानियत हो इसकी स्याही,
करें हम ऐसी इसकी चित्रकारी.

माना कि सब हमारे हिसाब से नहीं,
मजबूती से हर प्रतिक्रिया करे सही,
किसी के अपशब्द और संस्कारों को ना अपनाएं,
अपने जीवन को अपने उच्च विचारों से सजाएं.

जब भी कोई पढ़े हमारे जीवन की गाथा,
वीरता, परिश्रम से भरी हो हमारी दास्तां,
हर किस्सा हो हिम्मत से भरपूर,
जिसमें हो आत्मविश्वास का सुरूर.

स्वाभिमान से भरा हो हर एक फसाना,
याद रखें इसे भी जमाना,
हम ही हैं इस जीवन के रचयिता,
स्वाभिमान की राह पर चलकर, बन जाए विजेता.

लिखें हमारे जीवन की कहानी,
साहस, दृढ़ता हो इसकी निशानी,
कलम से नहीं कर्म से लिखें,
हमारा जीवनी भी प्रेरणादायक दिखे.

पारदर्शी जीवन

रचनाकार- डॉ. माधवी बोरसे



चलो सोचें और बोलें एक समान,
जिंदगी को बना ले, थोड़ा और आसान,
दिल से और बाहर से करें सबका सम्मान,
ना करें एक दूसरे का, कभी भी अपमान.

अच्छी सोच है, हमारे लिए वरदान,
जैसे हम हैं, वैसा दिखे हमें जहान,
कहते हैं सारे, वेद, ग्रंथ और पुराण,
पवित्र हृदय का व्यक्ति होता है महान.

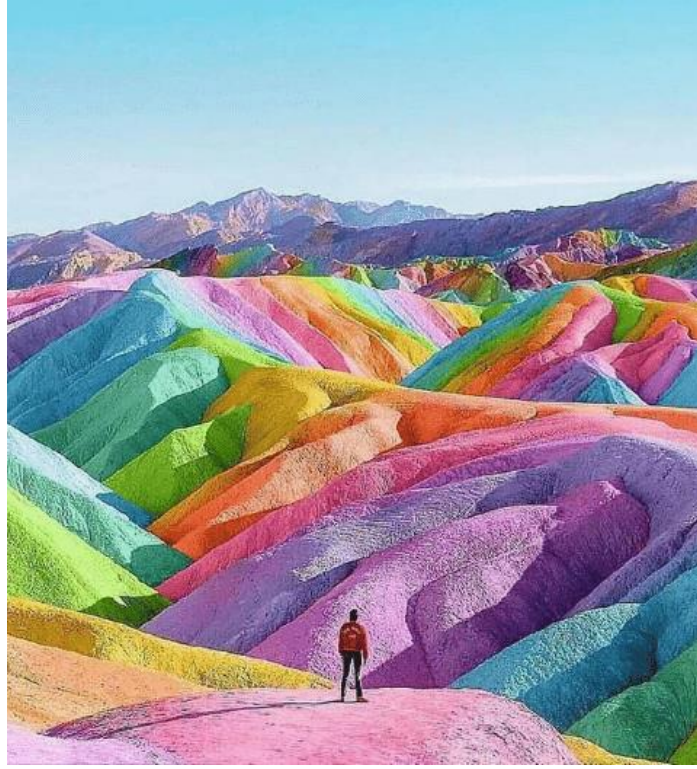
नकारात्मकता को न सुने हमारे कान,
सकारात्मकता से भर दे सारा ज्ञान,
अंदर बाहर से हो, संपूर्ण बलवान,
गलत आदतों से, रहे हमेशा अनजान.

अपने जीवन को दे, नई पहचान,
इंसानियत में बसती हो, हमारी जान,
रखें हमेशा, अपने चेहरे पर मुस्कान
नैतिकता से भरे हो, हमारे अरमान.

करें निंदा, अहंकार, और माया का त्याग,
कोशिश करें, बने एक अच्छे इंसान,
बचाए निर्दोष जीव जंतुओं के प्राण,
यही है सबसे सर्वश्रेष्ठ दान.

खुशनुमा वातावरण बनाएं

रचनाकार- डॉ. माधवी बोरसे



लाए खुशियों की बहार,
चाहे परेशानियां हो हजार,
जिंदगी तो है कुछ पलों की,
लड़े कैसा भी हो प्रहार.

खुशनुमा सा वातावरण बनाएं,
चलो कहीं से यात्रा कर आए,
प्रकृति की सुंदरता को छूकर,
कुछ जीवन में परिवर्तन लाएं.

अतीत और भविष्य के बारे में क्यों सोचे,
वर्तमान के पलों का होके,
चलते जाए, खिलखिलाते जाए,
चाहे बड़ी सी बड़ी मुसीबत रोके.

मासूम चेहरे को मुस्कान दे,
हर व्यक्ति को सम्मान दें,
पूरे करें दिल से हम भी,
जो भी हमारे अरमान है.

लाए खुशियों की बहार,
चाहे परेशानियां हो हजार,
जिंदगी तो है कुछ पलों की,
लड़े कैसा भी हो प्रहार.

बुजुर्ग

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी



किस्मत वाले होते हैं वह लोग जिनके सिर पर बुजुर्गों का हाथ होता है, वह घर घर नहीं रहता जहां कोई बुजुर्ग नहीं रहता, बुजुर्गों का आशीर्वाद खजाना है, घर में बुजुर्ग खुशी से हंसते हुए मिलते तो समझ लेना तुम से अमीर इस दुनिया में कोई नहीं!!

साथियों यह है हमारे बड़े बुजुर्गों का सम्मान! उनकी हुजुरी की खनक! जिसमें हमारा घर परिवार, गांव, शहर खुशहाली से हरा भरा रहता है, गमों की कोई सिलवट नहीं होती क्योंकि हमारे बड़े बुजुर्गों का आशीर्वाद, उनकी खुशी, दुआ हमारे लिए वही खजाना है जिसके सामने सांसारिक मायावी खजाना कुछ नहीं है क्योंकि हमारी हजारों वर्षों पूर्व की संस्कृति ने ही हमें सिखाया है, बड़े बुजुर्गों की सेवा उनका सम्मान के तुल्य इस सृष्टि में कोई पुण्य और आध्यात्मिक सुख नहीं!

साथियों मेरा मानना है कि इनके सामने हमारे ईश्वर अल्लाह गुरुवर आचार्य का पक्ष भी अपेक्षाकृत छोटा होता है क्योंकि हमारे सर्वश्रेष्ठ ईश्वर अल्लाह हमारे माता-पिता और बुजुर्ग हैं परंतु बदलते परिवेश में और पाश्चात्य संस्कृति के बढ़ते प्रकोप से इस आधुनिक डिजिटल युग में माता-पिता बड़े बुजुर्गों का आंकलन कम होते जा रहा है और दिखावों के स्तर पर बाहरी माहौल में आर्थिक शारीरिक मानसिक सेवाएं प्रदान कर अपने आप को महादानी करार दिए जाने की प्रथा चल पड़ी है जबकि घर के बड़े बुजुर्गों को हाशिए पर रखकर उनके विचारों को पुराना ज़माना बताकर

अपमानित किया जाता है घर से निकाल दिया जाता है, वृद्धआश्रम में शिफ्ट किया जाता है! अब समय आ गया है कि बड़े बुजुर्गों के साथ दुर्व्यवहार की गंभीरता को रेखांकित करना वर्तमान समय की मांग है इसलिए हम इस आर्टिकल के माध्यम से विश्व बुजुर्ग दुर्व्यवहार जागरूकता दिवस के उपलक्ष में बड़े बुजुर्गों का सम्मान करने की चर्चा करेंगे.

साथियों बात अगर हम वर्तमान परिपेक्ष्य की करें तो, आज हमारे समाज में हमारे ही बुजुर्ग एकाकी रहने को विवश हैं उनके साथ उनके अपने बच्चे नहीं हैं. गावों में तो स्थिति फिर भी थोड़ी ठीक है लेकिन शहरों में तो स्थिति बिलकुल भी विपरीत है. ज्यादातर बुजुर्ग घर में अकेले ही रहते हैं, और जिनके बच्चे उनके साथ हैं वो भी अपने अपने कामों में इस हद तक व्यस्त हैं की उनके पास अपने माता - पिता से बात करने के लिए समय ही नहीं है. लेकिन कुछ परिवार ऐसे भी हैं जहां वास्तव में बुजुर्गों की अवहेलना की जाती है अपमान किया जाता है. उनको तिरस्कृत किया जाता है. हालांकि हर परिवार की स्थिति भिन्न हो सकती है इसलिए किसी भी पीढ़ी को दोष देना कठिन है. लेकिन जब भारत के इतिहास पर नजर डालें तो हम पाएंगे कि हमारे पूर्वजों ने जीवन के अंत समय में जब व्यक्ति के दायित्वों की पूर्ति हो जाती थी वानप्रस्थ की व्यवस्था दी थी शायद ये वृद्धाश्रम वानप्रस्थ का आधुनिक रूप हों सकता हैं.

साथियों बात अगर हम वैश्विक स्तरपर बुजुर्गों के साथ दुर्व्यवहार की करें तो, बड़े दुर्व्यवहार को संबोधित करना बड़े दुर्व्यवहार को एक एकल, या दोहराया कार्य, या उचित कार्रवाई की कमी के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जो किसी भी रिश्ते के भीतर होता है जहां विश्वास की उम्मीद होती है जो किसी बड़े व्यक्ति को नुकसान या परेशानी का कारण बनती है. यह एक वैश्विक सामाजिक मुद्दा है जो दुनिया भर में लाखों वृद्ध व्यक्तियों के स्वास्थ्य और मानवाधिकारों को प्रभावित करता है, और एक ऐसा मुद्दा जो अंतरराष्ट्रीय समुदाय का ध्यान आकर्षित करता है.

दुनिया के कई हिस्सों में बुजुर्गों के साथ दुर्व्यवहार बहुत कम मान्यता या प्रतिक्रिया के साथ होता है. कुछ समय पहले तक, यह गंभीर सामाजिक समस्या सार्वजनिक दृष्टिकोण से छिपी हुई थी और इसे ज्यादातर एक निजी मामला माना जाता था. आज भी, बुजुर्गों के साथ दुर्व्यवहार एक वर्जित बना हुआ है, जिसे दुनिया भर के समाजों द्वारा ज्यादातर कम करके आंका जाता है और अनदेखा किया जाता है. हालांकि, साक्ष्य जमा हो रहे हैं, यह इंगित करने के लिए कि वृद्ध दुर्व्यवहार एक महत्वपूर्ण सार्वजनिक स्वास्थ्य और सामाजिक समस्या है.

साथियों बात अगर हम 15 जून को यह दिवस मनाने की करें तो, इस दिन को उन बुजुर्गों की दुर्दशा के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए मनाया जाता है जिन्हें दुर्व्यवहार और नुकसान पहुंचाया जाता है। इस दिन का प्राथमिक लक्ष्य दुनिया भर के समुदायों को वरिष्ठ दुर्व्यवहार और उपेक्षा को प्रभावित करने वाले सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक और जनसांख्यिकीय कारकों के बारे में जागरूकता बढ़ाकर बुजुर्गों के साथ दुर्व्यवहार और उपेक्षा की बेहतर समझ विकसित करने का अवसर प्रदान करना है। विश्व बुजुर्ग दुर्व्यवहार जागरूकता दिवस बुजुर्गों के साथ दुर्व्यवहार के मुद्दे को उजागर करने के लिए समर्पित है।

साथियों बात अगर हम बुजुर्गों के साथ दुर्व्यवहार और अपमान की करें तो, बुजुर्गों के साथ दुर्व्यवहार हिंसा के सबसे कम जांच वाले रूपों में से एक है, और इसे राष्ट्रीय कार्य योजनाओं में शायद ही कभी संबोधित किया जाता है। हमारी संस्कृति में बुजुर्गों के साथ दुर्व्यवहार को व्यापक रूप से एक बढ़ती और महत्वपूर्ण समस्या के रूप में स्वीकार किया जाता है। दुर्भाग्य से, कम रिपोर्टिंग, बड़े दुर्व्यवहार की परिभाषा में अंतर और देशव्यापी सुसंगत रिपोर्टिंग प्रणाली की कमी के कारण इस समस्या के पैमाने का निर्धारण करना मुश्किल है। नेशनल सेंटर ऑन एल्डर एब्यूज के अनुसार, उन्होंने सात श्रेणियों के बड़े दुर्व्यवहार को अलग करता है। शारीरिक शोषण, यौन शोषण, भावनात्मक शोषण, वित्तीय/भौतिक शोषण, उपेक्षा, परित्याग और आत्म-उपेक्षा सभी इस प्रकार के दुरुपयोग के उदाहरण हैं।

साथियों बात अगर हम इस 2022 अवसर की थीम और व्यवहारिकता की करें तो थीम सभी उम्र के लिए डिजिटल इक्विटी है। वर्तमान अध्ययनों के अनुसार, वयस्क बच्चे और परिवार के अन्य सदस्य बुजुर्गों के साथ दुर्व्यवहार करते हैं, यह दर्शाता है कि बुजुर्गों के खिलाफ हिंसा ज्यादातर घर पर होती है। पारिवारिक तनाव, दोनों मनोवैज्ञानिक और वित्तीय, को बड़े दुर्व्यवहार का एक योगदान कारण माना गया है। यदि छोटे बच्चे अपने परिवार में इस प्रकार की आक्रामकता के संपर्क में आते हैं, तो इसका उन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। शोध के अनुसार, हिंसा के संपर्क में आने वाले बच्चे, चाहे लक्षित लक्ष्य के रूप में या हिंसा के गवाह के रूप में, व्यवहार संबंधी मुद्दों को विकसित करने की अधिक संभावना रखते हैं और बाद में खुद आक्रामकता और हिंसा के अपराधी बन जाते हैं।

बुजुर्गों की भी अजीब कहानी है
न खाने को रोटी आंखों से बरसा पानी है
शरीर के हाथों हारे ये मन के जवान हैं
घर में बुजुर्ग जरूरी है क्योंकि यह भगवान है

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि विश्व बुजुर्ग दुर्व्यवहार जागरूकता दिवस 15 जून 2022 पर विशेष है. बुजुर्गों को के साथ दुर्व्यवहार की गंभीरता को रेखांकित करना वर्तमान समय की मांग है. बड़े बुजुर्गों की सेवा और सम्मान के तुल्य इस सृष्टि में कोई पुण्य और आध्यात्मिक सुख नहीं है.

सीमा प्रहरी

रचनाकार- संगीता पाठक



सैनिक को भारतमाता से अगाध
प्रेम होता है.
उसकी भुजाओं में शौर्य
का समंदर मचला करता है.

दूसरा प्रेम वह निःस्वार्थ भाव हित
स्वजनों से करता है.
प्रचंड ग्रीष्म की ज्वाला में
तपकर वह निखरता है.
सीमा प्रहरी बनकर वह
शत्रुओं से रक्षा करता है.

मातृभूमि के चरणों में निज
तन मन धन अर्पित करता है

मां पृथ्वी से बड़ी पिता आकाश से ऊंचा है

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी



मां पृथ्वी से बड़ी पिता आकाश से ऊंचा है
माता-पिता से बढ़कर कोई तीर्थ न दूजा
माता-पिता से मिले संस्कार का कोई तुल्य नहीं
माता-पिता की सेवा तुल्य कोई पुण्य नहीं

सृष्टि में माता-पिता से बढ़कर कोई नहीं
हम क्या जाने हमारे लिए हमारी मां
कितने दिन कितने रातों तक सोई नहीं
माता-पिता से बढ़कर दुनिया में कोई नहीं

जिनके हृदय में माता-पिता का मूल्य नहीं
सृष्टि में वह मानवता के तुल्य नहीं
माता-पिता को ठेस पहुंचाने तुल्य कोई पाप नहीं
माता-पिता की सेवा कर खुश रहने जैसा पुण्य नहीं

बातें

रचनाकार- मानसी वर्मा, 9 वीं, जे बी इंटरनेशनल स्कूल तिल्ला, रायपुर



लिख रही उस इंसान के बारे में,
जिसने सिखाया हर चीज के बारे में.
जो है शामिल हर एक नज़ारों में.
हाँ बात कर रही मैं अपने पापा के बारे में.

जब भी कदम लड़खुड़ाए है,
वो मुझे बचाने आए हैं.
जब भी गलत रास्ते पर अपने कदम बढ़ाए है ,
वो मुझे सही रास्ता दिखाने आए है.

सारी बुरी चीजे से मुझे बचाया है,
हमेशा अच्छाई का रास्ता दिखाया है.

मुझे एक सपना दिखाया है,
जिसने अपने अधूरे सपनों को सजाया है.

आँसु आने नहीं दिए इन आँखों में,
पर गलत चीज पर डाट भी लगाया है.
जब जब लोगों ने नहीं कर पाएगी कहा है,
उन्होंने ही हिम्मत दिलाया है.

बिना बोले मेरी बातें जान जाते हैं,
मेरा एक ख्वाहिश पूरी करने के लिए,
अपनी कई ख्वाहिश छुपा जाते हैं,
शुक्रिया उस ईश्वर का जिसने पापा को बनाया है.

चित्र देख कर कहानी लिखो

पिछले अंक में हमने आपको यह चित्र देख कर कहानी लिखने दी थी –



हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई हम नीचे प्रदर्शित कर रहे हैं

संतोष कुमार कौशिक द्वारा भेजी गई कहानी

कर्मों की सजा

एक राज्य में एक अहंकारी राजा रहता था. वह प्रतिदिन सुख-विलास में अपना जीवन व्यतीत करता था. उसे अपने धन-दौलत एवं अमीर होने का बहुत घमंड था. वह किसी से भी बात करता, उनकी बातों में अहंकारी होने का भाव दिखता था. उसी राजा के महल के बाहर दरवाजे के पास, एक भूखा प्यासा भिखारी आशा लगाए बैठा रहा कि जब भी राजा आएगा तो मुझे अच्छे-अच्छे पकवान खाने को मिलेगा.

कुछ क्षण पश्चात राजा महल के बाहर दरवाजा के पास आये . उसे देख कर भिखारी कहने लगा-हे राजन! मैं बहुत दिनों से भूखा हूँ. आपके पास अपार धन-दौलत है. खाने पीने की कोई कमी नहीं है. कृप्या करके मेरा भूख शांत करने की कष्ट करें. तभी राजा ने क्रोधित होकर भिखारी से कहा -मेरे पास धन-दौलत होना,अमीर होना तथा राजा बनना मेरे कर्म के अनुसार प्राप्त हुआ है और मेरे मृत्यु के पश्चात मुझे स्वर्ग की प्राप्ति होगी और तुम्हें तुम्हारे कर्म के अनुसार भीख मांग कर जीवन व्यतीत करना है. तुम गरीब हो इसलिए तुम्हें नर्क में जाना पड़ेगा. तुम्हें अच्छा भोजन करना है तो काम करना होगा. भीख मांगने से अच्छा भोजन नहीं मिलेगा. यह कहते हुए राजा अपने खाए हुए में से बचा हुआ जूठा भोजन भिखारी को देता है. भिखारी उसके अहंकारी भाव को देखकर कहता है- ईश्वर तुम्हें क्षमा करें! भिखारी राजा के दिए हुए जूठा भोजन को उठा, स्वयं खाकर एवं पास में बैठे कुत्ते को खिलाता है. कुछ दिन पश्चात भिखारी की मौत हो जाती है. भिखारी अपने अच्छे कर्म के कारण वह स्वर्ग लोक की प्राप्ति होती है.

भिखारी की मृत्यु के दूसरे दिन ही राजा की भी मृत्यु हो जाती है. वह अपने कर्म के अनुसार नर्क लोक में पहुँच जाता है. अहंकारी राजा भिखारी को स्वर्ग लोक में देखकर यमराज को कहता है- हे ईश्वर! यह कैसा न्याय है,भिखारी को स्वर्ग लोक और राजा को नर्क लोक का स्थान दिए हैं. तभी राजा के बातों को सुनकर यमराज कहता है- हे राजन! स्वर्ग लोक और नर्क लोक स्थान प्राप्त होना उसके कर्म पर निर्भर होता है. अमीर हो या गरीब उसका लेखा-जोखा पृथ्वी पर किए हुए उसके अच्छे और बुरे कर्म पर निर्भर होता है. हे राजा-धनवान होते हुए भी तुम्हारे मन में कोई भी जीव के प्रति दया धर्म नहीं,तुमने हमेशा सुख-विलास से अपना जीवन व्यतीत किया है. तुमने स्वार्थी व अहंकारी जीवन जीया है तथा ईश्वर को कोई स्थान नहीं दिया है. जिसके कारण तुम्हें नर्क लोक प्राप्त हुआ है और यह भिखारी ने अपने जीवन में कोई अनीति पूर्वक कार्य नहीं किया है और न ही किसी के आत्मा को दुखाया है. कोई भी व्यक्ति इसका बुरा भी करता उससे क्रोध करने के बजाय, ईश्वर तुम्हें क्षमा करें! कहकर आगे बढ़ जाता था. उसके अच्छे कर्म के कारण उसे स्वर्ग लोक में स्थान प्राप्त हुआ है.

राजा, यमराज के बातों को सुनकर अपने किए हुए कार्यों पर शर्मिदा होते हैं. पश्चाताप करते हुए नरक लोक में अपना जीवन व्यतीत करता है.

बसंत निषाद, माँ बंजारी गुरुकुल विद्यालय रायपुर द्वारा भेजी गई कहानी

घमंडी राजा

एक घमंडी राजा रहता था उसको अपने आप पर बहुत घमंड था, उसके महल बाहर टहलने जा रहा था तभी उसकी नजर उस भिखारी पर पड़ी तो राजा ने तुरंत उस भिखारी को वहाँ से कहीं दूर जाने के लिए अपने सिपाही को बोल दिया. वह भिखारी दुखी मन से वहाँ से चला गया.

एक दिन की बात है राजा अपने सिपाहियों के साथ जंगल में सैर करने गया. राजा अपने सिपाहियों से बिछड़ गया और रास्ता भटक गया. रात होने वाली थी जिससे राजा की और भी चिंतित हो रहा था. तभी उनको 1 आदमी दिखा, वह आदमी वही भिखारी था जिसे राजा ने अपने सिपाहियों के जरिये भगा दिया था. भिखारी दयालु स्वभाव का था, जब उसे पता चला की राजा रास्ता भटक गया है, तो वह बिना किसी द्वेष के राजा को मार्गदर्शन किया. इस तरह राजा अपना घर पहुँच गया. राजा को अपने पूर्व व्यवहार पर पछतावा था, उसके व्यवहार में परिवर्तन आने लगा.

अगले अंक की कहानी हेतु चित्र



अब आप दिए गये चित्र को देखकर कल्पना कीजिए और कहानी लिख कर हमें यूनिकोड फॉण्ट में टंकित कर ई मेल **kilolmagazine@gmail.com** पर अगले माह की 15 तारीख तक भेज दें. आपके द्वारा भेजी गयी कहानियों को हम किलोल के अगले अंक में प्रकाशित करेंगे

भाखा जनऊला

भाखा जनऊला

रचनाकार- दीपक कंवर

1 अ						2 प			
									3
4 र		5		6		7 र		8	
9	10		11 आ					12	
13 र									
			14		15 ख			16 सं	
17 घं									
18					19 र				

बाएँ से दाएँ

- बेचैनी, साँस लेने में तकलीफ
- जूता
- एक लोकनृत्य
- हल्का धुप, धुप सेंकना
- जड़
- तरह-तरह का
- रास्ता
- रस
- बिखरा हुआ खराब वस्तु
- चिंता
- लगातार
- रसोई कक्ष

पिछले भाखा जनऊला के उत्तर

1 ख		2 ह			3 ह	व			4 प
5 ज	त	र	ख	त	र		6 प	हा	ति
री		क			स				या
			7 कु		8 भ	र	भ	रा	य
9 ल	क	र	ध	क	र				
	ह		र		स	11 र			12 कु
	र		13 सि	तो		14 म	त	ल	सी
15 गं	म	थि	या			के			या
	ह			16 च		17 लि	ला	18 ग	र
19 ख	र	ख	स	हा		या		रु	

ऊपर से नीचे

- अस्त-व्यस्त
- दूल्हा का दुल्हन के लिए संगार
- शरीर
- नीचे
- छन्नी
- छांटना, चुनना
- रूठा
- आड़ा-तिरछा या उंच-नीच
- पशुओं का झुण्ड
- संकरी गली
- घिस, घिसना